विधवा-कर्तव्य ।

लेखक—

सूरजभान वकील ।

विधवा-कर्तव्य ।

आवश्यक सूचना ।

विधवाओंके दुःखोंको दूर करनेवाली और उनके द्वारा समाजका कल्याण करानेवाली यह उत्कृष्ट पुस्तक प्रत्येक घरमें जाकर पढ़ी जावे, इसके लिए इसका मूल्य इस समयकी मँहगाईके हिसाबसे बहुत कम रक्खा गया है और जो भाई बिना मूल्य बाँटनेके लिए इसको खरीदना चाहें उनसे और भी कम मूल्य लिया जायगा । वे इसकी सौ प्रतियाँ ३०) में और पचास प्रतियाँ १७) में मँगा सकेंगे ।

प्रकाशकोंकी ओरसे इसकी १००० प्रतियाँ बिना मूल्य वितरण की गई हैं ।

—प्रकाशक ।

विधवा-कर्तव्य ।
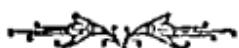
समस्त धर्मों और सम्प्रदायोंकी हिन्दू विधवाओंको
कर्तव्यपथपर आरूढ़ करनेवाला उपदेशात्मक

निबन्ध ।

लेखक,

श्रीयुक्त बाबू सूरजभानजी वकील,

देवबन्द (सहारनपुर) ।

प्रकाशक,

हिन्दी-ग्रन्थ-रत्नाकर कार्यालय

हीराबाग, बम्बई ।
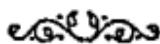
भाद्र, १९७५ वि० ।

प्रथमावृत्ति ।] अगस्त १९१८ । [मूल्य आठ आने ।

प्रकाशक,
नाथूराम प्रेमी,
हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,
हीराबाग, गिरगाँव, बम्बई।

मुद्रक,
रा० चिंतामण सखाराम देवळे,
बम्बईवैभव प्रेस,
सँढर्स्ट रोड, गिरगाँव, बम्बई।

सूची।

प्रस्तावना।

मेरी विधवा बहनो, आजकल दस्तूर तो यह हो रहा है कि जब कभी और जहाँ कहीं तुम्हारी माँ बहन या तुम्हारे दुखमें दुखी होनेवाला और कोई तुम्हें मिलता है, तो वह तुम्हारी मुसीबतको याद दिला-दिलाकर, अपने दर्द भरे वचनोंसे तुम्हारा दुखड़ा गा-गाकर, और तुम्हारे चोट खाये मनमें ठेस लगा-लगाकर आप रोता है और तुम्हें रुलाता है। फल इसका यह होता है कि तुम्हारे हृदयमें लगी हुई मोहकी आग जो कुछ धीमी पड़ गई थी वह फिर भड़क उठती है, तुम्हारी छातीमें सुलगती हुई दुख-दर्दकी भट्टी जो कुछ मंद पड़ गई थी वह फिर धधक उठती है, फिर तुम्हारे मुँहसे आहोंका धुआँ निकलना शुरू हो जाता है और तुम फिर मछलीकी तरह तड़पने लगती हो। गरज ये तुम्हारे सच्चे हितू और तुम्हारे नातेदार तुम्हारे हृदयकी आगको बारबार कुरेदकर उसे बुझने या दबी रहने नहीं देते, बल्कि घड़ी घड़ी उसमें फूँक मार-मारकर उसे सुलगाते ही रहते हैं और इस प्रकार तुम्हारे कष्टको दूना दूना बढ़ाकर तुमको एक पल भरके लिए भी शान्ति नहीं लेने देते।

परन्तु तुम्हारे सामने तुम्हारे दुःखोंका बखान करना तो सूरजको दीवा दिखानेके समान है। तुम्हारे दुःख क्या और उनका गीत गाना क्या। क्योंकि तुममें तो सिवाय दुःखके और

कुछ है ही नहीं। तुम्हें तो दुःखकी जीती जागती मूर्ति या कष्टकी साक्षात् देवी कहा जाय तो कुछ अनुचित नहीं है। इस कारण मेरी बहनो, हम तो इस पुस्तकमें ऐसी बातें लिखना नहीं चाहते, जिससे तुमको तुम्हारे दुःख याद आवें और तुम्हारे हृदयको चोट लगे; बल्कि हम तो तुमको ऐसी बातें बताना चाहते हैं जिससे तुम्हारा मन ठिकाने आवे, तुम अपने दुखदर्दोंको भूलो और तुम्हारे हृदयमें शान्ति आकर तुमको अपने पहले जन्मके पापोंको दूर करनेकी फिकर हो और अपने हृदयको पवित्र करके तुम ऐसे उत्तम कार्योंमें लग जाओ जिससे आगेको तो तुम सुख शान्ति भोगो और दुखका नाम भी न सुनो।

प्यारी बहनो, यह छोटीसी पुस्तक तुम्हारे हितके वास्ते बड़े परिश्रमसे लिखी गई है। इसका एक एक पाठ तुम्हारे वास्ते सच्चे मोतियोंकी लड़ीसे भी ज्यादा कीमती है। यह पुस्तक तुमको तुम्हारे पिछले पापोंका काटना सिखायगी, लोभ क्रोध आदिकी कालिमाको तुम्हारे हृदयसे धोकर तुमको अपनी आत्माके शुद्ध और पवित्र बनानेका उपाय बतायगी, और तुम्हारे हृदयकी धधकती हुई आग पर पानी डालकर और तुम्हारे डावाँडोल मनको थाम कर तुमको परम शान्तिका वह मार्ग दिखायगी जिससे ऐसा सच्चा सुख और ऐसा आत्मिक आनन्द प्राप्त हो कि उसके सामने दुनिया भरके सब ही भोग-विलास और ऐशोआराम बिल्कुल ही निकम्मे हों, और जिसके मुकाबलेमें स्वर्गोंके सुख भी कौड़ी कामके न हों।

विधवा-कर्तव्य।

यह दुनिया सुपनेका सा तमाशा है।

विधवा बहनो, इस दुनियाका सारा तमाशा सुपने कैसी माया है। जैसे कोई आदमी सुपनेमें देखे कि वह किसी देशका राजा बन गया है, हीरे जवाहरात जड़े हुए तख्त पर बैठा हुआ हुकूमत कर रहा है, लाखों आदमी हाथ बाँधे उसके सामने खड़े हैं, सैकड़ों रानियाँ और हजारों बाँदियाँ सुंदर शृंगार किये हुए छम छम करती हुई उसके चारों तरफ फिर रही हैं, कहीं बाजा बज रहा है, कहीं गाना हो रहा है, और कहीं तरह तरहके नाच तमाशे हो रहे हैं, गरज हरकिसमकी खुशीके ठाठ बँध रहे हैं और सब तरहकी मौज आ रही है; लेकिन आँख खुलनेपर फिर उसको सुपनेकी इन चीजोंमेंसे वहाँ कुछ भी दिखाई नहीं देता, वह सारी माया इस तरह गायब हो जाती है मानों कभी थी ही नहीं। मेरी बहनो, अब जरा तुम ही सोचो कि अगर वह आदमी अपने सुपनेकी उस मायाको याद करके रो-रोकर अपनी जान खोने लगे तो वह पागल है कि नहीं। अब तो वह जितना चाहे रुदन करे, जितना चाहे तड़पे और सिर पटके, पर उसके सुपनेकी वह माया तो अब उसे मिलनेसे रही, वह तो रो-रोकर और तड़प-तड़पकर व्यर्थ ही अपना बुरा कर

तमाशा है जिसमें हम सब लोग तमाशा खेलनेवाले हैं। नाटकके समान इस दुनियामें भी कोई अमीरका स्वाँग भर कर आता है और कोई गरीबका, कोई दुखिया बनाया जाता है और कोई सुखिया, और फिर थोड़ी ही देरमें जो अमीर था वह गरीब बन जाता है, और जो सुखिया था वह दुखिया। सुबह जिनके घर खुशीके शादियाने बज रहे थे शामको वहीं हाय हाय सुनाई देने लगती है और जहाँ रंज हो रहा था वहीं खुशियाँ मनाई जाने लगती हैं। बे-माँ-बापकी एक गरीब लड़की जो कल टुकड़े चुगती फिरती थी आज किसी सेठके साथ ब्याहे जानेसे सेठानी बनी फिरती है और सीधी तरह बात भी नहीं करती और एक बड़े अमीर घरकी बेटी—जो अमीरके घर ही ब्याही गई थी, परन्तु अपने पतिके कुचाल हो जानेसे सब कुछ खो बैठी है—रो-रोकर ही अपने दिन बिताती है। गरज दुनियाका भी सारा खेल नाटकके तमाशेके ही तरह है, जहाँ कभी किसी पर कोई स्वाँग भरा जाता है और कभी कोई। इसीवास्ते इस दुनियाके लोगोंको भी उस ही तरह रहना चाहिए जिस तरह नाटकवाले रहते हैं। अर्थात् जिस तरह वे राजाका स्वाँग भरा जाने पर खुश नहीं होते और फकीर बनाये जाने पर रंज नहीं करते, बल्कि जो भी स्वाँग उन पर भर दिया जाता है उसहीको जी लगाकर खेल देते हैं, इसी तरह दुनियाके लोगोंको भी चाहिए कि वे किसी हालतमें सुखी और किसी हालतमें दुखी न हों, बल्कि हर

हालतमें एकसे भाव रखकर उनकी जो भी अवस्था होती रहे उसहीको अच्छी तरह निभा दें, और कभी यह विचार मनमें न लावें कि हमारी यह दशा क्यों होगई, वह क्यों न रही, अर्थात् हमारे ऊपर यह स्वाँग क्यों भरा गया और वह स्वाँग हम परसे क्यों उतार लिया गया। हमको तो सदा यही समझना चाहिए कि स्वाँग स्वाँग सब एकसे, यह स्वाँग भरा गया तो क्या और वह उतार लिया गया तो क्या। कुछ सदा के लिए तो हमें यहाँ रहना ही नहीं है। आयु पूरी होने पर तो हमें ये सब स्वाँग यहीं छोड़ जाने हैं, फिर क्यों किसी स्वाँगके वास्ते तड़पें और क्यों किसी अवस्थामें सुखी हों और किसीमें दुखी।

दुनियामें दुख मान लिया तो दुख है, सुख मान लिया तो सुख है।

प्यारी बहनो, इस समय तुम जरूर अपने मनमें कह रही होगी कि ये सब कहनेकी बातें हैं। क्यों कि जिसके पास पचासों भारी भारी जड़ाऊ गहने हों वह कैसे सुखी न हो और जिसके पास पहननेको एक छल्ला तक न हो वह कैसे दुख न माने। इसी प्रकार जिसके आगे बीसों बाँदियाँ हाथ बाँधे खड़ी हों, जो पैर भी पलंगसे नीचे न उतारती हो और बैठी ही बैठी हुकूमत चलाती हो वह कैसे अपनेको भाग्यवान् न समझे और जिसको सारा ही काम अपने हाथसे करना पड़ता हो वह किस तरह अपनेको अभागी न जाने। परन्तु मेरी विधवा

जो चाहे सो करे, जहाँ चाहे बैठे और जहाँ चाहे उठे, इस वक्त तो किसी काममें भी कोई उसको रोक-टोक करनेवाला नहीं है। लेकिन यह उसकी खुदमुख्तारी और हकूमत उसको कुछ भी सुख नहीं पहुँचा रही है, बल्कि वह अत्यन्त दुखी है और उनही दिनोंके वास्ते तड़प रही है जब कि उसका स्वामी उसको बात बातमें धमकाता था, सख्त सुस्त कहता था, कभी कभी मार भी बैठता था, और जब कि उसके पतिके सहारे पर उसके देवर जेठ भी उस पर शेर हो जाते थे और सौ कच्ची पक्की सुना जाते थे। गरज संसारके सब सामान और सुख चैनकी सब सामग्री प्राप्त होने पर भी *उसको आराम नहीं है, बल्कि इनके कारण वह और भी ज्यादा* दुखी है।

मेरी बहनो, इस कथनसे तुमको यह बात भली भाँति मालूम हो गई होगी कि धन-दौलत, रुपया-पैसा, महल-मकान जर-जेवर, घोड़े-हाथी, नौकर-चाकर, इज्जत-हुर्मत, खुदमुख्तारी और हकूमतमें सुख नहीं है, बल्कि सुख दुःख सिर्फ मान लेनेकी बात है। चाहे जैसी अवस्था हो उसीमें जो कोई अपनेको सुखी मान ले वह सुखी और दुखी मान ले वह दुखी है। उस लखपती करोड़पती विधवाने सब कुछ होते हुए भी *अब अपनेको दुखी मान* रक्खा है इस कारण वह दुखी है और अपने पतिकी जिन्दगीमें जब उसने अपने स्वामीकी सर्व प्रकारकी सख्ती सहते हुए भी अपनेको सुखी मान रक्खा था तो वह सुखी थी।

मेरी बहनो, संसारका कुछ ऐसा अजीब खेल है कि अनेक प्रकारके भारी भारी कष्ट सहता हुआ तो यह आदमी कभी अपनेको महासुखी मान लेता है, और किसी भी प्रकारका कोई कष्ट न होते हुए भी कभी अपनेको दुःखी समझने लगता है। तुम नित्य देखती हो कि बच्चा जननेवाली स्त्रियाँ कितना दुःख उठाती हैं। अव्वल तो उनको नौ महीने तक बच्चेको पेटमें रखना पड़ता है जिसके कारण उनका घरसे बाहर निकलना, किसीके यहाँ आना जाना, और घरके बहुत से काम करना भी बन्द हो जाते हैं। फिर बच्चेके जंनते समय जो तकलीफ उनको उठानी पड़ती है उसको याद करके तो कलेजा दहलने लगता है। फिर दस दिन तक उनको प्रसूतिगृह या जच्चाखानेमें इस प्रकार पड़ा रहना पड़ता है जैसे कोई नरककुंडमें पढ़ा हो और उसपर तुर्रा यह है कि रोटी भी वहीं खानी पड़ती है। इसके बाद जच्चाखानेसे बाहर आकर भी, दो वर्ष तक गंदगीहीमें रहना होता है। बच्चा आधी पिछली रात टट्टी फिर देता है और माँ बिस्तरके पल्लेको उलट कर उस पर ही पड़ी रहती है, बच्चा बारबार बिस्तर पर मूतता है और उसकी माता उसको सूखेमें करके आप उसके मूत पर ही पड़ी रहती है। माँ बच्चेको गोदीमें लिये रोटी खा रही है, बच्चा वहीं टट्टी कर देता है; लाचार बच्चेकी माँ उसकी टट्टीको कपड़ेसे छिपाकर उस ही तरह बैठी रोटी खाती रहती है। जब तक बच्चा दूध पीता है बच्चेकी माताको

देखो, यदि कोई बालक खेलता खेलता गिर पड़े और अगर उसके माँ-बाप यह कहने लगें कि "हाय हाय, कैसा धड़ामसे गिरा है, तेरे तो हाड़गोड़ सब टूट गये होंगे, देखें कहाँ कहाँ चोट आई है, बता तेरे कहाँ कहाँ दुख हो रहा है," तो वह ये बातें सुनकर रोने लगेगा और अगर बालकके गिरने पर लोग यह कहने लगें कि "वाह वाह खूब कूदा, तू तो बड़ाबहादुर है, बहादुरोंको चोट नहीं लगा करती है, यह देख तूने तो कीड़ी भी मार दी" तो ऐसी बातोंसे वह बालक नहीं रोवेगा, बल्कि उठकर हँसने खेलने लगेगा। इसी प्रकार-की और भी बहुत सी बातें नित्य देखनेमें आती हैं जिनसे स्पष्ट सिद्ध होता है कि सुखदुख सिर्फ माननेका है, अर्थात् चाहे कैसी भी दशा हो उसमें सुख मान लिया तो सुख है और दुख मान लिया तो दुख।

विधवा बहनो, छोड़ो इस दुनियाके खयालको।

विधवा बहनो, जब दुनियाकी ऐसी दशा है, जब यह दुनिया धोखेकी टट्टी, पानीका बुलबुला, सुपनेकी माया, नाटकका तमाशा या धुंधका पसारा है, और इसकी कोई वस्तु सुख या दुख देनेवाली नहीं है, बल्कि अपने भ्रमसे ही दुनियाके लोग कभी अपनेको सुखी मान कर अपनी सब चीजोंको सुखदायी समझ लेते हैं और कभी अपनेको दुखी मान कर उन ही वस्तुओंको दुखदायी कहने लगते हैं, तो तुम क्यों इस दुनियाके जंजालमें फँसी हो? इसके सिवाय

अब दुनियामें तुम्हारा धरा ही क्या है जिसके वास्ते तुम भटको और मछलीकी तरह तड़पो। इस वास्ते मारो लात इस दुनियाको और छोड़ो सुख दुखके इन सब झगड़ोंको और लग जाओ पूरी तरहसे अपना अगन्त सुधारनेमें। बात बातमें आँसुओंकी नदी बहाकर और बार बार अपनी आँखें सुजाकर तुमने अच्छी तरह देख लिया है कि रोने धोनेसे अपने शरीर-को सुखानेके सिवाय और कुछ हाथ नहीं आता है। इस वास्ते अब छोड़ो इस धन्धेको और जी कड़ा करके लग जाओ अपने पापोंके दूर करने और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनानेमें, जिससे तुमको परम आनन्द और सच्चा सुख प्राप्त हो और तुम्हारा सच्चा कल्याण हो।

पुरानी बातोंको याद कर करके और दुनियाके ऐशो-अश-रत और भोग-विलासोंके वास्ते भटक भटक करके तुमने बहुत समय बिताया है, लेकिन इससे तुमको सिवाय दुख पाने और तड़प तड़प कर जान गँवानेके और कुछ भी नहीं मिल सका है। इस वास्ते अब ठुकरा दो अपने पैरोंसे इन दुनियाकी सब ऐशो अशरतोंको और कह दो इस दुनियाको झिड़क कर कि तेरे फंदेमें फँसकर हमने अबतक बहुत दुख उठाया, लेकिन अब हमने अपने मनको बिल्कुल ही तेरी तरफसे हटा लिया है और संतोष धारण करके अपने चित्तको आत्माकी शान्ति प्राप्त करनेमें लगा दिया है। इस वास्ते हे दुनिया और हे दुनियाकी सुंदर सुंदर चीजो, हट जाओ तुम हमारे सामनेसे

दुनिया तो तुम्हें इस तरह दुतकारती है और झूठमूठ ही तुमको बुरा बनाती है, लेकिन तुम फिर भी इस ही दुनियाके वास्ते तड़प रही हो और रो-रोकर अपना बुरा हाल बना रही हो। इस वास्ते खाक डालो अब इस दुनिया पर, सोचो अपनी भलाई, निकाल दो दुनियाके सब विचार अपने हृदयसे और बना लो अपने मनको आरसीके समान साफ और चमकदार; फिर तुम देखना कि इसही जन्ममें तुमको कैसा सच्चा आनन्द प्राप्त होता है, दुखका भारी बोझा तुम्हारे सिरसे उतर कर तुम्हारा हृदय कैसा गुलाबकी तरह खिल जाता है, तुम कैसी फूल सरीखी हलकी हो जाती हो, कैसी शुद्ध और पवित्र बन जाती हो और अगले जन्ममें इससे जो बेहद लाभ होगा वह रहा अलग।

तुम्हारी धर्म-साधनकी विधि गृहस्थोंसे निराली होनी चाहिए।

विधवा बहनो, तुम अपने मनमें सोचती होओगी कि हम तो पहलेहीसे बड़े बड़े व्रत उपवास करके अपनी देहको सुखा रही हैं, षट् रसोंका त्याग करके और अनेक प्रकारकी वस्तुओंका खाना छोड़ कर अपनी इन्द्रियोंको दबा रही हैं, नहाने धोने और अनेक प्रकारकी छूतछातके द्वारा अपनेको पूरी पूरी तरह पवित्र रख रही हैं, बिल्कुल सादे और सुफेद वस्त्र पहन कर सर्व प्रकारका सिंगार त्याग कर हमने तो आप ही अपने मन-

को मसोस रक्खा है,-हमको तो अब जप-तप और पूजा पाठके सिवाय और कोई काम ही नहीं है, हमने तो अब दुनियाके सब खर्च बन्द करके अपना पैसा भी धर्म-काजमें ही लगाना शुरू कर दिया है, इससे ज्यादा और किस बातकी कसर रह गई है जो हम नहीं करती हैं। हमने तो पहलेही-से इस दुनियाको लात मारकर अपने आपको खाकमें मिला दिया है और सब कुछ छोड़ कर जोग ले रक्खा है। हाँ, इतनी कसर जरूर समझ लो कि जंगलमें नहीं जा बैठी हैं, पर यहाँ घरमें रहते हुए भी हमने दुनियाका क्या पकड़ रक्खा है; हमारे लिए तो यह घर भी जंगलके ही समान है। फिर और क्या धर्मसाधन करें जो अब नहीं कर रही हैं। हाँ, एक बात हम जरूर जानती हैं कि चाहे हम कितना ही धर्मसाधन कर लें, चाहे हम कितना ही कष्ट उठा लें, पर हमारे हृदयकी बेकली न अबतक हटी और न आगेको हटेगी। हमने तो लाख कोशिशें करके देख लीं, पर हृदयमें लगी हुई यह आग इस जन्ममें नहीं बुझती। हाँ, अगले जन्ममें जाकर बुझ जाय तो हम कहती नहीं। इसवास्ते इस जन्ममें तो हमको परम आनन्द मिलता नहीं और दुख-दर्द दूर होकर हृदय हलका होता नहीं। हाँ, अगले जन्ममें जाकर इस धर्मसाधनका फल अवश्य मिलेगा और इसी वास्ते हम इसको साधती हैं और इतना कष्ट उठाती हैं।

विधवा बहनो, अबतक जिस विधिसे तुम धर्मसाधन कररहीं

हो उससे निस्सन्देह तुमको न तो सच्चा आनन्द ही प्राप्त हो सकता है और न तुम्हारा हृदय ही पवित्र बन सकता है। क्योंकि अबतक तुमने अन्य गृहस्थोंकी तरह धर्मसाधन किया है और यह नहीं जाना है कि विधवाओंके धर्मसाधनका मार्ग ही बिल्कुल निराला है। इसी वास्ते तुम्हारे हृदयकी तड़प दूर होकर तुमको शान्ति नहीं मिल सकी है। परन्तु घबराओ मत और धीरजके साथ इस पुस्तकको अव्वलसे आखिर तक पढ़ जाओ। उसके बाद अगर तुम्हारा मन मान जावे और तुमको पूरा निश्चय हो जावे कि हाँ विधिके अनुसार धर्म्म-साधन करने पर इस जन्ममें भी हमारा हृदय पवित्र बन सकता है, पूर्ण शान्ति प्राप्त हो सकती है और सर्व पापोंकी निवृत्ति होकर अगले जन्मके वास्ते भी पुण्यके भंडार भरे जा सकते हैं, तो तुम इस पुस्तकके अनुसार चलो और अगर सारी पुस्तक पढ़लेने पर भी ऐसा निश्चय न हो तो जो तुम्हारे जीमें आवे करो।

प्यारी बहनो, यह मत समझना कि मैं तुमको कोई नया धर्म सिखाऊँगा। तुम जैन हो चाहे वैष्णव, आर्यसमाजी हो चाहे धर्मसमाजी, शिवालेको पूजनेवाली हो चाहे ठाकुरद्वारेको, गरज चाहे तुम्हारा कोई भी धर्म हो, तुम्हारे धर्म, तुम्हारे पंथ और तुम्हारे मतके खिलाफ इस पुस्तकमें एक अक्षर भी नहीं लिखा जायगा; बल्कि सब ऐसी ही ऐसी बातें बताई जायँगी जो सब ही धर्मोंके मुताबिक हों और जिनके द्वारा सब ही धर्मोंको

माननेवाली विधवा बहनें अपने अपने धर्मको अपने अपने शास्त्रके अनुसार ठीक रीतिसे पालन कर सकें, जिससे उनको इस जन्ममें भी सुखशान्ति मिले और अगले जन्ममें भी ।

बात सारी यह है कि दुनियादार लोग जिस प्रकार धर्म-साधन कर रहे हैं उसी प्रकार तुम भी मत करने लगो, बल्कि जिस किसी भी धर्मका तुमको श्रद्धान हो उसहीके असली स्वरूपको अच्छी तरह समझ कर उसके अनुसार चलनेकी कोशिश करो, जिससे असलियतमें तुम्हारा कल्याण हो और तुम्हारी मेहनत व्यर्थ न जावे । आँख मींचकर दुनियाके लोगोंके पीछे पीछे चलनेसे और उनकी रीस करनेसे तुम्हारा काम नहीं चलेगा । दुनियाके लोग तो जो कुछ भी करते हैं वह दुनियाके वास्ते ही करते हैं, क्योंकि उनको तो दुनिया-में बड़ा बनना है, यश कमाना है और नाम पैदा करना है । इसवास्ते उनके तो धर्मकार्य भी सब इसी मतलबके वास्ते होते हैं; लेकिन तुम्हें तो कोई नाम नहीं करना है, बल्कि तुम्हें तो अपने अहंकारको मेटकर, मानको तोड़ कर और अपनी आत्माको शुद्ध तथा पवित्र बना कर अपना कल्याण करना है । इस वास्ते तुम्हारा और उनका रास्ता एक कैसे हो सकता है ? दुनियादारोंको तो जरूरत है दुनियाको राजी रखनेकी, उनमें रलने मिलनेकी, उन जैसा होकर रहनेकी और उनकी हाँमें हाँ मिलानेकी; लेकिन तुम्हें तो अपना जन्म सुधारना है और अपना परमार्थ सिद्ध करना है । इसवास्ते दुनियाके

लोगोंकी रीस करनेसे तुम्हारा काम कैसे बन सकता है? तुम्हारा मार्ग तो दुनियाके लोगोंसे बिल्कुल ही निराला होगा। तब ही तुम्हारा काम बनेगा, तब ही तुम्हारे पाप क्षय होकर पुण्यके भंडार भरने शुरू होंगे और तब ही तुमको इस जन्ममें भी सच्चे आनन्दका अनुभव होगा और अगले जन्ममें भी।

दुनियाके लोगोंका धर्मसाधनका झूठा मार्ग।

देखो, दुनियाके लोग तो अगर तीर्थयात्राको जाते हैं तो इस यात्राके द्वारा अपने परिणामोंको सुधारने और अपने भावोंको ठीक करनेका जरा भी खयाल नहीं करते हैं, यहाँ तक कि यात्राके दिनोंमें भी पापोंसे नहीं बचते हैं; बल्कि खूब दिल खोल कर पाप करते हुए चले जाते हैं। वे अपने असबाबको महसूलसे बचानेके वास्ते छिपाते हैं, रेलके टिकटसे बचनेके वास्ते बालकोंको स्त्रियोंकी गोदीमें देकर उनको दूध पीता बच्चा बनाते हैं, आधा टिकट लेनेके लिए उनकी कम उमर बताते हैं, और रेलके बाबुओंको घूस देकर और भी कई तरहकी बेईमानी करते हैं। वे रेलको अपनी मिलकियत समझ कर दूसरे मुसाफिरोंसे लड़ते-भिड़ते और उनको चढ़नेसे रोकते हुए चले जाते हैं, लेकिन तीर्थ पर पहुँच कर तीर्थके पंडोंको, और यात्रासे घर वापिस आकर अपने संघवालों और बिरादरीके लोगोंको खूब तर माल खिलाने और वाह वाह लूटनेमें थैलीका मुँह खोल देते हैं और रुपयेको पानीकी तरह बहानेमें जरा भी संकोच नहीं करते।

और देखो कि सबही धर्मोमें परमेश्वरकी पूजा-अर्चा और स्तुति-भक्ति इसी वास्ते बताई है कि, इससे अपना हृदय उज्ज्वल होकर, परिणामोंमें निर्मलता आकर अपने पापोंका नाश हो और पुण्यकी प्राप्ति हो। किसी भी धर्ममें यह नहीं लिखा है कि पूजा या प्रार्थनाके बिना परमेश्वरका कोई काम अटका पड़ा रहता है, या चढ़ावा मिले बिना परमेश्वर भूखा रह जाता है। परन्तु ये दुनियाके लोग ऐसा ही समझते हैं। इसी वास्ते ये लोग अपने आप पूजन या जाप करके अपने भावोंको पवित्र करनेके स्थानमें पुजारियोंके द्वारा पूजा-पाठ कराते हैं, जिससे परमेश्वरका कार्य अटका न पड़ा रहे—किसी न किसी-के द्वारा हो ही जावे, और परमेश्वरकी यह बेगार उनके सिरसे उतर जावे।

प्यारी बहनो, अब तुम ही विचारो कि अगर ये लोग रोटी खानेके वास्ते भी अपनी तरफसे किसी दूसरेको ही बिठा दिया करते, तब तो मान भी लिया जाता कि पूजा-पाठ और स्तुति-भक्तिका काम भी दूसरोंकी मार्फत चल जाता होगा, पर दुनियाके कामोंमें तो ये लोग ऐसा नहीं करते; क्यों कि दुनियामें तो जब इनको किसी छोटे मोटे हाकिमकी भी खुशामद करनेकी जरूरत होती है तो ये लोग हाकिमके पास अपनी तरफसे सलाम कर आनेके वास्ते किसी नौकरको नहीं भेज देते हैं, बल्कि खुद ही उन हाकिमोंके पीछे पीछे दौड़े फिरते हैं। हाँ, तीन लोकके बादशाह श्रीभगवान्‌की

पूजा-पाठका महान् कार्य नौकरों और पुजारियोंसे ही करा-कर संतुष्ट हो जाते हैं। इस प्रकार ये दुनियाके लोग जप भी टका देकर ही करा लेते हैं, अर्थात् धर्मक्रियाओंको ये लोग ऐसी तुच्छ समझते हैं जैसे बाजारकी साग भाजी, जब टका दिया तब ही मोल ले ली, या टकेके मजदूरोंसे करा ली।

धर्मके नामसे रुपया भी जो कुछ ये लोग खर्च करते हैं उसमें धर्मका भाव एक रत्ती भर भी नहीं होता है, उसमें भी इनकी असली मंशा लोक-दिखावा और वाह वाह प्राप्त करना ही होती है। जब ये लोग कोई मन्दिर, धर्मशाला या कुआ-बावड़ी बनानेका इरादा करते हैं, उस वक्त अगर इनको कोई समझावे कि भाई साहब, तुम्हारे गाँवमें तो ये चीजें जरूरतसे भी ज्यादा मौजूद हैं, इस गाँवमें ही और बनवा कर क्या करोगे? यदि तुम इस रुपयेसे और और स्थानोंकी ऐसी धर्मशालाओं, मंदिरों और कुए-बावड़ियोंकी मरम्मत करा दो जो टूटी पड़ी हैं और बिल्कुल बेकार हो रही हैं, तो ऐसा करनेसे तुम्हें दस गुना पुण्य होगा, क्यों कि थोड़े थोड़े रुपयेमें मरम्मत होनेसे बहुतोंकी मरम्मत हो जावेगी और सब काम आने लगे। लेकिन ऐसी बातोंको ये लोग कदाचित् भी नहीं सुनते हैं। क्यों कि इनकी तो धर्मकी कुछ भी गरज नहीं है, बल्कि गरज है नाम प्राप्त करनेकी, और नाम तब ही होगा जब अपने ही नामकी अलग चीज अपने ही गाँवमें बने। इसवास्ते चाहे कुछ भी जरूरत न हो और चाहे उनकी बनाई चीज सदा बेकार ही

पड़ी रहे, लेकिन उनको तो जो कुछ बनाना होगा वह अपने गाँवमें ही बनावेंगे।

और देखो कि बे-ईमानीसे रुपया कमाकर धर्ममें लगानेसे धर्म नहीं होता है, बल्कि उलटा पाप ही होता है। लेकिन जो लोग हजारों और लाखों रुपया धर्ममें लगाते हैं और सदाव्रत बाँटते हैं, उनको अगर यह समझाया जाय कि बे-ईमानीसे बहुत रुपया कमा कर उसको इस प्रकार लुटानेकी जगह अगर तुम ईमानदारीसे ही कमाई करो और ईमानदारी रखते हुए चाहे तुमको इतनी थोड़ी कमाई हो कि एक पैसा भी धर्मके वास्ते न बचा सको और न एक पैसा धर्ममें खर्च कर सको, तो भी तुमको बहुत ज्यादा धर्मका लाभ हो। लेकिन ये लोग ऐसे उपदेशको किसी तरह भी नहीं मान सकते। क्यों कि ईमानदारीसे थोड़ा रुपया कमानेमें धर्म-चाहे कितना ही ज्यादा होता हो, लेकिन दुनियाकी वाह वाह तो अधिक रुपया खर्चनेसे ही मिलती है। इसवास्ते बेई-मानीसे रुपया कमाकर धर्मके नाम पर लुटा देनेमें चाहे कितना ही पाप हो, लेकिन इन्हें तो वह ही करना है, जिसमें दुनियाकी बड़ाई मिले।

ये दुनियाके लोग दान-पुण्य भी इस ही रीतिसे करते हैं, जिसमें इनकी बड़ाई हो। अगर कोई इनको समझावे कि जो पैसा तुम दान-पुण्यमें लगाते हो वह सब संडे मुसटंडे ही खा जाते हैं और दुखित भुक्खितको कुछ भी नहीं मिलता;

तुम्हारे गाँवमें और आसपासके गाँवोंमें भी ऐसी अनेक विधवायें मौजूद हैं, जिनका कोई 'नाम लेवा' या 'पानी देवा' नहीं है, जो बेचारी मेरा तेरा कूट-पीस कर और किसीकी टहल-टकोरी करके ही अपना पेट पालती रही हैं, पर अब बुढ़ापा आ जाने पर जिनसे यह भी नहीं हो सकता है, इसवास्ते अब उन बेचारियोंको एक वक्त भी टुकड़ा नहीं मिलता और अब उनको अक्सर दो दो दिन तक पेट मसोस कर भूखे ही पड़ा रहना पड़ता है, लाजके मारे उन बेचारियोंसे घर घर भीख भी नहीं माँगी जाती, क्योंकि भीख माँगनेको खड़ा-होने पर अव्वल तो उनके कुटुम्बी ही उनसे लड़नेको तय्यार हो जावें कि अब तू भीख माँग कर हमारा नाम डुबोवेगी और अपने पतिके नामको धब्बा लगावेगी, और यदि आँखों पर ठीकरी रख कर वे बेचारी माँगनेको निकलें भी तो उनको दे कौन? इसवास्ते तुम अपने दानपुण्यके रुपयेको इन विधवाओंकी पालनामें लगाओ और इनके घर जाकर जो कुछ बन पड़े चुपके ही उनको दे आओ, जिससे किसीको कानोंकान भी खबर न हो और इन बेचारियोंको भी लेनेमें कुछ शरम मालूम न हो। इस प्रकारके उपदेशको ये दानपुण्य करनेवाले एक रत्ती भर भी नहीं सुनते हैं। क्योंकि इनको तो धर्म नहीं करना है, बल्कि इनको तो ढोल बजा कर रुपया लुटाना है, जिससे ये लोग बड़े भारी दाता प्रसिद्ध हो जायँ।

इसी प्रकार जब ये गृहस्थ लोग व्रत उपवास करते हैं, तो

की जड़ अभिमान है; इस कारण जबतक तनमें प्राण है, तबतक दया करना। इसीप्रकार और एक महात्माने कहा है–

आधे दोहेमें कहूँ, कोड़ि ग्रन्थको सार।
पर पीड़ा सो पाप है, पुन्य सो पर उपकार॥

इसका मतलब यह है कि करोड़ों ग्रन्थोंके सारको मैं आधे दोहेमें कहता हूँ,—किसीको दुःख पहुँचानेमें तो पाप है और किसीका भला करनेमें पुण्य। इस प्रकार और भी अनेक महात्माओंके वचन हैं, जिन सबको यहाँ लिखनेकी जरूरत नहीं हैं। इस वास्ते अब तुम उन सब आडम्बरोंको छोड़कर जो दुनियाके लोग धर्मके नामसे करते हैं, सिर्फ अपने मोह और अहंकारको दूर करने और दया धर्म पालने अर्थात् परोपकार करनेमें लग जाओ।

मोह और अहंकारहीसे सर्व प्रकारके दुःख हैं।

मेरी बहनो, तुम अच्छी तरह विचार कर देख लो कि दुनियामें जितना भी दुख है वह सब मोह और अहंकारके ही कारण है। मोह और अहंकारके ही कारण दुनियाके लोग अनेक प्रकारके कष्ट भोग रहे हैं, तरह तरहके संकटोंमें फँसे हुए हैं, और तड़प तड़पकर जान गँवा रहे हैं। इस संसारमें जिसको दुनियाकी सब वस्तुयें प्राप्त हैं, वह भी दुःखी है अगर उसको मोह और अहंकार है और जिसके पास कुछ भी नहीं है वह

सुखी है अगर उसको मोह और अहंकार नहीं है। एक बादशाहकी सवारी सुबह ही सुबह कहीं बाहर जारही थी। रास्तेमें बादशाहने देखा कि जंगलमें एक नंग धड़ंग फकीर बिना बिस्तरा बिछाये कंकरों-पत्थरोंकी धरती पर पड़ा है। बादशाह तो सदा मुलायम मुलायम बिस्तरों पर पड़ा करता था, जिसमें कभी एक ज़रासा सलवट रह जाने पर भी उसको रातभर नींद नहीं आती थी। इस वास्ते फकीरको इस तरह ढलों पर पड़ा देखकर बादशाहको बहुत आश्चर्य हुआ और उसने फकीरके पास जाकर बड़े अचंभेके साथ पूछा कि रात किस तरह कटी? फकीरने बड़ी शान्तिके साथ जवाब दिया कि हे बादशाह, कुछ तो तेरे ही समान कटी और कुछ तेरेसे भी अच्छी। यह सुनकर बादशाहको और भी ज्यादा आश्चर्य हुआ। वह बोला रे मूर्ख, मैं तो रातभर फूलोंकी सेज पर पड़ा रहा हूँ और अनेक रानियाँ और बाँदियाँ मेरी टहल करती रही हैं, और तू नंगेबदन इन पत्थरों पर पड़ा रहा है, भला तुझे मेरे बराबर सुख कहाँ मिल सकता था?, और इस पर भी तू कहता है कि कुछ रात तेरेसे भी अच्छी कटी। फकीरने उत्तर दिया कि हे बादशाह, जितनी देरतक मैं और तू दोनों सोते रहे हैं उतनी देरतक तो दोनों ही बराबर ही थे, क्योंकि सोतेमें न तुझे यह खबर रही कि मेरे नीचे फूलोंकी सेज बिछी है और न मुझे यह विचार रहा कि मैं कंकरों पत्थरों पर पड़ा हूँ। और जितनी देर तक दोनों जागते रहे

की जड़ अभिमान है; इस कारण जबतक तनमें प्राण है, तबतक दया करना। इसीप्रकार और एक महात्माने कहा है—

आधे दोहेमें कहूँ, कोड़ि ग्रन्थको सार।
पर पीड़ा सो पाप है, पुन्य सो पर उपकार॥

इसका मतलब यह है कि करोड़ों ग्रन्थोंके सारको मैं आधे दोहेमें कहता हूँ,—किसीको दुःख पहुँचानेमें तो पाप है और किसीका भला करनेमें पुण्य। इस प्रकार और भी अनेक महात्माओंके वचन हैं, जिन सबको यहाँ लिखनेकी जरूरत नहीं हैं। इस वास्ते अब तुम उन सब आडम्बरोंको छोड़कर जो दुनियाके लोग धर्मके नामसे करते हैं, सिर्फ अपने मोह और अहंकारको दूर करने और दया धर्म पालने अर्थात् परोकार करनेमें लग जाओ।

मोह और अहंकारहीसे सर्व प्रकारके दुःख हैं।

मेरी बहनो, तुम अच्छी तरह विचार कर देख लो कि दुनियामें जितना भी दुख है वह सब मोह और अहंकारके ही कारण है। मोह और अहंकारके ही कारण दुनियाके लोग अनेक प्रकारके कष्ट भोग रहे हैं, तरए तरहके संकटोंमें फँसे हुए हैं, और तड़प तड़पकर जान गँवा रहे हैं। इस संसारमें जिसको दुनियाकी सब वस्तुयें प्राप्त हैं, वह भी दुःखी है अगर उसको मोह और अहंकार है और जिसके पास कुछ भी नहीं है वह

सुखी है अगर उसको मोह और अहंकार नहीं है । एक बादशाहकी सवारी सुबह ही सुबह कहीं बाहर जारही थी। रास्तेमें बादशाहने देखा कि जंगलमें एक नंग धड़ंग फकीर बिना बिस्तरा बिछाये कंकरों-पत्थरोंकी धरती पर पड़ा है। बादशाह तो सदा मुलायम मुलायम बिस्तरों पर पड़ा करता था, जिसमें कभी एक जरासा सलवट रह जाने पर भी उसको रातभर नींद नहीं आती थी । इस वास्ते फकीरको इस तरह ढलों पर पड़ा देखकर बादशाहको बहुत आश्चर्य हुआ और उसने फकीरके पास जाकर बड़े अचंभेके साथ पूछा कि रात किस तरह कटी ? फकीरने बड़ी शान्तिके साथ जवाब दिया कि हे बादशाह, कुछ तो तेरे ही समान कटी और कुछ तेरेसे भी अच्छी। यह सुनकर बादशाहको और भी ज्यादा आश्चर्य हुआ । वह बोला रे मूर्ख, मैं तो रातभर फूलोंकी सेज पर पड़ा रहा हूँ और अनेक रानियाँ और बाँदियाँ मेरी टहल करती रही हैं, और तू नंगेबदन इन पत्थरों पर पड़ा रहा है, भला तुझे मेरे बराबर सुख कहाँ मिल सकता था ? और इस पर भी तू कहता है कि कुछ रात तेरेसे भी अच्छी कटी। फकीरने उत्तर दिया कि हे बादशाह, जितनी देरतक मैं और तू दोनों सोते रहे हैं उतनी देरतक तो दोनों ही बराबर ही थे, क्योंकि सोतेमें न तुझे यह खबर रही कि मेरे नीचे फूलोंकी सेज बिछी है और न मुझे यह विचार रहा कि मैं कंकरों पत्थरों पर पड़ा हूँ। और जितनी देर तक दोनों जागते रहे

उतनी देर तू तो मोह और अहंकारके कारण संसारकी अनेक चिन्ताओंमें फँसा रहा, इसवास्ते दुःखी ही रहा और मुझे कोई भी चिन्ता नहीं थी। क्योंकि मुझे न किसी चीज़का मोह है और न अहंकार। मैं अपनी मौजमें रहा। इस वजहसे यह रात कुछ तो तेरे समान कटी है और कुछ तुझसे भी अच्छी। फकीरका यह जवाब सुनकर बादशाह कायल हो गया, फकीरके पैरोंमें पड़ गया और हाथ जोड़कर कहने लगा कि महाराज, आपका कहना सत्य है। हम लोग दुनियाके कुत्ते हैं और मोह और अहंकारकी जंजीरोंमें बँधे हुए ख्वाम-ख्वाह ही भौं भौं कर रहे हैं। हमको सुख कहाँ? सुख तो बेशक आप जैसोंको ही है जिनको न किसी चीजका मोह है और न किसी बातका अहंकार, और इसी कारण न किसी प्रकारका फिकर। बेशक आपके पास तो किसी प्रकारका भी दुख नहीं आ सकता है, आपको तो हरवक्त आनन्द ही आनन्द है।

मेरी बहनो, इस तरह तुम भी यक़ीन मानो कि जितना जितना तुम अपने मोह और अहंकारको कम करती रहोगी उतना ही उतना आनंद तुमको भी प्राप्त होता रहेगा, और इससे पापकर्मोंकी उत्पत्ति कम होकर आगेके वास्ते भी आनन्दके ही सामान बनते रहेंगे। मोह और अहंकारके दूर होनेसे जो परम आनन्द प्राप्त होता है, जो आत्मिक सच्चा सुख मिलता है, उसको प्राप्त करनेके वास्ते अनेक राजा महाराजाओंने धन

दौलत, सुख सम्पदा, हाथी घोड़े, महल अटारी, लाओ लश्कर
नौकर चाकर, रानियाँ बाँदियाँ, और राज पाट सभी कु
छोड़ दिया है, फिर तुम्हारे पास तो ऐसी कौनसी बढ़िय
चीज है, जिसका मोह तुम नहीं छोड़ सकती हो। सच तो य
है कि गिरस्तिन स्त्रियाँ तो अपने और अपने बाल बच्चों
मोहमें ऐसी फँसी रहती हैं कि उनको एक पल भरके लिए भ
इस मोहका त्यागना भारी है। उनको तो अपनी इज्जत
आबरू, छुटाई बढ़ाई, ऊँच नीच, नेकनामी बदनामी आदिक
ख्याल ऐसा घेरे रहता है कि उनको जरा देरके लिए भी इस
फिकरसे छुटकारा पाना महाल है। इसके सिवाय पतिको राजी
रखना, उसकी आज्ञा मानना, उसकी खोटी खरी सहना, उसके
दुखमें दुखी होना, ऐसी ही ऐसी और भी अनेक बातें हैं
जिनकी चिन्तामें गिरस्तिन स्त्रियोंको रातदिन फँसा रहना पड़ता
है। इस वास्ते वे बेचारियाँ किस तरह सच्चा धर्म पालें और
किस तरह अपनी आत्माको शुद्ध करके सच्चा आनन्द पावें।
वे तो गृहस्थकी बेड़ियोंमें बँधी पड़ी हुई दुनियाके दुखोंके ही
हिंडोलेमें झूल रही हैं। उन बेचारियोंके तो आठों पहर दुनि-
याकी ही चिन्तामें बीतते हैं। उनको तो हरवक्त चिन्ताओंका
एक ताव आता है और एक जाता है। उनके हृदयमें तो हर
वक्त चिन्ताओंकी एक लहर उठती है और एक दबती है। इस
वास्ते उनको शान्ति कहाँ, और इस कारण सच्चा आनन्द
कहाँ? इसही वास्ते वे बेचारियाँ लाचारीको नाममात्रका बाहर-

के दिखानेका ही धर्म कर लेती हैं। इसके सिवाय वे बेचारी और करें ही क्या ?

परन्तु मेरी विधवा बहनो, तुम्हारे सिरपरसे तो कुदरतने आपसे आप यह सारा बोझ उतार दिया है। तुम जबरदस्ती अपने आप ही मोहमें बँधना चाहो और ख्वामख्वाह ही अहंकारमें फँसने लगो तो इसका तो कुछ इलाज ही नहीं है। नहीं तो तुम्हें तो दुनियाका कोई भी बंधन नहीं है जिसमें तुम अटकी रहो, और ऐसी कोई बात ही नहीं है जिसके कारण तुम किसी कामके करनेसे लाचार हो जाओ। इसवास्ते अपने हृदयसे मोह और अहंकारके मैलको धो डालने और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाकर सच्चा आनन्द प्राप्त करनेका तुमको यह बहुत ही अच्छा अवसर मिला है। विश्वास रक्खो और निश्चय जानो कि सच्चे धर्मसाधनका ऐसा शुभ अवसर राजा महाराजाओंको भी प्राप्त नहीं होता है। वे भी इसके लिए भटकते रहते हैं। इसवास्ते अपनी इस अवस्थाको धर्मसाधनके वास्ते गनीमत जानकर एकदम अपने कर्मोंकी बेड़ियोंके काटनेमें लग जाओ और महान् पद पाओ।

मेरी बहनो, तुम जरा यह भी तो सोचो कि मोहमें फँसनेसे सिवाय तड़पने और दुःख उठानेके और कुछ हाथ भी तो नहीं आता है। और तुम्हारा तो दुनियामें कुछ धरा भी नहीं है, जिसका मोह करके तुम इस जन्मका भी आनन्द खोओ

और अपना अगन्त भी बिगाड़ो। इस जन्ममें दुनियाके किसी सुखभोगके मिलनेकी आशा तो तुमको कुछ है ही नहीं, इसवास्ते तुम तो बहुत करके अपनी पिछली बातोंको ही याद करके रोया करती हो। यह ही तुम्हारा मोह है और यह ही तुम्हारा अहंकार; परन्तु यह तुम्हारी बड़ी भारी भूल है। क्योंकि जब गई बात हाथ ही नहीं आ सकती है तो उसके वास्ते रोना और तड़पना मूर्खता नहीं तो और क्या है? तुमको तो यह समझना चाहिए कि जैसे रेलमें इधर उधरके मुसाफिर मिल जाते हैं और घड़ी दो घड़ी आपसमें बातचीत करके कोई पहले उतर जाता है और कोई पीछे, कोई इधर चल देता है और कोई उधर, बिल्कुल इस ही तरह इस दुनियाके लोगोंका मेल है। इस कारण जिसप्रकार रेलमें एक मुसाफिरके उतरने पर दूसरा मुसाफिर दुखी नहीं होता और न रोने बैठ जाता है, उसही प्रकार इस दुनियामें भी किसी एकके चले जाने पर दूसरोंको तड़पना और जान खोना मुनासिब नहीं है। हाँ, अगर रोने कलपने और लोटने पीट-नेसे वह जानेवाला लौट आया करता, तब तो कुछ बात भी थी; पर यह तो हो नहीं सकता। वह जानेवाला तो ऐसी जगह गया ही नहीं, जहाँसे लौटकर आ सके; फिर कैसा मोह और कैसा तड़पना, यह तो निरी मूर्खता और पागलपन ही नहीं है।

पिछले भोग-विलासोंको याद करना पाप है।

मेरी बहनो, हिन्दुस्तानके सब ही धर्म यह बात कहते हैं कि जीवकी ८४ लाख योनियोंमेंसे एक मनुष्य-योनि ही ऐसी है, जिसमें धर्म साधन हो सकता है। मनुष्यजन्म सिवाय और किसी भी जन्ममें धर्मसाधन नहीं हो सकता है और साथ ही इसके यह भी कहते हैं कि मनुष्यपर्याय पाना भी कोई आसान बात नहीं है, बल्कि बहुत ही भारी पुण्य कर्मोंसे कदाचित् यह मनुष्य-जन्म मिल सकता है। इस वास्ते अगर इस उत्तम मनुष्य जन्मको ऐसी बातोंके याद करनेमें गँवा दिया जावे जो किसी तरह भी प्राप्त नहीं हो सकती हैं तो यह महा मूर्खताकी बात नहीं तो और क्या है? इस वास्ते मेरी बहनो, अब तुम पिछले मोहको छोड़ो और कड़ा मन करके सच्चे तौर पर अपना अगन्त सुधारनेमें लग जाओ। जब जब तुमको पिछली बातोंकी याद आवे तब तब तुम अपने मनको इस प्रकार समझाकर इन खयालोंको हटा दो कि जब मैं अब वह ही नहीं रही हूँ जो पहले थी, तो अब पहली बातोंके खयाल भी मेरे पास क्यों आते हैं? पहले मैं सधवा थी और अब विधवा हूँ। पहले इस संसारके सब ही भोग विलास मेरे वास्ते शोभाकी बात थे, पर अब ये ही भोगविलास मेरे लिए कलंककी बात हैं। इस वास्ते अब मेरे हृदयमें पहली बातोंका खयाल आना बिलकुल ही अनुचित और बहुत ही शर्मकी बात है। इसके

जाओ और शोक करना बिल्कुल ही छोड़ दो। शोक वही करता है जो मोहमें बावला हो जाता है, बेबस होकर जिसकी अक्ल ठिकाने नहीं रहती है, मन जिसका बेकाबू हो जाता है और जो इस बातका विचार ही नहीं कर सकता है कि शोक करनेसे कुछ लाभ भी होगा कि नहीं। धर्मात्मा पुरुष मोहमें डूबकर अपनी अक्ल नहीं खो बैठता है। इसवास्ते वह कभी शोक नहीं करता है। बल्कि वह भली बुरी सब ही दशाओंमें संतोष करता है और दुख सुखकी सर्व अवस्थाओंमें एक समान रहता है। धर्मात्मा पुरुष खूब समझता है कि इस दुनियामें पापपुण्यके सिवाय और कुछ भी नहीं मिलता है। इसवास्ते वह हमेशा पापोंसे बचने और पुण्य प्राप्त करनेकी ही कोशिशमें लगा रहता है। वह यह बात भी अच्छी तरह जानता है कि पापपुण्य सब अपने ही अच्छे बुरे परिणामोंसे पैदा होता है। इसवास्ते वह हरवक्त अपने परिणामोंकी ही सँभाल और देखभाल रखता है और ऐसे विचार किसी तरह भी अपने हृदयमें नहीं आने देता है, जिससे मोह उत्पन्न हो और मन बेकाबू हो जाय।

पिछले सुखोंका बार बार चिन्तवन करना, किसी अपने प्यारेको याद कर करके रोना, अपनी इच्छाके अनुसार सुख भोग न मिलनेके कारण तड़पना, ये सब बातें परिणामोंको गँदलाकर देनेवाली और महापाप पैदा करनेवाली हैं। इस वास्ते मोहको दूर करने और परिणामोंको शुद्ध और पवित्र बनानेके

पर वह तो दूसरोंको सुखी देखकर जल मरता है। इसवास्ते डाह करनेके बराबर तो दुनियामें और कोई पागलपनकी बात ही नहीं है। एक सेठजी किसी कारणसे बहुत गरीब हो गये और अपनी पहली बातोंको याद कर करके खूब तड़पने और दुख उठाने लगे। होते होते उनको कोई महात्मा मिल गये, जिन्होंने किसी कारणसे उनको एक ऐसा मंत्र बता दिया, जिसके जपनेसे जो चाहे प्राप्त हो जाय। लेकिन उस मंत्रमें एक अद्भुत शक्ति यह भी थी कि मंत्र जपनेवाला उस मंत्रसे जो भी चीज अपने वास्ते प्राप्त करे उससे दुगनी दुगनी चीजें उसके पड़ोसियोंके यहाँ होती रहें। सेठजी मंत्रको सीखकर खुश होते हुए घर आये और मंत्र जपकर प्रार्थना करने लगे कि मेरे यहाँ इतने महल, इतने घोड़े, इतने हाथी और इतना धन हो जाय। मंत्रके जोरसे तुरंत यही सब चीजें प्राप्त हो गई, लेकिन उनके पड़ोसियोंके यहाँ भी ये चीजें दुगनी दुगनी हो गई। मतलब इसका यह हुआ कि उसके यहाँ अमीरी ठाठ भी लग गये; वह मालदार भी हो गया और सुखभोगकी सब चीजें भी उसको मिल गई; लेकिन औरोंके यहाँ भी ये सब चीजें दुगनी दुगनी हो जानेसे उसकी हैसियत उसके पड़ोसियोंसे आधी ही रही। एक बार तो वह इन चीजोंके पानेसे बहुत खुश हुआ, लेकिन जब घरसे बाहर निकलने पर उसको यह मालूम हुआ कि पड़ोसियोंके यहाँ ये सब चीजें मेरेसे भी दुगनी ... गई हैं और मैं उनसे घटिया ही रहा हूँ तो वह अहंकारके

वश होकर बहुत दुखी हुआ। अब वह सोचने लगा कि मैं अपने मंत्रके जोरसे और भी चाहे जितनी चीजें प्राप्त कर लूँ तो भी मैं तो उनसे कम ही रहूँगा। क्योंकि जितनी जितनी चीजें मैं प्राप्त करता जाऊँगा उससे दुगुनी दुगुनी उनके यहाँ होती रहेंगी। इस वास्ते यह मंत्र तो मुझे सुख देनेवाला नहीं है, बल्कि दुख देनेवाला है। क्योंकि घटती बढ़ती ही तो दुनियामें एक बात है और बातहीका दुनियामें मोल है। जब इस मंत्रसे मेरी बात ही बढ़िया न हो सकी, बल्कि मैं घटिया ही रहा तो फिर क्या मैं इस मंत्रको चाँटूँ!

इस प्रकार अहंकारमें बावला होकर वह विचारने लगा कि आदमी सौ फरेब और सौ बेईमानी करके, रात दिन अपनी हड्डियाँ पेलकर, जान जोखममें डालकर और खून पसीना एक करके जो कुछ कमाई उमर भर करता है, उसको न आप खाता है और न अपने घरवालोंको खाने देता है। बल्कि ज्यों त्यों गुजारा करके कौड़ी कौड़ी जोड़ता है और सब बेटा-बेटियोंके विवाहोंमें झोक देता है या धर्मके नाम पर लुटा देता है। ये सब काम वह क्यों करता है? बस एक बात हाथ आनेके वास्ते ही तो; सो वह ही बात मेरे हाथ न आई। मैं तो ऐसा बढ़िया मंत्र मिलने पर भी घटिया ही रहा, और मेरे पड़ौसी मुझसे दुगने होकर मुफ्तमें ही बात उड़ा ले गये। इस प्रकार पड़ौसियोंकी बढ़ती देख देख कर उस सेठको आग लगी जाती थी और वह बहुत बेचैन होता था।

आखिर उसने विचार किया कि मुझे चाहे एक भी चीज न मिले यह तो मैं सह लूँगा, पर इन पड़ौसियोंके यहाँ अपनेसे दुगनी दुगनी चीजोंका हो जाना मुझसे सहन नहीं हो सकता। इस वास्ते उसने अपने मंत्रसे कहा—"मेरे पास एक भी चीज न रहे।" ऐसा कहते ही तुरंत उसकी सब चीजें नष्ट हो गईं और वह पहलेकी तरह कंगाल हो गया और उसके पड़ौसियोंके यहाँ भी जो चीजें मंत्रके प्रभावसे हो गई थीं वे भी जाती रहीं, और वे भी वैसे ही रह गये जैसे कि वे पहले थे। ऐसा हो जाने पर सेठका चित्त कुछ ठिकाने आया और वह मनमें कहने लगा कि अब मैं अपनी कंगाली तो ज्यों त्यों काट लूँगा, पर अपने पड़ौसियोंकी ऐसी बढ़वारी मेरेसे किसी तरह भी नहीं देखी जा सकती थी।

सेठ इस प्रकार अपने दिन कंगालीमें काटने लगा। फिर कुछ दिन पीछे वे ही महात्मा जिन्होंने उसको मंत्र दिया था वहाँ आनिकले और सेठको कंगालीमें देख कर अचंभा करने लगे। सेठने उनको अपना सब हाल सुनाया और उलाहना देकर कहा—"महाराज, तुमने तो अपना मंत्र देकर मेरी बात ही आधी कर दी थी और मुझे किसी जोग भी नहीं रक्खा था।" महात्माको उसकी बात सुनकर बहुत हँसी आई। उन्होंने सेठसे कहा कि "भाई, मैंने तो तुझको कंगाल देखकर दया करके वह मंत्र दिया था जिससे तुझको दुनियाकी सब चीजें प्राप्त होती रहें और तू सर्व प्रका-

रेका सुख भोगे, और तेरे पड़ौसियोंके यहाँ दुगनी दुगनी चीजें पैदा करनेकी शक्ति इस मंत्रमें इसवास्ते रख दी थी कि वे लोग तेरे सुखभोगको देखकर तेरे साथ डाह न करने लगें । पर अब तेरी इन बातोंसे मालूम हुआ कि तुझको तो संसारके भोगोंकी दरकार नहीं है, बल्कि तू तो अपनी डाह पूरी करना चाहता है, अर्थात् तुझे चाहे कितना ही दुख मिले, परंतु औरोंको तू सुखी नहीं देख सकता है । बल्कि उनको अप-नेसे ज्यादा दुखी देखनेमें ही सुख मानता है । पर भाई, तेरी यह बात भी तो इसी मंत्रसे पूरी हो सकती थी । क्योंकि जब तू इस मंत्रसे कहता कि मेरी एक टाँग टूट जा, तो तेरी तो एक टूटती और तेरे पड़ौसियोंकी दो दो टूट जातीं । इसी प्रकार जो जो दुख तू अपनेको देता उससे दुगना दुगना दुख तेरे पड़ौसियोंको हो जाता । ”

यह बात सुनकर सेठ बहुत खुश हुआ और उसने तुरन्त ही अपने मंत्रसे कहा कि “ मेरी एक आँख फूट जा ” और चट वह काना हो गया, फिर वह दौड़ा दौड़ा अपने मुहल्लेमें गया और अपने सब पड़ौसियोंको निपट अंधे बने हुए देखकर बहुत ही प्रसन्न हुआ और खुशीके मारे अंगमें फूला न समाया । फिर उसने मंत्रके द्वारा अपनी एक टाँग और बाँह भी तुड़वाकर अपने पड़ौसियोंको बिल्कुल ही टुंटमुंड बनवा दिया ! उसने उस मंत्रके द्वारा इसी प्रकारके और भी बहुतसे काम किये, जिसमें अपनेको तो आधी तकलीफ हो और पड़ौसियोंको

पूरी। इस तरह उसने अपने आपको महाकष्टमें डालकर परन्तु अपने पड़ोसियोंको अपनेसे दुगना कष्ट देकर बहुत ही आनन्द मनाया और अपने जन्मको सफल जाना।

मेरी बहनो, यद्यपि यह कहानी बिल्कुल बनावटी है, लेकिन इससे यह बात अच्छी तरह मालूम हो जाती है कि डाह करनेवालेके विचार कैसे होते हैं और उसकी क्या गति होती है। बहनो, तुमको यह कहानी सुनकर आश्चर्य होता होगा कि ऐसा कौन बेवकूफ होगा जो अपना नुकसान करके दूसरोंको दुख देना चाहता हो और फिर आप खुश भी होता हो। मगर मेरी बहनो, जब तुम दुनियाके लोगोंकी चालको गौरके साथ देखोगी तो तुमको मालूम हो जायगा कि अपनी नाक कटा कर दूसरोंका अपशकुन मनानेवाले बहुत हैं। "चाहे मेरा ईंटका घर मिट्टीका हो जाय, चाहे मेरे सूतके बिनौले हो जायँ, पर एक बार तेरी ईंटसे ईंट बजा देनी है। चाहे मेरा कितना ही नुकसान हो, चाहे मुझे कितनी ही मुसीबत उठानी पड़े पर एक दफे तुझे तेरे घमंडका मजा चखा देना है। चाहे मुझे कैद भुगतनी पड़े, चाहे पीछेसे मैं फाँसी ही पाऊँ, पर एक दफे तेरी शेखी ढीली कर देनी है।" इस प्रकारकी अनेक बातें और इसी तरहके अनेक काम नित्य देखनेमें आते हैं, जिनमें गुस्सा और डाह दोनों मिले हुए हैं। खालिस डाह बहुत करके निर्बल हृदयवालोंको

ही होती है, जो कर तो कुछ सकते नहीं, सिर्फ दूसरोंको देख-कर ही जलते रहते हैं।

बहुत रोने और तड़पनेसे विधवाओंका हृदय बहुत कमजोर हो जाता है। आशा किसी बातकी रहती नहीं, कर कुछ सकतीं नहीं, इस वास्ते विधवाओंमें डाह बहुत बढ़ जाती है। यह सच है कि पाँचों उँगलियाँ एकसीं नहीं होतीं, लेकिन कोई कोई तो ऐसी कठोर हृदयकी होती हैं कि अपने ही कुटुम्ब-वालोंको देख देख कर जलती रहती हैं और मनमें ऐसी बुरी बुरी भावनायें करती रहती हैं जिनको सुन कर भी दिल दहलने लगे। वे अपनी देवरानी, जेठानी और कुटुम्बके लोगोंको भोग-विलासोंमें लगे हुए और आनन्दमें मग्न देखकर जी-ही-जीमें जलने लगती हैं और मन-ही-मन कोसने लगती हैं कि इन पर भी रँडापा आवे और इनके भी पति मर जावें, तब जानें ये पराई पीरको। आपसमें हँस खेल कर और प्यार मुह-ब्बतमें घुल-मिलकर जैसा यह मेरे जीको जला रही हैं, ऐसा ही जी इनका भी जले तब जानें ये रँडापेकी हकीकत। हाय हाय, इनका कैसा पत्थरका हिया है कि जिस घरमें मेरे जैसी कर्मोंकी फूटी और रामकी खोई एक तरफ पड़ी मछलीकी तरह तड़प रही हो और जलते अंगारों पर लोट रही हो, उस ही घरमें ये लोग ऐसी रंग-रलियाँ करें। हे परमेश्वर, अगर तेरेमें शक्ति है तो एक दफे तो तू इन सबको रँडापेका मजा चखा दे, जिससे इनकी आँखें तो खुलें, जिससे फिर ये मेरे जीको

न जलाया करें और आपसमें हँस-बोलकर मेरे सूखे हृदयमें दियासलाई न लगाया करें। हे परमेश्वर, एक बार तो तू ऐसा कर दे, फिर जो तेरे जीमें आवे सो करना, पर एक दफे तो तू जरूर तमाशा दिखा दे।

हे भगवन्, तू ही इन्साफ कर कि जब ये लोग अपने बालबच्चोंके साथ प्यार करते हैं, गोदीमें लेकर उनका मुँह चूमते हैं, मुहब्बतके साथ उनको छातीसे लगाते हैं, उनकी तोतली बोली और मीठी मीठी बातें सुनते हैं, उनके साथ अनेक प्रकारका लाड़-चाव करके अपनी छाती ठंडी करते हैं और उनका ब्याह सगाई करके अपने दिलकी उमंग निकालते हैं, तब क्या मेरे हृदयमें आग न लगे! यह रँडापा न मिलता तो क्या इसी तरह मैं भी न खिलाती अपने बालकोंको; मेरे तो अबतक तीन चार हो लिये होते। हे परमेश्वर, या तो तूने हमें राँड न बनाया होता और जो राँड ही बनाया था तो औरों जैसा हृदय न दिया होता और न हमारे हृदयमें भी औरों जैसी चाह पैदा करी होती, और अब जब तूने हमको राँड भी बनाया है और हृदय भी औरों ही जैसा दे रक्खा है और हृदयमें चाह भी सबके ही समान उत्पन्न कर रक्खी है, तो तू हमारे सामनेसे यह सब तमाशे हटा दे, जो हमारे देखनेमें आ रहे हैं। अर्थात् या तो सारी दुनियाको हमारे जैसा बना दे, या हम राँडोंकी दुनिया ही अलग बसा दे! बस, फिर न कुत्ता देखेगा और न भौंकेगा। वह अपने घर राजी

और हम अपने घर राजी। वह अपनी दुनियामें रह कर स्वर्ग सुख भोगो और हम अपनी अलग दुनिया बसा कर नरकके त्रास झेलें, इसमें कुछ हर्ज नहीं है। क्यों कि न हम उनके भोग देखेंगी और न वे हमारे त्रास। उनके भोगोंको न देखनेसे न हमारे हृदयमें आग लगेगी और न हमारे त्रास देखकर उनके आनन्दमें खलल पड़ेगा। और हे भगवान्, तू और भी जितना चाहे दुख हम पर डाल दे वह हम सब झेल लेंगीं; पर अपनी आँखोंके सामने औरोंको मौज उड़ाते, आनन्द मनाते और चैन करते हमसे नहीं देखा जाता है। इसको सहन करना हमारी शक्तिसे बाहर है।

प्यारी बहनो, मूर्ख विधवाओंके हृदयके ये खोटे खोटे विचार मैं उनकी निंदा करनेके वास्ते नहीं लिख रहा हूँ, बल्कि यह दिखलाना चाहता हूँ कि पूर्व जन्मके पापकर्मोंका खोटा फल भोगता हुआ भी यह मनुष्य इस बातकी तो कोशिश करता नहीं कि आगेको तो पापोंसे बचूँ; बल्कि अपने परिणामोंको बिगाड़ बिगाड़ कर और भी ज्यादा ज्यादा पाप बटोरने लग जाता है। हमारी सभी विधवा बहनोंको यह तो निश्चय है कि पूर्व जन्मके पाप कर्मोंसे ही उनकी यह दुर्दशा हुई है और वे यह भी जानती हैं कि किसीका बुरा मनाना, किसीके लिए खोटा चिन्तवन करना, और किसीके नुकसानकी भावना करना बहुत ही भारी पाप है, और ऐसे ही पापोंसे रंडापा मिलता है या नरककी घोर वेदना भोगती पड़ती है; लेकिन

याद रक्खो, जिस प्रकार लड्डू लड्डू कहनेसे मुँह मीठा नहीं होता है, उसी तरह दयाधर्मके गीत गानेसे भी कुछ नहीं होता है, जब तक उस पर अमल न किया जाय। इस वास्ते दयाधर्मके स्वरूपको अच्छी तरह समझकर उस पर पूरी तरहसे चलनेकी कोशिश करो; जिससे तुम्हारे पुण्यके भंडार भरें और इस जन्ममें भी और अगले जन्ममें भी तुमको आत्मिक सच्चे आनन्दकी प्राप्ति हो। तुम ध्यान देकर समझ लो कि किसीको किसी प्रकारका दुखिया देखकर हृदयमें उसके दुख दूर होनेका भाव पैदा होनेहीको दया कहते हैं और उसके दुख दूर करनेकी कोशिश करना ही दयाधर्मका पालन है। दयाधर्मका पालन करनेवाला संसार भरके सभी प्राणियोंका भला चाहता है और सदा हृदयमें यही भाव रखता है कि कभी किसी जीवको किसी प्रकारका भी दुख न हो। दयाधर्मका पालन करनेवाला आप चाहे कैसी ही घटिया अवस्थामें हो, आप चाहे कैसा ही कष्ट सह रहा हो; परन्तु वह दूसरोंकी बढ़वारी देखकर और दूसरोंको सुख शान्तिमें मग्न पाकर खुश होता है और सदा यही मनाता रहता है कि सबहीकी वृद्धि हो और सबहीको सदा सर्व प्रकारका आनन्द प्राप्त होता रहे।

परन्तु मेरी विधवा बहनो, "परमेश्वर सदा सबका भला करे" यह बोल सुननेमें तो बहुत ही मनोहर और बोलनेमें बहुत ही मीठा मालूम होता है और इसी वास्ते सब स्त्रियाँ बातमें यह बोल बोलती भी रहा करती हैं; परन्तु पालन

इस बोलका वे ही करती हैं, जो सच्ची धर्मात्मा हैं और जिनको अपनी आत्माको सँवार कर अपना अगन्त सुधारना है। दयाधर्मका पालन करनेवाला दुनियाभरके प्राणियों-को अपने सगे भाई बन्धु और अपने कुटुम्बी समझता है और सबकी सर्व प्रकारकी बढ़वारी और सबके लिए सब तरहके सुख और आनन्दकी प्राप्ति उसी तरह चाहता है, जिस तरह माँ अपने बेटेके वास्ते। जिस प्रकार माता हजार कष्ट सहती हुई और दुख दर्दमें तड़पती हुई भी अपने बेटा-बेटीको सुख पहुँचानेमें लगी रहती है, मरती मरती भी उनके सुख-की कोशिश करती है और उनको सुख मिलने पर खुशीके मारे अपना दुख भी भूल जाती है, उसी तरह दया धर्मके पालनेवाले और सबका भला चाहनेवाले भी आप कैसे ही कष्टमें हों, पर दूसरोंको सुखी देखकर अपना सब कष्ट भूल जाते हैं।

इसी तरह मेरी विधवा बहनो, तुम भी विचार लो कि अगर तुमको पुण्य कमाना है और दयाधर्म पालन करके सच्चे हृदयसे सबका भला चाहना है तो तुम अपने आप चाहे कैसी ही मुसीबतमें रहो, मगर अपनी देवरानी जेठानी अपने अड़ौस-पड़ौस और गली मुहल्ले वालों और सभी लोगोंको जिनसे तुम्हारा वास्ता पड़े सुखी देखकर आनन्द मनाओ और उनके सुखमें सुखी हो कर अपनी मुसीबत भूल जाओ। पापोंकी गठड़ी बाँधनेवालीं और अपना अगंत बिगाड़नेवालीं विधवायें तो अपने कुटुम्बियों-

को आनन्दमें मग्न देखकर अपने हृदयमें जलन पैदा करती हैं, उनको मौज करते और हँसते बोलते देखकर रोती और तड़पती हैं और उनके बाल बच्चोंको खेलते कूदते देखकर डाह करती हैं; मगर जिन विधवा बहनोंको अपनी आत्मासे कर्म-कलंक हटाकर अपना अगन्त सुधारना और पुण्य कमाना है, उनको अपने कुटुम्बियोंका सुखभोग देखकर जलन पैदा होनेकी जगह आनन्द पैदा होना चाहिए, रोने तड़पने-के बदले खुशी होनी चाहिए, डाह करनेके स्थानमें उनके लिए ज्यादा ज्यादा बढ़वारीकी इच्छा करनी चाहिए और उनके सुखको ही अपना सुख समझना चाहिए।

लेकिन मेरी बहनो, यह बात मुझे फिर कहनी पड़ती है कि ऊपरके मनसे या सिर्फ लोक-दिखावेके वास्ते ये बातें मत करो। क्योंकि इससे तो तुम्हारी आत्माको कुछ भी फायदा नहीं पहुँचेगा, बल्कि सच्चे हृदयसे ही सबकी भलाईकी कोशिश करती रहो, और सदा अपने हृदयको टटोल कर देखती रहो कि कभी किसीके वास्ते कोई बुराईका भाव तो पैदा नहीं हो गया है। याद रक्खो कि जब और जितना तुम्हारे हृदयमें किसीके वास्ते बुराईका भाव आता है उतना ही उतना तुमको पाप लगता जाता है। इस वास्ते हरवक्त अपने हृदयकी सँभाल रक्खो और कभी किसीके भी वास्ते बुरा भाव अपने हृदयमें न आने दो। सच तो यह है कि

बुरा तो तुम अपने वैरीका भी मत चितारो, क्योंकि इससे भी तुम्हारे परिणाम बिगड़ते हैं और आत्मा मलीन होती है ।

कभी अपने बैरीका भी बुरा मत चाहो ।

विधवा बहनो, ऐसे अवसर तुम पर अनेक बार आवेंगे और आते रहते होंगे, जब तुम भी लोगोंके हाथसे ठगी जाती होंगी, तुम्हारे भी हक छीने जाते होंगे और अपाहज समझकर तुमको अनेक प्रकारके दुख दिये जाते होंगे; परन्तु ऐसे अवसरों पर भी तुमको अपने हृदयको मैला नहीं होने देना चाहिए, और इन दुष्टोंके वास्ते भी बुरा भाव अपने चित्तमें नहीं आने देना चाहिए। दुनियामें सभी तरहके लोग होते हैं, भले भी और बुरे भी, धर्मात्मा भी और पापी भी, दयावान् भी और हत्यारे भी; जिनमें ईमानदार तो कम और बेईमान ज्यादा होते हैं । इनमें इनेगिने सच्चे धर्मात्माओंको छोड़कर बाकी सब दुनियाके कुत्ते हैं, जो बेचारी विधवाओंको भी धोखा देने और लूटनेसे नहीं चूकते हैं । यहाँ तक कि कभी कभी तो बहुत ही नजदीकके ऐसे रिश्तेदार भी—जो खुद ही उस विधवाकी पालनाके जिम्मेदार होते हैं—उसको लूट खसोट लेते हैं, उसको बिल्कुल नंगी बुची और खाली हाथ करके उससे बिल्कुल बे-गरज और बे-मतलब हो बैठते हैं और उलटे सौ सौ इलजाम उस बेचारी पर ही लगा देते हैं । इनमें कोई कोई तो ऐसे निर्दय देखनेमें आये हैं, जो ऐसी गरीब विधवाको भी लूट खसोट लेते हैं जो बेचारी

पीसना पीसकर और किसी की टहल-टकोरी करके ही अपना गुजारा करती हो और जिसने सौ तरह अपना पेट मसोसकर वक्त बे-वक्तके वास्ते सौ पचास रुपये जोड़ रक्खे हों या अपना सो पचास रुपयेका गहना जिस तिस तरह थाम रक्खा हो । ये वज्रहृदय लोग इन बेचारियोंका धन क्या हरते हैं सचमुच उनका कलेजा ही निकाल ले जाते हैं और जन्मभरके वास्ते उनको अधमरी कर जाते हैं । परन्तु क्या किया जाय, इन बेचारियोंको तो अपने भाई भतीजोंसे, अपने प्यारों और एतबारवालोंसे नित्य ही ऐसे ऐसे नुकसान उठाने पड़ते हैं । ये लोग सौ सौ बातें बनाकर, तरह तरहके लालच दिखाकर और पेटमें घुसकर उनका माल ले लेते हैं और फिर तोते कैसी आँख फेरकर बिल्कुल बेवास्ता हो जाते हैं और पहले कुछ दिन टालमटोल करके फिर कोरा जवाब दे बैठते हैं । ये बेबस विधवायें इन दुष्टोंका कुछ कर तो सकती नहीं, इस कारण कुछ दिनों हाय हल्ला मचाकर आखिरको इन्हें चुप होकर ही बैठना पड़ता है ।

किसीको कोसने या उसका बुरा चितारनेसे किसीका कुछ नहीं बिगड़ता है ।

परन्तु विधवा स्त्रियोंको कुछ ऐसा विश्वास होता है और दुनियाँ भी कुछ ऐसा ही कहती है कि दुखियाकी आहमें कुछ ऐसी जबरदस्त शक्ति है, जिससे धरती फट जाय और आकाशके टुकड़े टुकड़े हो जायें । इस कारण ये दुखिया स्त्रियाँ

अपने दुख देनेवालेको खूब कोसती हैं और हृदयसे आगके भभकारे निकाल निकालकर कहती रहती हैं कि जिसने मुझे नुकसान पहुँचाया है और जिसने मेरा कलेजा दुखाया है उस पर मेरा ऐसा शाप पड़े कि वह भी मेरी चीजको सुखसे न भोग सके, राम करे वह कोढ़ी हो जाय, उसकी देहमें कीड़े पड़ जायँ और वह बरसों सड़ सड़कर मरे, उसके घरमें कोई 'नाम लेवा' और 'पानी देवा' भी न रहे, मैंड़ा फिर जाय उसके घर पर, जोहड़ खुद जाय उसके घरकी जगहमें, उसकी जवान जवान बेटियाँ और बेटेकी बहुयें सब राँड हो जायँ और एक एक दानेको तरसती फिरें। इसी तरहकी और बहुतसी धूँआँधार गालियाँ ये विधवा स्त्रियाँ किचकिची खा-खाकर अपने धधकते हुए हृदयसे देती रहती हैं और परम परमात्मा परमेश्वर या अपने किसी अन्य देवीदेवताको भी इस काममें सहायता देनेके वास्ते पुकारती रहती हैं। वे गिड़गिड़ा गिड़गिड़ा कर और आकाशकी तरफ हाथ उठा उठाकर प्रार्थना करती रहती हैं कि हे तीन लोकके नाथ, अगर तेरेमें शक्ति है तो जिन लोगोंने मुझ दुखियाको दुख दिया है और मुझ अभागिनीको सताया है उसका अच्छी तरह सत्यानाश कर दे। हे भगवन्, हे सर्वशक्तिमान्, मैं तेरेसे और कुछ नहीं माँगती, सिर्फ इतना चाहती हूँ कि जितना इन्होंने मुझे दुख दिया है वह सौ सौ गुना होकर इन्हें और हजार हजार गुना होकर इनकी सात पीढ़ियोंको भोगना पड़े।

तो दुखिया रहने क्यों देता ? जरा तो विचारो कि अगर वह परमेश्वर जीवोंके बुरे भले कर्मोंका फल देनेवाला है तो वह तुम्हारे दुख देनेवाले पापीको उसके पाप कर्मोंका फल आप ही नहीं देगा, वह परमेश्वर तुम्हारे कोसने और आह निकालनेकी इन्तजारी ही क्यों देखेगा, और तुम्हारे बार बार कहने और इस बातकी सलाह बतानेकी जरूरत ही क्या रक्खेगा कि हे परमेश्वर इस पापीको यह दुख दे और इसको इस तरह सता। तुम यह भी तो सोचो कि अगर पापीको उसके पाप कर्मोंके मुताबिक फल नहीं मिलता है बल्कि तुम्हारे कोसनेके मुताबिक ही मिलता है तो जिस पापीको तुम किसी वक्त कम कोसती होगी, जिसके वास्ते परमेश्वरसे कम प्रार्थना करती होगी, उसको परमेश्वरके यहाँसे कम दंड मिलता होगा और जिसको तुम ज्यादा कोसती होगी उसको ज्यादा दंड मिलता होगा, और अगर किसी जरूरी काममें फँसे रहनेके कारण तुमको किसी पापीके कोसनेकी फुरसत ही न मिलती होगी तो उसको परमेश्वरके यहाँसे कुछ भी दंड न मिलता होगा। अर्थात् यह तुम्हारे अधिकारमें रहा कि चाहे तुम थोड़ा पाप करनेवालेको ज्यादा कोस कर ज्यादा सजा दिलवा दो, चाहे ज्यादा पाप करनेवालेको थोड़ा कोसकर थोड़ी सजा दिलवा दो और अगर कोसनेमें भूल हो जाय तो उसको कुछ भी दंड न मिले। लेकिन अगर ऐसा होने लगे तो क्या दुनियाभरमें अंधेर न मच जाय ?

मेरी बहनो, इससे तुम समझ गई होगी कि तुम्हारे कोसने और रामजीसे प्रार्थना करनेसे किसीका कुछ नहीं बिगड़ता है, बल्कि तुम्हारे कहे बिना ही पापीको उसके पापकी सजा मिल जाती है। हाँ, तुम्हारे कोसनेसे इतना जरूर होता है कि उसका बुरा चिन्तवन करके तुम भी उसकी तरह पापी बन जाती हो और तुमको भी किसी न किसी तरह इस कोसनेके महापापकी सजा भुगतती पड़ती है। मेरी बहनो, तुम यकीन मानो और निश्चय जानो कि छोटेसे छोटा और बड़ेसे बड़ा, बुरा भला ऐसा कोई भी कर्म नहीं हो सकता है जिसका फल न भोगना पड़े। हाँ, इतनी बात जरूर है कि "आजके पाथे आज ही नहीं जलते हैं।" अर्थात् सब ही कर्मोंका फल तुरंत ही नहीं मिलता है, बल्कि हर एक कर्म अपने अपने वक्त पर ही फल देता है। किसीने कहा भी है–

धीरे मन धीरे रहो, धीरे सब कछु होय,
माली सींचे सौ घड़ा, रुत आयें फल होय।

अर्थात्– जिस प्रकार खेतमें किसी प्रकारके पौधेपर तो तो दो ही महीनेमें फल आ जाता है और किसी पर दस दस बरसके पीछे फल आता है, उसी प्रकार किसी कर्मका जल्दी फल मिलता है और किसीका देरमें, लेकिन खाली कोई नहीं जाता है। 'जैसी करनी वैसी भरनी' का ऐसा अटल सिद्धान्त है कि इसमें बाल बराबर भी फरक नहीं आ सकता है।

इस वास्ते जिसने तुम्हें दुख दिया है, जिसने तुम्हें कमजोर और लाचार देखकर तुम्हारा हक छीना है, जो तुम पर जबरदस्ती करता है, या जिसने तुम्हारा माल मार लिया है, या जो तुम्हें दबाना और सताना चाहता है उसको भी उसके पापकर्मोंका फल मिलेगा और अगर तुमने भी उसका बुरा विचारा है और उसको कोसा पीटा है तो तुमको भी इन बुरे परिणामोंकी सजा मिले बिना न रहेगी।

प्यारी बहनो, इस मौके पर बेशक तुम यह कहोगी कि किसीका बुरा चितारने और कोसनेसे अपने भाव तो बेशक बिगड़ते ही होंगे और कुछ न कुछ पाप भी जरूर लगता ही होगा, पर जो कोई किसीका हृदय कलपावे और जी दुखावे उसके वास्ते तो मनमें बुरा ही विचार आवेगा, और मुँहसे भी उसके वास्ते तो बुरा ही बोल निकलेगा। भला जिसका कोई कलेजा निकालकर ले जावे उसके मनमें उस कसाईके वास्ते अच्छा विचार कैसे आवे। जब यही लोग कसाईसे भी ज्यादा हत्यारे बनकर हम जैसी दुखियाओंको भी सताते हैं तो हम भी ऐसा हृदय कहाँसे लावें जिसमें फिर भी उनके वास्ते भलाई ही उपजे और बुराई न उठ सके। मेरी बहनो, इस मौके पर तुम्हारा ऐसा खयाल होना, और ऐसा शुद्ध हृदय बना लेनेको असम्भव समझना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है। क्योंकि अभी तुमने इसका कुछ भी अभ्यास नहीं किया है; परन्तु यकीन मानो और निश्चय जानो कि अगर तुम धीरे धीरे इसका अभ्यास करती रहोगी,

अपने वैरी दुश्मनका भी बुरा नहीं चितारोगी और सबका ही भला चाहती रहोगी, तो थोड़े ही दिनोंमें तुम्हारा हृदय आइनेके समान ऐसा निर्मल और पवित्र हो जावेगा कि फिर उसमें किसीकी बुराईका भाव ही नहीं आ सकेगा। और तब बेशक तुमको सब जगह और सब अवस्थाओंमें आनन्द ही आनन्द नजर आने लगेगा। इस वक्त सबसे ज्यादा मुश्किलकी बात तो यह हो रही है कि तुम्हारा मन ही काबूमें नहीं है, वह तुम्हारा कुछ भी कहा नहीं मानता है और तुमको ही अपने रास्ते पर चलाना चाहता है; उसको तो खोटे ही खोटे विचार करनेका अभ्यास है। इस वास्ते एकदम बुरे विचार आने तुम्हारे मनसे नहीं छूट सकते हैं और न एकदम यह बात हो सकती है कि तुम्हारे मनमें भले ही विचार आया करें। हाँ, धीरे धीरे अभ्यास करनेसे और हरवक्त खयाल रखने और मनको टोकते रहनेसे जब तुम्हारा मन तुम्हारे काबूमें आ जावेगा तब सब कुछ होने लगेगा, और तभी तुमको सच्चा आनन्द भी प्राप्त हो जावेगा।

देखो, तुम सदा इस बातका खयाल रक्खो कि कमबख्त यहीं है, जो पाप कर्म उपजाता है और पापकर्म पैदा होते हैं किसीको दुख देने, सताने, तड़पाने या किसीका बुरा चितारनेसे। इस वास्ते जो तुमको सताता है वह भी पापकर्म बाँधता है और अगर तुम उसका बुरा चाहती हो तो तुम भी

हाकिमोंको दंड तजवीज करते वक्त ऐसा भी खयाल करना पड़ जाता है कि दंड ऐसा देना चाहिए जिससे और लोगोंके भी कान खड़े हो जावें और वे भी अपराध करनेसे बचे रहें। देखो, मां बाप भी अपनी औलादको और गुरु भी अपने चेलोंको सजा देते हैं, लेकिन ये लोग नुकसान पहुँचाने या बदला लेनेकी नियतसे सजा नहीं देते, बल्कि बालकको सुधारनेकी ही नियतसे सजा देते हैं, जिससे वह फिर उलटे उलटे काम न करे। बालक चाहे कोई भारीसे भारी भी कुसूर कर दे और मां बाप चाहे उसको कड़ीसे कड़ी सजा भी दें, लेकिन उनके हृदयमें उस बालकके साथ किसी प्रकारका वैरभाव पैदा नहीं हो जाता है और न वह बालकका किसी किसमका नुकसान ही चाहने लगते हैं, बल्कि बालकसे कोई भारी अपराध हो जाने पर भी वे बालकका भला ही चाहते रहते हैं और उसको दण्ड भी उसकी भलाईके ही वास्ते देते हैं।

इसी प्रकार मेरी बहनो, तुम भी अपने किसी अपराधीका बुरा मत चितारो, बल्कि जो तुमको नुकसान पहुँचावे या किसी प्रकारका दुख दे, तुम अपने हृदयसे उसकी भी भलाई चाहती रहो, और किसीसे भी वैरभाव मत रक्खो। और अगर कोई ऐसा ही सिर बाहरा हो गया है कि बिना सजा पाये, उसकी अक्ल ही ठिकाने नहीं आ सकती है, या उसकी देखादेखी औरोंकी आदत बिगड़ती है, तो बेशक उसको सजा

दिलानेकी कोशिश करो। लेकिन ऐसी कोशिश करते हुए भी उसका बुरा मत चितारो, बल्कि यह ही चाहती रहो कि किसी न किसी तरह उसकी अक्ल ठिकाने आकर उससे यह ऐब छूट जावे और वह नेक रास्ते पर लग जावे।

कोसना और गाली देना बहुत बुरा है।

मेरी बहनो, आज कलकी स्त्रियोंमें कुछ ऐसी बुरी आदत पड़ गई है और यह उनका एक स्वभाव सा हो गया है कि वे जरा जरा सी बात पर, एक तिनका भर चीज पर और एक एक कौड़ीके नुकसान पर भी चटाचट कोसने लग जाती हैं। चाहे जिसके बेटा-बेटी बहन-भाईयोंको कोस डालती हैं, हत्यारों जैसी बातें मुँहसे निकालने लग जाती हैं, और ऐसा करती हुई जरा भी नहीं लजाती हैं। बल्कि हुमर-हुमर कर, आगे बढ़-बढ़ कर और हाथ उठा-उठाकर ज्यादा ज्यादा बकती हैं और अपने मुँहको तथा सुननवालेके कानोंको गंदा करती रहती हैं और ख्वामख्वाह पापकी गठड़ी बाँधकर अपनी उज्ज्वल आत्मा पर स्याही-का पोता फेरती रहती हैं। प्यारी बहनो, तुम इन औरतोंकी आदत मत सीखो और तुम उनकी रीस मत करो। क्यों कि तुमको तो अपने पापोंका नाश करके और अपनी आत्मा-को सुधारकर संसाररूपी समुद्रसे बाहर निकालना है। इस वास्ते अगर पहलेसे तुम्हारी आदत भी कोसने और गाली देनेकी पड़ रही हो, तो तुम बहुत जल्द अपनी आदतको ठीक

महान् दुख भोग लिया है; तुम तो दुखोंकी अच्छी तरह जानकार हो, इस कारण तुम्हारा हृदय तो दुखका नाम सुनकर ही काँप जाना चाहिए। फिर तुम्हारे हृदयमें तो किसीके वास्ते बुरा खयाल आना और तुम्हारे मुखसे किसीके वास्ते गालीका वचन निकलना तो बहुत ही आश्चर्यकी बात है। तुम्हारे चोट खाये हृदयमें तो किसीके वास्ते बुरा विचार आना असम्भवसा ही मालूम होता है। परन्तु जब तुम्हारे ही मुखसे दूसरोंको कोसते हुए और भारी भारी गालियाँ देते हुए सुनते हैं तो अचंभा होता है कि, इन औरतोंका कैसे वज्रका हृदय है कि विधवा बन जानेपर भी नरम नहीं हुआ और इतने दुख उठाकर भी दुःखोंसे भीत नहीं हुआ। इस वास्ते मेरी विधवा बहनो, तुम तो एकदम गाली देना और कोसना त्याग दो और सदा यही भावना रक्खो कि कभी किसीको भी किसी प्रकारका दुःख प्राप्त न हो, सदा सबको सुख ही प्राप्त होता रहे। ऐसी भावना रखनेसे हृदय शुद्ध होता है और पुण्यकी प्राप्ति होती है। क्योंकि दया ही धर्मका मूल है और पराया उपकार करना ही पुण्य प्राप्तिका कारण है।

बच्चोंको शिक्षा देनी महान् परोपकार है!

मेरी बहनो, इस पुस्तकको यहाँ तक पढ़कर तुम सोचती होगी कि यह बात तो हम पंहलेसे ही सुनती आ रही हैं और खुद भी जानती हैं कि दया ही धर्म है और पराया भला करना

ही पुण्य है; पर एक तो हम औरत जात होनेके कारण किसीका क्या उपकार कर सकती हैं और दूसरे हम तो विधवा होकर आप ही अपाहजोंकी तरह दिन काट रहीं हैं, तब हमसे किसीका क्या उपकार हो सकता है ? हम बेचारी क्या तो किसीका उपकार करें और क्या पुण्य कमावें ? हमसे तो कुछ भी नहीं हो सकता है। परन्तु मेरी विधवा बहनो, तुम घबराओ मत, हम तुमको परोपकारके इतने काम बतावेंगे कि तुम उनको करती करती थक जाओगी, पर काम खतम न होंगे। और वे सब काम भी हम तुमको ऐसे ही बतावेंगे जो विधवाओंके ही करने योग्य हों और उनहींसे हो सकते हों।

मेरी विधवा बहनो, दुनियाके वास्ते चाहे तुम लाख अयोग्य हो गई हो और चाहे दुनियाके वास्ते तुम बिल्कुल ही मनहूस समझी जाती हो, लेकिन धर्मसाधनके वास्ते तुम अपनेको न तो अपाहिज समझो और न अयोग्य ही मानो; बल्कि सच तो यह है कि सच्चा धर्मसाधन तुमहीसे हो सकता है अगर तुम करना चाहो, और परोपकार भी तुमसे ही बन सकता है और तुम हौसलेके साथ तय्यार हो जाओ। सधवायें बेचारी तो घर-गिरिस्तीके ही कामकी हैं। उनके लिए तो पूरी तरह धर्मसाधन भी मुश्किल है और परोपकार भी असम्भवसा है। इस वास्ते विधवापनेका खयाल करके तुम अपने मनको मत गिराओ, बल्कि हिम्मत करके हमारे लिखे अनुसार परोपकारके कामोंमें लग जाओ और अपार पुण्य कमाओ, जिससे आगेको तुम्हें

जन्म जन्ममें सुख ही सुख मिलता रहे और फिर तुम दुखका नाम भी न सुनो।

मेरी बहनो, तुम्हारे लिए सबसे उत्तम और घर बैठेका परोपकार यह है कि तुम अपने घर पर एक पाठशाला खोल दो और उसमें अपने अड़ोस-पड़ोस और गली-मुहल्लेके सब बच्चे इकट्ठे करो। घबराओ मत। अगर तुम ऐसी पढ़ी लिखी नहीं हो कि पुस्तक पढ़ा सको तो कुछ परवाह मत करो! हम तुमको ऐसी तरकीब बतावेंगे कि अगर तुम एक अक्षर भी न जानती हो और बिल्कुल ही अनपढ़ हो, तब भी तुम्हारी पाठशाला चल जावे, तुम गाँव भरमें साक्षात् देवी मानी जाने लगो और तुम्हारी पूजा होने लगे। तमाशा यह है कि तुम्हारी पाठशालामें खर्च भी एक कौड़ीका नहीं होगा, और न कोई दूसरी पढ़ानेवाली बुलानी पड़ेगी; बल्कि बिना पढ़ी हुई होने पर भी तुम ही अकेली पढ़ाओगी और नन्हें नन्हें बच्चोंको ऐसा विद्वान् बनाओगी कि सब ही देखकर अचम्भा मानें और तुम्हारे गुण गावें। याद रक्खो कि देवता वही है, जो दूसरोंके उपकारमें अपना जीवन बिताता है और दूसरोंकी सेवामें अपना तन मन लगाता है। नहीं तो अपना पेट तो कुत्ता भी भर लेता है। संसारमें जितने देवता हुए हैं, सब परोपकार करनेसे ही देवता माने गये हैं और आगेको भी वे ही देवता माने जावेंगे, जो परोपकार करेंगे, अपनेको तुच्छ समझकर दूसरोंकी भलाईमें और दूसरोंकी सेवा-

टहलमें ही अपने शरीरको लगावेंगे और दूसरोंकी भलाईके वास्ते सब प्रकारकी शारीरिक तकलीफें उठावेंगे।

मेरी बहनो, अगर तुम अच्छी लिखी पढ़ी हो और विदुषी हो, तब तो तुम अपनी पाठशालामें बड़ी बड़ी स्त्रियोंको भी बुलाओ और उनको भी पढ़ाओ; परन्तु उनके आनेका कोई समय मत बाँधो। क्यों कि घर गिरस्तिनोंको और बाल-बच्चे-बालियोंको बँधे समय पर आना बहुत कठिन होता है। इस वास्ते वक्त बे-वक्त अबेर-सबेर जब भी जो स्त्री आवे उसको सौ काम छोड़कर उसी वक्त पढ़ाओ, जिससे उसको एक पलभर इन्तजारीमें न बैठना पड़े और उसके कामका हर्ज न हो। बर्ताव भी सदा उनके साथ ऐसा ही रक्खो, जिससे उनको यह खयाल न हो कि पढ़नेके वास्ते आनेके कारण हम तो नीची हो गई हैं और यह पढ़ानेवाली ऊँची बन गई है, बल्कि उनसे सदा ऐसी हँसी चुहल और मेलजोल रक्खो, जिससे उनका जी ख्वामख्वाह भी तुम्हारे पास आनेको चाहे और छुटाई बड़ाईका ख्याल भी पैदा न होने पावे।

अगर तुम विदुषी हो और अच्छी तरह पढ़ाना जानती हो, तो अपने गाँवकी ब्याही और बिनब्याही बड़ी बड़ी लड़कियोंको भी अपनी पाठशालामें बुलाओ और उनको खूब जी लगाकर पढ़ाओ। गिरस्तिन स्त्रियोंकी ये बड़ी लड़कियाँ तुम्हारे पास ज्यादा देर तक ठहर सकती हैं, लेकिन समयका बंधान इनसे भी नहीं हो सकता। क्योंकि

इनको घरके अनेक धंधे सीखना और अपनी माँ भावजोंको घरके कामोंमें मदद देना भी जरूरी है। इस वास्ते इनको भी घरके कामोंमें उसी तरह लगा रहना पड़ता है, जिस तरह घर गिरस्तिनोंको। इस कारण इनके आने जानेके नियम बनाओ तो जरूर, लेकिन ऐसे आसान और ऐसे ढीले बनाओ कि तुमको तो चाहे कितनी ही तकलीफ उठानी पड़े, पर इनको तुम्हारे पास आनेमें दिक्कत न हो। और इनको भी तुम ऐसे प्यार मुहब्बतसे पढ़ाओ और इनके साथ भी ऐसा हँसी खेलका सम्बन्ध रक्खो कि इनको भी तुम्हारी पाठशालामें पढ़ना एक प्रकारका खेल और दिलबहलावा ही मालूम हो। और इन बड़ी लड़कियोंके सामने तुम हरगिज भी बहुत गम्भीर और बड़ी बूढ़ी बनकर मत बैठ जाओ, जिससे ये तुम्हारे पास ज्यादा देरतक बैठनेमें घबराने लगें और इनका जी उचाट हो जावे। इनके साथ बेशक इतनी तो मत खुलो जिससे तुम भी छिछोरी ही बन जाओ, लेकिन इतनी जरूर खुल जाओ जिससे ये बेधड़क अपने दिलकी बात तुमसे कह सकें और हँसी खुशी मना सकें।

थोड़ी पढ़ी हुई विधवायें अपनी पाठशाला कैसे चलावें ?

प्यारी बहनो, चाहे तुम विदुषी हो चाहे नहीं, लेकिन अगर तुम थोड़ासा भी पढ़ना लिखना जानती हो तो तुम्हारी पाठशालामें ऐसी भी कन्यायें जरूर आनी

चाहिए जो अभी अक्षर ही सीखती हैं और सिर्फ कन्यायें ही नहीं, बल्कि सात आठ वरससे कम उमरके बालक भी आने चाहिए और इन सब लड़के लड़कियोंके आनेका ऐसा समय मुकर्रिर कर देना चाहिए, जिससे इनको दिक्कत न हो। ये बच्चे तुम्हारे पास सारा दिन ठहर सकते हैं, क्योंकि इनको खेलने और खानेके सिवाय और कोई काम ही नहीं होता है। इस वास्ते इनका तुम ऐसा बंदोबस्त कर दो, जिससे ये तुम्हारे पास ही पढ़ें और तुम्हारे पास ही खेलें। तुम्हारे पास ही इनके खेलनेसे यह फायदा होगा कि न तो ये बुरे बुरे खेल खेल सकेंगे, न बुरे बालकोंकी संगतिहीमें रहेंगे और न लड़ना भिड़ना, गाली गलौज देना और कोसना कुसवाना ही सीखेंगे। बल्कि अच्छे अच्छे खेल खेलकर अपना दिल भी बहलाते रहेंगे और आपसमें मिल जुल कर रहना, प्यार मुहब्बत रखना, एक दूसरेकी सहायता करना, खेलमें भी सचाई और ईमानदारी वर्तना आदि अनेक अच्छी अच्छी आदतें भी सीखते रहेंगे। और पढ़ानेका इनके यह प्रबन्ध हो सकता है कि अव्वल तो इनको भी तुम ही पढ़ाओ और अगर तुम बहुत पढ़ी लिखी हो इस कारण स्त्रियों और बड़ी लड़कियोंके पढ़ानेमें ही तुम्हारा सारा समय लग जाता है, तो पाठ तो इनको बड़ी लड़कियोंसे दिलवा दो, परन्तु याद कर लेने पर उनके पाठको सुन लिया करो खुद, जिससे उनका हौसला बढ़ता रहे।

इनको घरके अनेक धंधे सीखना और अपनी माँ भावजोंको घरके कामोंमें मदद देना भी जरूरी है। इस वास्ते इनको भी घरके कामोंमें उसी तरह लगा रहना पड़ता है, जिस तरह घर गिरस्तिनोंको। इस कारण इनके आने जानेके नियम बनाओ तो जरूर, लेकिन ऐसे आसान और ऐसे ढीले बनाओ कि तुमको तो चाहे कितनी ही तकलीफ उठानी पड़े, पर इनको तुम्हारे पास आनेमें दिक्कत न हो। और इनको भी तुम ऐसे प्यार मुहब्बतसे पढ़ाओ और इनके साथ भी ऐसा हँसी खेलका सम्बन्ध रक्खो कि इनको भी तुम्हारी पाठशालामें पढ़ना एक प्रकारका खेल और दिलबहलावा ही मालूम हो। और इन बड़ी लड़कियोंके सामने तुम हरगिज भी बहुत गम्भीर और बड़ी बूढ़ी बनकर मत बैठ जाओ, जिससे ये तुम्हारे पास ज्यादा देरतक बैठनेमें घबराने लगें और इनका जी उचाट हो जावे। इनके साथ बेशक इतनी तो मत खुलो जिससे तुम भी छिछोरी ही बन जाओ, लेकिन इतनी जरूर खुल जाओ जिससे ये बेधड़क अपने दिलकी बात तुमसे कह-सकें और हँसी खुशी मना सकें।

थोड़ी पढ़ी हुई विधवायें अपनी पाठशाला कैसे चलावें ?

प्यारी बहनो, चाहे तुम विदुषी हो चाहे नहीं, लेकिन अगर तुम थोड़ासा भी पढ़ना लिखना जानती हो तो तुम्हारी पाठशालामें ऐसी भी कन्यायें जरूर आनी

सात बच्चे मिल भी जरूर सकते हैं; और ऐसे ही बच्चोंकी पाठशाला अलग अलग सब ही विधवाओंके घर पर बड़ी आसानीसे बैठ भी सकती है। हाँ ऐसी पाठशालाके जारी करनेमें इस बातका खयाल बिल्कुल नहीं होना चाहिए कि वे बच्चे अमीरके हैं या गरीबके और ऊँच जातिके हैं या नीचके; क्योंकि तुम्हें इनसे कुछ लेना थोड़ा ही है जो तुम ऐसी बातें ढूँढो, तुम्हें तो पराया उपकार करना है। इस वास्ते तुम्हारी तरफसे कोई हो, तुम्हें तो सभी एक समान हैं।

इन बच्चोंके साथ मगज मार-मारकर और एक एक बोलको सौ सौ दफे कहकर और इनकी तोतली जबानको तोड़कर तुम इनको बोलना सिखाओ, खेलने कूदने और बैठने उठनेकी तमीज बताओ, बात बात पर लड़ पड़ने, जिद्द करने, रोने और कहना न माननेकी जो जो बुरी आदतें माँ-बापके लाड़के कारण इनमें पड़ गई हों वे सब आदतें कोशिश करके इनसे छुड़ाओ और नई नई बातें बताकर उनकी अक्लको बढ़ाओ। दुनियाकी चीजोंको देखकर बच्चोंमें यह पूछनेकी आदत बहुत होती है कि यह क्या है और क्यों है। इस प्रकार पूछनेमें ये बच्चे बिल्कुल नहीं थकते हैं, बल्कि ऊपरवाले ही जवाब देते देते थक जाते हैं। माँ बापको इतनी फुर्सत कहाँ जो बच्चोंके साथ इस प्रकार दिन भर मगज मारते रहें और उनकी सब बातोंका जवाब देते रहें। इस वास्ते गृहस्थ लोग तो उनकी एक आध बातका जवाब देकर

फिर उनको झिड़ककर ही बन्द कर देते हैं और अगर बच्चा झिड़कने पर भी बन्द नहीं होता है तो अटकलपच्चू जवाब देने लगते हैं। इस वास्ते इन बच्चोंकी बुद्धि जल्दी नहीं बढ़ने पाती है। अगर इन बच्चोंको उनकी सब बातोंका जवाब ठीक ठीक मिलता रहे तो उनकी बुद्धि बहुत जल्द बढ़ सकती है, और फिर आगे वे बच्चे बहुत विद्या हासिल कर सकते हैं, और बहुत ऊँचे चढ़ सकते हैं।

विधवा बहनो, अगर तुममेंसे एक एक विधवा इस प्रकार किसी एक एक बालकका भी उपकार कर दे, तो तुम ही सोचो कि दुनियाका कितना उपकार होजावे। क्योंकि तुम्हारे सधाये हुए ये बालक बड़े होकर जरूर बहुत बड़े बुद्धिमान् बनेंगे और अनेक प्रकारसे दुनियाका उपकार करेंगे। और तुम तो एक एक बालकको क्या, अगर हिम्मत करो तो इस तरह इकट्ठा आठ आठ दस दस बालकोंको सधा सकती हो और जगतका बड़ा भारी उपकार कर सकती हो। मेरी बहनो, अब तुम ही अपने मनमें सोचो कि जो विधवा अपने गली-मुहल्लेके ऐसे छोटे छोटे आठ दस बालकोंको घेरकर दिन भर उनके साथ मगज मारे, बच्चोंकी तरह उनके साथ खेले, माताकी तरह उनके सब कष्ट सहे, हजार मुसीबतें उठाकर उनको सब तरह राजी रखनेकी कोशिश करती रहे, उनका नाक पोंछना, टट्टी उठाना, पेशाब धोना आदि गलीज काम करती रहे और जरा

भी घिन न माने, तो क्या वह जगतमाता और साक्षात् देवी नहीं है। बेशक वह सचमुचकी देवी और नित्य ही दर्शन करने और पूजन करनेके योग्य है। बेशक सब लोग उसकी पूजा करेंगे और अगर उसके जीतेजी उसकी पूजा नहीं होगी तो मरे पीछे तो जरूर ही लोग उनकी मूर्ति बनाकर पूजेंगे, और उसके नाम पर जय-जयकार करेंगे।

विधवा बहनो, हिन्दुस्तानके गृहस्थ लोगोंको आजकल बात बातमें झूठ बोलनेकी आदत हो रही है और मर्दोंको तो बातबातमें गंदी गालियाँ बकनेका और स्त्रियोंको बात बातमें कोसनेका बड़ा भारी अभ्यास पड़ रहा है। इस वास्ते ये लोग अपने बच्चोंके सामने भी झूठ बोलते रहते हैं, गंदी गंदी गालियाँ देते रहते हैं और बुरी तरह कोसते पीटते रहते हैं। उनके बच्चे उनकी ये सब बातें देखते और खुद भी इसी प्रकार बकना सीख जाते हैं। इसी वास्ते इस अभागे हिन्दुस्तानकी उन्नति किसी तरह भी नहीं होने पाती है। बल्कि आजकल तो इस हिन्दुस्तानके लोग यहाँ तक नीचे गिरे हुए हैं कि खुद अपने बच्चोंके साथ भी झूठ बोलते हैं, बात बातमें उनसे फरेब करते हैं, और उनको झूठ-मूठ बहकाते रहते हैं जिससे बालक झूठ बोलनेमें खूब ही पक्के हो जाते हैं, और सिर्फ यही नहीं बल्कि आजकलके मर्द तो अपने छोटे छोटे बालकोंको भी गंदी गंदी गालियाँ देते रहते हैं और आजकलकी स्त्रियाँ अपनी

नन्हीं नन्हीं सन्तानको भी बातबातमें बुरी तरह कोसती रहती हैं जिससे इन बच्चोंके कोमल हृदय बिल्कुल गंदे और कठोर बनते रहते हैं, और इनकी बोली और विचार भी गंदे ही बनते रहते हैं। इस कारण जवान होने पर शास्त्रोंके उपदेश और बड़ोंकी नसीहतका इन पर कुछ भी असर नहीं होता है, और बचपनके समयका बड़ा हुआ बिगाड़ फिर आगे जाकर दूर होना असम्भव ही हो जाता है। यही कारण है कि यह हिन्दुस्तान दिन पर दिन नीचेको ही गिरता चला जाता है और इसमें कुछ भी उन्नति होने पाती है। इस हेतु इस समय इस हिन्दुस्तानके सुधारका इसके सिवाय और कोई उपाय ही नहीं है कि सब विधवा स्त्रियाँ अपने अपने घरों पर पाठशाला खोलें और दो वर्षकी उमरसे लेकर पाँचवर्ष तककी उमरके बच्चोंको सिवाय खाना खाने और रातको जाकर सो रहनेसे और किसी समयमें उनके माता पिता की संगतिमें न रहने दें, और सो दुःख उठाकर दिनभर उनको शिक्षा दें। यह कार्य जैसा जरूरी, वैसा पवित्र और जितना लाभदायक है, उतना और कोई कार्य हो ही नहीं सकता है। इस वास्ते धन्य है उन विधवाओंको जो ऐसे उत्तम कार्यको शुरू करके अपने जन्मको सफल करें और इस दुनियामें भी जस लें तथा आगेको भी जस पावें।

विधवा बहनो, अगर तुम्हें अपना आगन्त सुधारना है तो हिम्मत करो और पाँच सात दस जितने भी बच्चे तुमसे सँभल सकें,

उनको इकट्ठा करके उनके साथ सारा दिन बच्चोंकी तरह खेलो और हर वक्त सच्ची ही सच्ची बातें करके और मनोहर ही बोल अपने मुखसे निकाल कर उनको बहुत नेक और सच्चा आदमी बनाओ जिससे फिर आगेकी दुनिया बिल्कुल भली और धर्मातमा हो जावे। मेरी बहनों, जरा सोचो तो सही कि क्या इससे बढ़िया कोई तप और क्या इससे भी ज्यादा ऊँचे दर्जेका धर्म साधन हो सकता है ? नहीं, कदापि नहीं । यह सबसे बढ़िया तप और सबसे ऊँचे दर्जेका धर्मसाधन है। इस वास्ते अगर ऐसा काम करनेमें तुम्हारे अन्य धर्मसाधनोंमें कुछ हर्ज भी पड़े तो तुम उसकी कुछ परवाह मत करो, और जिस तरह बन पड़े इस कामको ऐसी उत्तम विधिसे करके दिखाओ जिससे तुम्हारे सधाये हुए बालक दुनियामें सबसे निराले ही नजर आवें और सभी लोग उनको देखकर अचंभेके साथ कहने लगें कि धन्य इनकी शिक्षा देनेवालीको, जिसने ऐसे ऐसे छोटे बच्चोंमें क्या क्या गुण भर दिये हैं। वह तो जरूर कोई देवीका ही अवतार है और दर्शन करनेके योग्य है। धन्य है। हे माता, धन्य है जो तूने छोटे छोटे बालकोंको भी कुछका कुछ बना दिया है।

बीमारोंकी सेवा करना बहुत बड़ा परोपकार है।

परोपकारकी दूसरी बात तुम्हारे करने योग्य यह है कि जो कोई भी तुम्हारे कुटुम्बमें बीमार हो उसकी टहल सेवाका काम

तुम अपने ही जिम्मे लो। परदेके रिवाजके कारण अगर तुम किसीकी टहल नहीं कर सकती हो तो उसकी तो लाचारी है, नहीं तो तुम्हारे कुटुम्बमें जो कोई भी बीमार हो उसकी टहल तुम अवश्य ही करो। आजकल दुनियामें कुछ ऐसा दस्तूर है कि कमाऊ और दो पैसेवालेकी पूछ तो घरवाले भी करते हैं और बाहरवाले भी। उनको तो कोई मामूलीसी तकलीफ हो जाने पर भी सारा घर सेवाके वास्ते खड़ा हो जाता है और बाहरके लोग भी हाल पूछनेको आने लगते हैं। लेकिन घरमें ऐसे भी बहुतसे स्त्री-पुरुष होते हैं जिनको भारीसे भारी बीमारी हो जाने पर भी कोई नहीं पूछता कि वे कहाँ पड़े हैं और उनका क्या हाल है। लेकिन तुम मेरी बहनो, इस प्रकारका कोई भेदभाव अपने मनमें मत रक्खो, बल्कि ऐसों की टहल करना अपने ऊपर सबसे ही ज्यादा जरूरी समझो जिनको और कोई नहीं पूछता है।

मेरी बहनो, यह बात तुम भली भाँति जानती हो कि बीमारकी टहल करना बहुत ही मुश्किल काम है। क्यों कि बीमारकी टहलमें पित्ता मारकर बीमारके पास चुपचाप रात-दिन बैठा रहना पड़ता है, बीमारके सौ नखरे और सौ झिड़कियाँ सहनी होती हैं, घड़ी घड़ी उठना बैठना पड़ता है, रातों जागना होता है, उसका पाखाना पेशाब थूक कफ उठाना पड़ता है, उसके मैले कपड़े, फोड़े फुनसियाँ, जखमोंका खून और राध धोनी होती है, उसके मैले कुचैले

गंदे कपड़ोंकी, उसके शरीरकी और साँसकी दुर्गंध सहनी होती है और उड़ कर लगजानेवाली बीमारियोंकी भी कुछ परवाह नहीं करनी होती है। अब तुम ही विचारो कि बीमारकी टहल क्या उन स्त्रियों और पुरुषोंको करनी चाहिए जो दुनियाके अनेक प्रकारके भोगोंमें लगे हुए हैं, जो अपने आनन्दमें मग्न हैं और जिन्होंने अपना मिजाज बहुत ही नाज़ुक और फूलकी तरह बहुत कोमल बना रक्खा है, या तुम जैसी विधवा स्त्रियोंको करनी चाहिए जिन्होंने सर्व प्रकारका कष्ट उठाकर भी दूसरोंकी टहल करना अपना परम कर्तव्य समझ रक्खा है और जो दूसरोंकी सेवामें लगी रहनेसे ही अपना जन्म सफल मानती हैं।

विधवा बहनो, सच तो यह है कि दुनियाकी मौज उड़ाते हुए और अपनी ऐश अशरतमें लगे हुए गृहस्थोंको तो अपने बेटी-बेटोंकी बीमारीकी टहल करना भी वबाल ही मालूम होता है। पर जो धर्मात्मा लोग पराई सेवा करना ही परम धर्म समझते हैं और जिनको अपने कर्मोंके नाश करने और पुण्य प्राप्त करनेकी फिकर है वे गैरसे गैरकी टहलकरनेमें भी आनन्द मानते हैं, हाड़-मांससे बने हुए, खून राध थूक सिनक मल-मूत्र आदिसे भरे हुए और ऊपरसे चमड़ा लिपटे हुए महा अपवित्र महा अशुद्ध अपने इस शरीरको पराये उपकारमें लगे रहनेसे ही कुछ कामका समझते हैं और बीमारोंका मैला साफ करने, उनकी गंदगी धोने और उनकी सर्व प्रकारकी टहल सेवा

करनेसे अपने पापोंका नाश होना और इसी कारण इस टहल-सेवाके द्वारा अपने महा अपवित्र शरीरका पवित्र हो जाना भी मानते हैं। इसवास्ते विधवा बहनो, तुम भी अपने इस महा अपवित्र शरीरसे परोपकारका ही काम लो, पराई टहलमें लगे रहनेसे ही इस शरीरको कुछ कार्यकारी और पवित्र समझो और जिस शरीरसे परोपकार न होता हो, जो दूसरोंकी टहल-सेवामें काम न आता हो उस शरीरको अति घिनावना एक मांसका लोथड़ा समझो जो हजार बार धोने माँजनेसे भी पवित्र नहीं हो सकता है।

विधवा बहनो, परोपकारके इस कार्य्यमें तुम कभी इस बातका खयाल मत करना कि जो लोग हमारे काम नहीं आते और जिनसे इतना भी नहीं हो सकता कि हमारे बीमार पड़ने पर घड़ेसे पानी ही ओज कर दे दें, उनकी बीमारीमें हम भी क्यों उनकी टहल करें। क्योंकि अगर तुम उनहींके काम आना चाहती हो जो तुम्हारे काम आवे, तो यह तो परोपकार न हुआ बल्कि अदला बदला हो गया। परोपकार तो तब ही हो जब तुम ऐसोंकी भी टहल करो जो तुम्हारे काम तो क्या आते हों बल्कि उलटा तुमको नुकसान पहुँचाते हों और कष्ट देते हों।

दूसरी बात इस टहल-सेवाके काममें यह भी ध्यान रखनेके लायक है कि जिनकी तुम टहल करो उनको यह मालूम न हो कि तुम उन पर कोई एहसान कर रही हो, बल्कि अपना

कुछ ऐसा वर्ताव रक्खो, जिससे उनको यह खयाल हो जावे कि यह कुछ हमारे ही काम नहीं आ रही है बल्कि बीमारोंकी टहल करनेका तो इसका कुछ स्वभाव सा ही पड़ गया है। इसके सिवाय अगर वे लोग जिनकी बीमारीमें तुमने बड़ी भारी टहल की हो, कभी तुम्हारी जरूरतमें भी तुम्हारे काम न आवें, बल्कि अपना काम निकलने पीछे तुम्हारी शक्ल देखनेके भी रवादार न रहें, तो भी अपने मनमें बुरा मत मानो। क्योंकि तुमने तो बदला लेनेके वास्ते उनकी टहल नहीं की थी, बल्कि अपना धर्म समझकर की थी।

विधवा बहनो, आज कल हिन्दुस्तानकी स्त्रियाँ बहुत ही ज्यादा कठोरहृदय और मूर्ख हो रही हैं। उन्हें दूसरोंको रुलाने और तड़पानेमें बहुत खुशी होती है। इसी कारण वे बीमारसे या बीमारकी टहल करनेवालोंसे बड़ी करुणाभरी बातें करती हैं और जो जो भी दुःख उस बीमारका हो रहा है उसको खूब बखान करके और उसके बीमार पड़ जानेसे घर भरको जो-जो नुकसान हो रहा है उसको सब एक एक करके गिनवा कर और यह बात खूब अच्छी तरह जताकर कि घर भरके लिए उस बीमारका जीता रहना कितना जरूरी है और परमेश्वर न करे अगर वह चल बसा तो सारे ही घर पर कैसी भारी मुसीबत आ पड़ेगी, इसका एक बहुत डरावना दृश्य दिखाकर और आखिरमें उसके जल्दी अच्छा हो जानेके वास्ते बार बार भगवानसे प्रार्थना करके सुननेवालोंको रुलाये विना नहीं छोड़ती

करनेसे अपने पापोंका नाश होना और इसी कारण इस टहल-सेवाके द्वारा अपने महा अपवित्र शरीरका पवित्र हो जाना भी मानते हैं। इसवास्ते विधवा बहनो, तुम भी अपने इस महा अपवित्र शरीरसे परोपकारका ही काम लो, पराई टहलमें लगे रहनेसे ही इस शरीरको कुछ कार्यकारी और पवित्र समझो और जिस शरीरसे परोपकार न होता हो, जो दूसरोंकी टहल-सेवामें काम न आता हो उस शरीरको अति घिनावना एक मांसका लोथड़ा समझो जो हजार बार धोने माँजनेसे भी पवित्र नहीं हो सकता है।

विधवा बहनो, परोपकारके इस कार्य्यमें तुम कभी इस बातका खयाल मत करना कि जो लोग हमारे काम नहीं आते और जिनसे इतना भी नहीं हो सकता कि हमारे बीमार पड़ने पर घड़ेसे पानी ही ओज कर दे दें, उनकी बीमारीमें हम भी क्यों उनकी टहल करें। क्योंकि अगर तुम उनहीके काम आना चाहती हो जो तुम्हारे काम आवे, तो यह तो परोपकार न हुआ बल्कि अदला बदला हो गया। परोपकार तो तब ही हो जब तुम ऐसोंकी भी टहल करो जो तुम्हारे काम तो क्या आते हों बल्कि उलटा तुमको नुकसान पहुँचाते हों और कष्ट देते हों।

दूसरी बात इस टहल-सेवाके काममें यह भी ध्यान रखनेके लायक है कि जिनकी तुम टहल करो उनको यह मालूम न हो कि तुम उन पर कोई एहसान कर रही हो, बल्कि अपना

कुछ ऐसा वर्ताव रक्खो, जिससे उनको यह खयाल हो जावे कि यह कुछ हमारे ही काम नहीं आ रही है बल्कि बीमारोंकी टहल करनेका तो इसका कुछ स्वभाव सा ही पड़ गया है । इसके सिवाय अगर वे लोग जिनकी बीमारीमें तुमने बड़ी भारी टहल की हो, कभी तुम्हारी जरूरतमें भी तुम्हारे काम न आवें, बल्कि अपना काम निकलने पीछे तुम्हारी शक्ल देखनेके भी रवादार न रहें, तो भी अपने मनमें बुरा मत मानो । क्योंकि तुमने तो बदला लेनेके वास्ते उनकी टहल नहीं की थी, बल्कि अपना धर्म समझकर की थी ।

विधवा बहनो, आज कल हिन्दुस्तानकी स्त्रियाँ बहुत ही ज्यादा कठोरहृदय और मूर्ख हो रही हैं । उन्हें दूसरोंको रुलाने और तड़पानेमें बहुत खुशी होती है। इसी कारण वे बीमारसे या बीमारकी टहल करनेवालोंसे बड़ी करुणाभरी बातें करती हैं और जो जो भी दुःख उस बीमारका हो रहा है उसको खूब बखान करके और उसके बीमार पड़ जानेसे घर भरको जो-जो नुकसान हो रहा है उसको सब एक एक करके गिनवा कर और यह बात खूब अच्छी तरह जताकर कि घर भरके लिए उस बीमारका जीता रहना कितना जरूरी है और परमेश्वर न करे अगर वह चल बसा तो सारे ही घर पर कैसी भारी मुसीबत आ पड़ेगी, इसका एक बहुत डरावना दृश्य दिखाकर और आखिरमें उसके जल्दी अच्छा हो जानेके वास्ते बार बार भगवानसे प्रार्थना करके सुननेवालोंको रुलाये बिना नहीं छोड़ती

हैं। उनकी ऐसी बातोंसे बीमारको बहुत दुख पहुँचता है, बीमारी बढ़ जाती है और आराम होता होता रुक जाता है।

मेरी बहनो, तुम अपना हृदय ऐसा कठोर मत रखना और सुघड़ भलाई लेनेके वास्ते लोक-दिखावेकी ऐसी बातें तुम हर्गिज भी मत करना। बल्कि बीमारको और उसके घरवालोंको भी सदा तसल्ली ही देते रहना, और हर वक्त हँसी खुशीकी बातें करके उनके हृदयसे बीमारीका खयाल ही भुलाती रहना। अगर कभी कोई घबराहटकी बातें करे भी, तो उसको इधर उधरकी बातोंमें टलाती रहा करना, बीमारको ऐसे बीमारोंकी कहानियाँ सुनाकर जो बहुत ज्यादा ज्यादा बीमार होकर भी अच्छे हो गये हैं धीरज बँधाती रहना, फिकरका खयाल उसके दिलसे दूर करके बीमारी और उसके नुकसानकी भूलभुलैयासी ही कराती रहा करना, इधर उधरकी बातें सुनाकर उसकी बीमारीको एक बहुत ही मामूलीसी बात बनाती रहा करना और बीमारके हरवक्त खुश और बेफिकर रहनेकी ही कोशिश करती रहा करना।

हिन्दुस्तानकी कठोरहृदय स्त्रियाँ आज कल तो ऐसी लोकदिखावेके बस हो रही हैं कि अपने बहुत ही प्यारेके भी बीमार पड़ने पर जहाँ तक उनका बस चलता है उसको अनेक प्रकारका पथ्य कुपथ्य खिलाकर बीमारीका परहेज तुड़वाती रहती हैं और इस प्रकार उसकी बीमारीको बढ़ाती रहती हैं—आराम नहीं होने देतीं। यदि कोई उनको उलाहना देता है कि तुमने

बीमारको ऐसी चीजें क्यों खिला दीं जिससे इसकी बीमारी बढ़ गई, तो बड़ी करुणाभरी बातें बनाकर कहने लगती हैं कि जब दिन भरमें सत्तर प्रकारकी चीजें हमारे खानेमें आती हैं, रात दिन बकरीकी तरह हमारा मुँह चलता रहता है और यह बेचारा मुँह-सियाँ सा पड़ा रहता है, तब मेरा तो जी नहीं रह सकता है कि इसको एक आध चीज चाखनेको भी न मिले। और इस बेचारेको रत्ती भर भूख तो लगती नहीं, रोटीका एक टुकड़ा तक तो इसके हलकके नीचे उतरता नहीं, फिर हमारी ही दी हुई चीज क्या यह कोई सेर दो सेर खा लेगा। जरा जीभ पर रखकर थूक देता है जिससे इसकी जीभको थोड़ासा खट्टे मीठेका स्वाद आकर मनकी भटक मिट जावे। और मुझे क्या ऐसी चीजोंके खिलानेकी कुछ हबिस है ? पर जब इसको बिनाखाये पीये तीन तीन दिन बीत जाते हैं, जब दालके पानी तकका एक घूँट भी मुँहमें नहीं जाता है, तब लाचार होकर ये चीजें देकर देखती हूँ जिससे इसी बहाने-से रत्ती दो रत्ती चीज पेटमें पड़े और कुछ सहारा हो। अन्न-का जीव तो अन्न ही खाकर जीता है। भला जब अन्न ही इसके पेटमें नहीं जावेगा तो फिर उठेगा ही किसके सहारेसे, और ऐसी दशामें अकेली दवा ही क्या सहारा लगा देगी ?

प्यारी बहनो, इन स्त्रियोंकी ये सब बातें बनावटी ही होती हैं। बीमारी घटे या बढ़े, बीमारको दुख भोगना पड़े चाहे सुख, इस बातकी इनको एक रत्ती भर भी परवाह नहीं होती है।

इनको तो सिर्फ इतनी बातका खयाल रहता है कि बीमार भी और दूसरे लोग भी यह समझ लें कि इसको इस बीमारका बड़ा प्यार है और इसके हृदयमें बीमारके वास्ते बड़ी दया और तड़प है । इसी वास्ते ये कठोरहृदय स्त्रियाँ बीमारको उसकी ख्वाहिशके मुताबिक ठंढा गर्म पानी दे देती हैं, उसकी ही इच्छाके अनुसार उसको सर्दी गर्मीमें बिठा देती हैं और इसी प्रकारकी और भी बहुतसी बद-इहतियाती और बद-परहेजियाँ बीमारकी खुशीके मुताबिक कराती रहती हैं, वैद्यकी आज्ञा और रोकटोकका कुछ भी खयाल नहीं करती हैं । क्योंकि इनको तो बीमारके जल्दी आराम हो जानेका ज्यादा खयाल नहीं होता है, बल्कि इनको तो बाहरी दिखावेके द्वारा बीमार पर अपना प्यार सिद्ध कर देनेकी ही ज्यादा चिन्ता रहती है । ये कठोरहृदय स्त्रियाँ अपना झूठा प्यार यहाँ तक दिखाती हैं कि अगर दवा कड़वी कसेली हो और उसके पीनेमें बीमारको मुश्किल पड़ती हो, तो ये दवाका पीना भी टला देती हैं और कहने लगती हैं कि ऐसी तैसीमें जाय यह दवा और दारू, देखो तो कैसा बुरा हाल हो जाता है, इसको पीकर घंटों हों हों करनी पड़ती है, कल तो सच मुच ही कै हो गई थी। इसवास्ते जाने दे मत पी इस वक्त, शामको देखी जावेगी । गरज इस तरहकी बातें बना कर ये औरतें बीमारको चार दफेकी जगह दो ही दफे दवा पीने देती हैं और उसके जल्दी आराम हो जानेमें हर्ज डालती रहती हैं ।

आज कलकी स्त्रियाँ यहाँतक कठोर होती हैं कि अगर दूसरे गाँवका कोई इनका रिश्तेदार एक आध दिनके वास्ते इनके यहाँ आकर ठहर जाय और परहेजी खाना खाता हो, तो चाहे वह बेचारा मूँगकी दालरोटी मिलनेके वास्ते कितनी ही खुशामद करे और कचौरी पूरी खानेसे अपनी बीमारीके बढ़ जानेका चाहे कितना ही भय दिखावे, परन्तु ये स्त्रियाँ उसकी एक न सुनेंगी और उसकी बीमारीके बढ़ जानेका कुछ भी भय न मानकर उसको वही बढ़िया खाना खिलावेंगी, जो तन्दुरुस्तीकी हालतमें खिलातीं। वह पाहुना चाहे कैसा ही उनका प्यारा हो और बढ़िया खाना खानेसे चाहे बीमारीके बढ़ जानेकी कितनी ही ज्यादा आशंका हो, लेकिन इनको उस बेचारे पर जरा भी दया न आवेगी और इनका कठोर हृदय जरा भी मुलायम न होगा। झूठी मूठी बातें बनाकर बीमारको इस बातका ही निश्चय करानेकी कोशिश करेंगी कि आजका खाना हर्गिज भी नुकसान नहीं करेगा। इस प्रकार बीमारको बहकाफुसला कर और उसको अपनी मर्जीके मुताबिक खाना खिलाकर फिर अपने पेटकी असली बात भी सुना देंगी कि इतने दिनोंके बाद बड़ी मुश्किलसे तो तुम्हारा आना हुआ है। उसहीमें मैं तुम्हारे आगे बनाकर रख देती मूँगकी दाल और रोटी; भला क्या कुछ अच्छी भी लगती मैं ऐसा करती हुई, और कोई मुझे क्या कहता कि भली खातिरदारी करी पाहुनेकी, इस वास्ते यह खाना तुम्हें करेगा तो नुकसान ही; पर क्या

किया जाय, हमारे वास्ते तुम आज यह नुकसान ही उठा लेना। और लो यह बहुत बढ़िया चूर्ण है, इसको खा लेना, सब हज़म हो जावेगा इससे।

विधवा बहनो, बीमारकी सेवा करनेमें तुम अपना हृदय ऐसा कठोर मत रखना और न इस बातका खयाल रखना कि बीमार राजी होता है या नाराज, लोग भलाई देंगे या बुराई, बल्कि सदा बीमारके जल्द आराम हो जानेका ही खयाल रखना और वैद्यकी ही आज्ञाके अनुसार चलना। क्योंकि न तो तुमको लोक-दिखावा करना है, और न सुघड़ भलाई लेनी है; बल्कि धर्म कमाना है, दया पालनी है और परोपकारका सच्चा फल भी ऐसा ही करनेसे मिलता है। लोक-दिखावेके तौर पर करनेसे तो तुमको उलटा पापका ही बंध होगा। इस वास्ते लोक-दिखावेकी सेवा करनेसे तो न करनी अच्छी।

जच्चाकी सेवा करना भी महान् परोपकार है।

विधवा बहनो, आजकलकी स्त्रियोंमें कुछ ऐसी मूर्खता फैल रही है कि वे आपसमें जरा भी सलूक और मेल जोल नहीं रखती हैं। यहाँ तक कि जिनमें रहकर ही सारी उमर बितानी होती है ऐसी देवरानियों जेठानियोंके साथ भी सलूक नहीं रखती हैं, जिससे दुःख दर्दमें एक दूसरेके काम आवें। इस वास्ते जब इनके कोई बाल बच्चा होनेको होता है, तो सगी देवरानी जेठानीके होते हुए भी इनको अपनी किसी

ननदको ही उसकी सुसरालसे बुलवाना होता है। वह बेचारी लोकलाजके कारण आनेको तो जरूर आती है, लेकिन पराये बस होनेसे बड़ी दिक्कत उठाकर आती है, और आकर ज्यादा दिन ठहर भी नहीं सकती है। लेकिन बाल बच्चा होनेका गुम मामला, कौन जाने कब हो, इस वास्ते कभी कभी ननदके आने पीछे भी बाल बच्चा होनेमें दो दो महीने निकल जाते हैं, जिससे उस बेचारीको मन-ही-मन अपने घरकी चिन्ता रखते हुए बेकार ही पड़ा रहना पड़ता है और बच्चा हो जानेके पीछे जल्द ही वापिस भागना सूझता है। कभी कभी तो उसको अधरमें ही चला जाना पड़ता है।

मेरी विधवा बहनो, अपने कुटुम्बकी सब जच्चाओं (प्रसूता स्त्रियों) की सेवा करनेका यह उत्तम काम भी अगर तुम अपने जिम्मे ले लो, तो तुम्हारा बड़ा भारी उपकार हो और तुमको बहुत ही ज्यादा पुण्यकी प्राप्ति हो। जच्चाकी सेवा भी जैसी अच्छी तुम कर सकती हो, वैसी घर गिरस्तिन नहीं कर सकती हैं। क्योंकि एक तो तुम्हें प्रसूतकी कोई बीमारी लग जानेका भय नहीं हो सकता है, इस कारण तुम वक्त बेवक्त जच्चाखानेके (सोरके) अन्दर भी जा सकती हो। इसके सिवाय सधवा स्त्रियाँ अपना मिजाज जितना नाजुक बनाये रखती हैं उतना ही तुमने अपना मिजाज कड़ा बना लिया है और तुमने अपने इस अति घिनावने और अपवित्र शरीरसे पराई सेवा करने का मत भीले रक्खा है, इस वास्ते तुमको जच्चाकी किसी प्रकारकी

विधवा बहनो, अगर तुम्हारी जैसी सची धर्मात्मा स्त्रि अपने अपने कुटम्बकी जच्चाओंकी सेवाका काम अप हाथमें ले लें, तो फिर किसी तरह भी जच्चाकी न चले और फिर सब काम कायदेके ही मुआफिक हों, सब जच्चा तन्दुरुस्त होकर उठें और इस तरह दुनियाका बड़ा भारी उपकार हो जिससे तुमको जस भी मिले और पुण्य भी।

प्यारी बहनो, इसी प्रकारके परोपकारके हजारों काम हैं, जिनको करके तुम अपना जन्म सफल कर सकती हो, अपनी इस घिनावनी और अपवित्र देहको महाकार्यकारी बना सकती हो और इस प्रकार इससे टहल लेकर महान् पुण्य उपार्जन कर सकती हो। सच तो यह है कि, तुमको एक पल भर भी खाली नहीं बैठना चाहिए, बल्कि रात दिन परोपकार में ही लगा रहना चाहिए। क्योंकि खाली बैठनेसे मन इधर उधर घूमता है, परिणाम खराब होते हैं, और काममें लगे रहनेसे मन भी उसी काममें फँसा रहता है—इधर उधर भटकता हुआ नहीं फिरता। परोपकार करने, पराये काम आने, पराई सेवा करने और इस प्रकार दया धर्म पालन करनेका तुमको बहुत अच्छा अवसर मिला हुआ है। इस समय तुम जितना चाहो पुण्य कमा सकती हो और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बना सकती हो। इस वास्ते तुम इस अवसरको बहुत गनीमत जानो। बेचारी सुहागिन स्त्रियोंको तो अपने घर गिरिस्तीके ही धंधोंमें ऐसा फँसा रहना पड़ता है कि वे कुछ भी परोपकार नहीं कर

सकती हैं और इसी वास्ते कुछ पुण्य भी नहीं कमा सकती हैं। इस कारण मेरी बहनो, पुण्य प्राप्तिका जो महान् अवसर तुमको मिला है उसमें मत चुको और खूब जी जानसे मेहनत करके और इस शरीरसे पूरी तरह काम लेकर पराये उपकारमें ही लगी रहो। यही सच्चा धर्म है और यही देवी देवताओंको काबू करके अपनी मर्जीके मुताबिक चलानेका महा मंत्र है। इसीसे दुनियामें नेकनामी मिलती है, संसारमें यश प्राप्त होता है, दुनियाके सब लोग ताबेदार बनते हैं और अन्तमें स्वर्ग मोक्षकी प्राप्ति होती है।

तुमको अपनी तन्दुरुस्ती रखना भी बहुत जरूरी है।

मेरी विधवा बहनो, अब तुमने भली भाँति जान लिया है कि यद्यपि यह शरीर अति घिनावना और अपवित्र है, लेकिन अगर इससे परोपकार और दया धर्मका काम लिया जावे, तो यही शरीर बड़े कामका है। इस वास्ते तुमको इस अपने शरीरका तन्दुरुस्त रखना भी बहुत जरूरी है। जो विधवा बहनें इस शरीरसे परोपकारका काम लेना नहीं चाहती हैं और जिनको अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र करके अपना अगन्त सुधारना मंजूर नहीं है, वे अपनी देहको जैसी चाहें रक्खें; लेकिन मेरी धर्मातमा बहनो, तुमको अपने इस शरीरकी तरफसे कभी असावधान नहीं होना चाहिए। बल्कि जहाँतक बन

वासनाओंकी कालिमाको धोकर अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाना ही अपना धर्म मान रक्खा है। इस वास्ते तुमसे सुहागिनोंकी रीस कैसे हो सकती है? उनका रास्ता और है और तुम्हारा रास्ता और। वे तो यह समझ रही हैं कि चौरासी लाख योनियोंमें एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जिसमें सत्तर प्रकारके स्वादिष्ट भोजन खानेको और पाँचों इन्द्रियोंके अनेक प्रकारके सुंदर सुंदर भोग भोगनेको मिलते हैं। इस वास्ते जो कुछ खाया पीया जा सके सो जल्दी जल्दी खा-पी लो और जो भी मौज उड़ाई जा सके वह जल्दी जल्दी उड़ा लो। इस वास्ते वे तो इस मनुष्यजन्मको गनीमत जानकर अपनी इन्द्रियोंके भोगमें लग रहे हैं और इसके विरुद्ध तुम यह मान रही हो कि ८४ लाख योनियोंमें एक मनुष्य योनि ही ऐसी है जिसमें आत्माका ज्ञान हो सकता है, भले बुरेकी पहचान होकर धर्म साधन किया जा सकता है और मन पर काबू पाकर आत्माकी उन्नतिमें लगा जा सकता है। इस वास्ते तुम इस मनुष्यजन्मको गनीमत समझ कर रातदिन अपनी इन्द्रियोंको काबू करने और मनको वसमें लाने और अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनानेमें ही लगी रहती हो।

इस प्रकार तुम्हारी और सधवाओंकी बातमें तो धरती आकाशका अंतर है। क्यों कि वे तो संसारके विषय भोगोंमें फँसकर और अपनी इन्द्रियोंके वस होकर इस अति उत्तम मनुष्यजन्मको खो रही हैं और पाप बटोरकर अपना अनन्त-

बिगाड़ रही हैं। पर तुम विषय-भोगोंसे अलग होकर अपनी इन्द्रियोंको अपने बसमें करके इस मनुष्यजन्मको सुफल कर हरी हो और पुण्य संचय करके अपना अगंत सँवार रही हो। इस वास्ते तुम्हारा और उनका रास्ता किसी तरह भी एक नहीं हो सकता है। वे अपनी जीभके बस होकर अगर बीमारीमें कड़वी कसैली ओषधि नहीं खा सकती हैं तो तुमको अपनी जिह्वा इन्द्रियको ऐसा बसमें करना चाहिए कि बीमारीमें कड़वी कसैली दवा खा लेना तो कोई बात ही न हो, बल्कि अगर चाहो तो तन्दुरुस्तीमें भी कुनैनसे भी कड़वी चीजको खुशीके साथ अपनी जीभ पर रख सको। इसी प्रकार बीमारीमें मूँग-की दाल या रूखी सूखी रोटी खाना और मिरच मसाला, खटाई मिठाई, घी तेल, दूध दही, कचौरी पूरी और साग भाजीसे परहेज रखना तो तुम्हारे लिए बहुत ही साधारण बात हो। बल्कि तन्दुरुस्तीमें भी तुम बरसों तक ऐसा ही परहेज रख सको, और रूखी सूखी खाकर ही आनन्दसे अपना गुजारा कर सको। अर्थात् साक्षात् करके यह बात दिखा सको कि खानापीना शरीरको बनाये रखनेके वास्ते है न कि जीभका स्वाद लेने-को। इस वास्ते खाने पीनेमें तुमको कभी इस बातका खयाल नहीं करना चाहिए कि इस खानेको हमारी जीभ भी पसन्द करती है कि नहीं, बल्कि सदा ऐसा ही खाना खाना चाहिए, जिससे शरीर तन्दुरुस्त और मन सावधान रहे।

तन्दुरुस्तीका जिकर आने पर कोई कोई विधवा बहनें यह

कह दिया करती हैं कि हमको क्या कहीं हलमें जुतना है, या हमारे बिना क्या दुनियाका कोई काम अटक रहा है जो हम भी अपनी तन्दुरुस्तीका इतना खयाल रक्खें और मौतसे बचनेकी कोशिश करें। हमारा जीना तो इस दुनियामें बिल्कुल ही बेकार और बेफ़ायदा है। हम तो इस दुनिया पर एक बोझा हैं, इस वास्ते हमारे मरनेसे जितनी जल्दी यह बोझा टले उतना ही अच्छा है। पर हमसे तो अपना जी अपने आप नहीं निकाला जाता है, इस वास्ते लाचार हैं और ज्यों त्यों अपनी साँस पूरी कर रही हैं। हमें तो न तन्दुरुस्तीकी इच्छा है और न बीमारीसे डर।

मगर मेरी प्यारी बहनो, यह खयाल उन्हीं औरतोंका है जो दुनियाके ऐशोआरामको ही सब कुछ समझ रही हैं, जिनके खयालके मुताबिक अगर ऐशोआराम नहीं है तो मनुष्यका जीवन ही नहीं है। ऐसी बातें वे ही बनाती हैं जिनकी जीभ उनके काबूमें नहीं है, मन जिनका उनके वसमें नहीं है, जो बिल्कुल अपनी इन्द्रियोंकी दासी बन रही हैं, अपनी इच्छाको जरा भी नहीं रोक सकती हैं, बावलोंकी तरह मन आया करती रहती हैं और ऊपरसे ऐसी बातें बना दिया करती हैं। ऐसी बातें बनानेवाली औरतें सख्त बीमार होकर चारपाई पर पड़ जाने पर भी जो जीमें आया अटकल पच्चू खाती पीती रहती हैं, रत्तीपर भी सर्दी गर्मी सहन नहीं कर सकती हैं और उनकी बीमारी चाहे

कितनी ही बढ़ती चली जाय, पर उनसे जरा भी इहतियात नहीं हो सकती है और उनको तो दवाके नामसे ही धुड़धुड़ी आती रहती है। लेकिन शेखीकी मारी ये औरतें फिर भी यह कहती रहा करती हैं कि हम क्या यह देही किसीसे माँग कर लाये हैं जिसके वास्ते इतनी इहतियात करें। हम क्या अपनी देहीके नौकर गुलाम हैं, जो हर वक्त इसहीका ख्याल रक्खें।

ऐसी औरतें बीमार पड़ी पड़ी भी इतरा इतरा कर कहा करती हैं कि जिनको अपनी देही सँभालकर रखनी है, जिनके दस पूछनेवाले हैं, जरासी छींक आने पर भी जिनके वास्ते हकीम और डाक्टर बुलाये जाते हैं, दिन भरमें दस दफे जिनकी दवाई बदली जाती है, पलपलमें जिनका मिजाज पूछा जाता है, जिनके हरकिसमके नखरे सहनेको, आठ पहर पंखा झलनेको और सब तरहका हुकम बजानेको सारा घर हाथ बाँधे खड़ा रहता है, ऐसी नाजुक मिजाजोंको ही चारपाई पर पड़े पड़े हींग हगने और खानेपीने तथा सर्दीगर्मीका परहेज रखनेकी जरूरत है। हमें तो कोई यह भी पूछनेवाला नहीं है कि तू किस खेतकी मूली है। हम तो चाहे बीमार हों चाहे तंदुरुस्त, किसीको इससे कुछ वास्ता ही नहीं है। कोई अपने ही मरने मर जाओ और अपने ही जीने जी जाओ, पर किसी दूसरेको कुछ मतलब ही नहीं है कि हम मर गई हैं या जीती हैं, तकलीफमें हैं या आराममें। इसवास्ते बीमार पड़नेपर हम किसके भरोसे इस बातका नखरा करें कि ठंडे गर्ममें हाथ नहीं देना, गीले सील्हे पर

पैर नहीं रखना और हवा बावमें नहीं बैठना, और किसके सहारे पर हम इस बातका खयाल रक्खें कि यह चीज गर्मी करेगी और यह सर्दी, इससे नफा होगा और उससे नुकसान, यह चीज खानी है और वह नहीं खानी। अगर हम ऐसे नखरे करने लगें तो एक दिनमें सड़कर मर जावें।

प्यारी बहनो, ये स्त्रियाँ संयमरूप चलनेसे बचनेके वास्ते इसी तरहकी और भी बहुतसी बातें बनाया करती हैं। लेकिन यह सिर्फ इनकी बहानेबाजी और बिल्कुल उलटी बातें हैं। जरा सोचनेकी बात है कि जिन सधवा स्त्रियोंके दस पूछनेवाले हैं और बीमारीमें जिनको सब प्रकारका आराम पहुँचाया जाता है उनको तन्दुरुस्त रहनेकी ज्यादा फिकर होनी चाहिये या उन विधवा बेचारियोंको जिनके बीमार पड़ जानेसे दो दो दिन तक मुखमें पानी भी न पड़े, चूल्हेमें आग तक न सुलगे, और जिनको दुखके मारे सारी सारी रात तड़पने, हायहाय करने और चिल्लाने पर भी कोई यों न पूछे कि तेरा क्या हाल है। मेरी प्यारी बहनो, बीमारीसे बचने और तंदुरुस्तीका खयाल रखनेकी जितनी तुमको जरूरत है उतनी सधवाओंको कदापि नहीं है। क्योंकि उनको तो भारी बीमारीमें भी मौज है और तुमको जरासी तकलीफमें भी मौत है। उनको तो महीनों बीमार पड़े रहनेमें भी कोई दिक्कत नहीं है और तुमको एक ही दिनके पड़ जानेमें नानी दादी याद आ जाती है।

सच तो यह है कि जो विधवा बहनें अपनी तन्दुरुस्तीका खयाल नहीं रखती हैं, वे अपनी तन्दुरुस्तीसे इस कारण बेपरवाह नहीं हैं कि उन्होंने ऋषिमुनियोंके समान अपने शरीरसे ममता छोड़ दी है। बल्कि वे तो अपनी इन्द्रियोंके बस होकर ऐसी लाचार हो रही हैं कि अपनी जीभको जरा भी नहीं रोक सकती हैं, और एक रत्ती भर भी अपने मनको नहीं थाम सकती हैं। इस वास्ते चाहे उनको कितनी ही तकलीफ भुगतनी पड़े, पर जो जिसवक्त उनके मनको भाता है वही करके हटती हैं। प्यारी बहनो, जरा यह भी तो विचारो कि सधवा स्त्रियोंको नखरेबाज और तुनकमिजाज कहकर उनकी हँसी उड़ाना तुमको तब ही शोभा दे सकता है, जब तुम बीमार पड़ने पर कड़वी कैसेली दवाको पीनेसे जरा भी न हिचकिचाओ और हकीमके कहे मुताबिक खानेपीने और सर्दी गर्मी सहन करनेमें जरा भी न घबराओ।

देखो, जिनके दस पूछनेवाले हैं ऐसी सधवा स्त्रियाँ अगर कड़वी कसैली दवा न खावें तो उनके वास्ते अनेक प्रकारके मजेदार शर्बत, चटनी और अर्क तय्यार हो सकते हैं, न जाने कहाँ कहाँसे ढूँढ़ ढूँढ़कर अनेक स्वादिष्ट ओषधियाँ लाई जा सकती हैं, लेकिन तुम्हें तो कोई एक बार बुरी भली ही ला दे तो गनीमत है। इस वास्ते अगर तुम भी दवामें स्वाद ढूँढ़ो और कड़वी कसैली खानेसे इनकार करो, तो तुम तो सधवा स्त्रियोंसे भी ज्यादा नखरेबाज और नाजुकमिजाज हो, और

अपनी इन्द्रियोंके बसमें होकर ऐसी अंधी हो रही हो कि तुमको तो अपना भला बुरा भी नहीं सूझता है।

विधवा स्त्रियो, तुम्हारा इस प्रकार अपनी इन्द्रियोंके बसमें होना बड़ी लज्जाकी बात है। क्योंकि सधवा स्त्रियाँ तो अपनी इन्द्रियोंको पुष्ट करने और मन भाया खाने पीनेको ही अपने सौभाग्यका फल और अपने जीवनका सार समझती हैं। इस वास्ते वे अगर हर चीजमें स्वाद ढूँढ़ें और मन माना करें तो करो, मगर तुम तो अपनी इच्छाओंको मार कर और अपनी इन्द्रियोंको वसमें करके अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाना ही अपने जीवनका कर्तव्य मानती हो, इस वास्ते अगर तुम भी हर चीजमें स्वाद ढूँढ़ती हो, कड़वी कसेली दवा खानेमें नाक भौं चढ़ाती हो, अपनी तन्दुरुस्ती रखनेके वास्ते भी खाने पीनेका परहेज नहीं कर सकती हो और सर्दी गर्मी सहन नहीं कर सकती हो, तो बहुत बड़े आश्चर्यकी बात है।

अगर तुमको अपनी इन्द्रियों और मन पर इतना भी काबू नहीं हुआ है तो तुम्हारे व्रत उपवास, जप तप, यम नियम सब व्यर्थ ही गये और तुमने कुछ भी धर्म साधन नहीं किया। विधवा बहनो, तुम खूब अच्छी तरह समझ रक्खो कि दुनिया भरमें जितने भी मत और जितने भी धर्म प्रचलित हैं, वे सब इन्द्रियों और मनको वस करके आत्माको शुद्ध और पवित्र बनानेके ही भिन्न भिन्न मार्ग हैं। इसवास्ते चाहे

तुम्हारा कोई भी धर्म हो और उस तुम्हारे धर्मके साधन भी कुछ ही हों, परन्तु हैं वे सब आत्माकी ही शुद्धिके वास्ते। इस कारण धर्मसाधनमें तुमने चाहे जितना कष्ट उठाया हो, चाहे जितनी मेहनत की हो, चाहे जितना धन खर्चा हो और चाहे जितना समय लगाया हो; परन्तु असलमें धर्मसाधन उतना ही हुआ है जितना तुमने अपनी इन्द्रियोंको बस करके अपनी आत्मामें शान्ति पैदा कर ली है, और अगर यह नहीं हो सका है तो तुमने व्यर्थ ही डले ढोये हैं-फिजूल ही अपने शरीरको कष्ट दिया है।

कौन आदमी धर्मात्मा है और कौन नहीं, और किसने कितना धर्म साधन किया है, इस बातकी सबसे आसान कसौटी और मोटी पहचान यही है कि उसका मन और उसकी इन्द्रियाँ उसके बसमें हैं या नहीं, और हैं तो कितनीं? प्यारी बहनो, तुम भी नित्य इसी प्रकार अपनी जाँच कर लिया करो। तुम उनही कामोंको करती रहो और उनही तरीकों पर चलती रहो, जिनसे मन और इन्द्रियाँ वसमें हों, और आशा तृष्णाका नाश होकर चित्तमें शान्ति आवे तथा आत्मा पवित्र हो।

सधवा स्त्रियाँ दुनियाके ऐशो आराम पर रीझकर अपने मनुष्य-जन्मको अकारथ खो रही हैं। इस मनुष्य-पर्यायका एक एक पल एक एक अशरफीसे भी ज्यादा कीमती है। परन्तु वे नहीं जानती हैं कि हम अशरफियोंकी थैलियाँ देकर हीरे जवाहरातके धोखेमें रंग-विरंगे काँचके टुकड़े

मोल ले रही हैं जो एक कौड़ीके भी नहीं हैं। तुमने संसारके भोगोंको काँचके टुकड़े समझ कर दूर फेंक दिया है और अपनी आत्माकी शान्तिको ही सच्चे जवाहरात समझकर इसकी ही प्राप्तिके वास्ते अपनी सारी आयु खपा देनेका बीड़ा उठाया है। इस वास्ते तुम धन्य हो, और साधु महात्माओंकी तरह दर्शन पूजनके योग्य हो। परन्तु याद रक्खो कि यह तुम्हारा काम कोई आसान काम नहीं है, जिसको सब कोई कर सके। यह कोई बच्चोंका खेल नहीं है, जो बाह्य क्रियाओंके ही करनेसे पूरा हो सके। यह तो आत्माकी शुद्धि है जो हृदयमें शान्ति लानेसे ही हो सकती है, और हृदयमें शान्ति आती है मनको काबू करने, इन्द्रियोंको दबाकर अपनी इच्छाओंको कम करने, हर एक अवस्थामें खुश रहने और संतोष धारण करनेसे। इसवास्ते तुमको तो हर वक्त इन्हीं बातों-के साधनमें लगा रहना चाहिए। यही तुम्हारा धर्म है और इसीसे तुम्हारा कल्याण होगा।

इस बातको तुम हर वक्त अपने ध्यानमें रक्खो कि यह मन बहुत ही जबरदस्त और चंचल है जो पल पलमें गिरगिट कैसे रंग बदलता रहता है। कभी तो इस मनमें ऐसी ऊँची तरंगें उठती हैं, मानों सभी प्रकारका मोह त्याग कर परम वैराग्य प्राप्त कर लिया है और फिर जरा ही देरमें यह मन ऐसा नीचे गिर जाता है मानों यह मान माया लोभ क्रोधका साक्षात् पुतला ही है। कभी तो इसको इतना ऊँचा खयाल आता है कि

अगर कोई हमारा सारा माल भी लूट कर ले जायगा और हमारी गर्दन भी काट जायगा, तो भी हम कुछ परवाह नहीं करेंगे और पल भरके ही पीछे यह मन ऐसा तुच्छ हो जाता है कि एक एक तिनके पर भी जान देने और दूसरेकी जान लेनेको तय्यार हो जाता है। इस वास्ते मनपर काबू पाना बहुत ही मुश्किल काम है जो एक दिनमें नहीं हो सकता है, बल्कि इसके लिए सारी उमर अभ्यास करते रहने और हर वक्त संभाल रखनेकी जरूरत है। मस्त हाथीको बस करना और शेरके साथ कुश्ती लड़ना आसान है, लेकिन मनको काबू करना मुश्किल है।

कमजोर आदमी कभी मन पर काबू नहीं पा सकता है। कमजोर आदमी जिस प्रकार चलनेमें बारबार डगमगाता है, कदम कदम पर ठोकरें खाता है और जगह जगह फिसल फिसल कर गिरता जाता है, उसी तरह कमजोर आदमीका हृदय भी हरवक्त डाँवाँडोल रहता है। जरा जरासी चीज पर उसका जी ललचाता है और बात बात पर उसको रंज और गुस्सा आता है। इस प्रकार कमजोर बेचारा तो सदा भटकता ही रहता है, और अपने मनके वस होकर सदा दुःखोंमें ही फँसा रहता है। कमजोरीके ही कारण बूढ़े आदमियोंकी तृष्णा बढ़ जाती है और मन बेकाबू रहता है। कमजोरीके ही कारण बीमारका मिजाज चिड़चिड़ा हो जाता है, खाने पीनेकी चीजों-पर मन चलने लगता है और वह बच्चोंकी तरह सब चीजें

माँगने लगता है। इस वास्ते जिसको अपना मन वश करना हो, जो अपने चित्तको शान्त और हृदयको पवित्र करना चाहती हो, जिसने अपनी आत्माको कर्म-कलंकसे शुद्ध करनेका इरादा किया हो, उसको मजबूत और तन्दुरुस्त रहनेकी भी बहुत जरूरत है। दुनियाके लोग जो अपनी पाँचों इन्द्रियोंके भोगोंको ही अपना जीतव्य समझते हैं वे अगर तन्दुरुस्तीका खयाल न रक्खें तो कोई हर्जकी बात नहीं है। क्योंकि खाना पीना आदि इन्द्रियोंके भोग तो पशु-पर्यायमें भी मिल जाते हैं। इस वास्ते उन लोगोंका मतलब तो सभी योनियोंमें सिद्ध होता रहेगा। परन्तु मेरी विधवा बहनो, अपनी आत्माकी शुद्धिके जिस महान् कामको तुमने उठाया है वह एक मनुष्य पर्यायमें ही सिद्ध हो सकता है। इस कारण इस अति उत्तम मनुष्य-पर्यायकी रक्षा करना और इसमें किसी प्रकारका भी रोग न आने देना, अर्थात् इसको तन्दुरुस्त बनाये रखना तुम्हारे वास्ते बहुत जरूरी है। इस लिए तुम अपनी तन्दुरुस्तीका पूरा पूरा खयाल रक्खो और व्रत उपवास, जप तप, नियम आखड़ी, दयाधर्म, परोपकार आदि और भी जो कुछ तुम्हें करना हो वह सब इसी रीतिसे करो, जिसमें तुम्हारी तन्दुरुस्तीमें फर्क न आवे और जिससे आगेको भी तुम इन सब कामोंको अच्छी तरह कर सको।

विधवाओंके धर्मसाधनका मार्ग।

मेरी बहनो, दुनिया बहुत बुरी है और सदासे ही बुरी है, लेकिन यह दुनिया जैसी बुरी आजकल हो रही है ऐसी शायद

कभी भी न रही हो। क्योंकि आजकल तो यह गजब हो रहा है कि स्वयम् रक्षक ही भक्षक हो रहे हैं, और खेतकी बाढ़ ही खेतको खा रही है। इस वास्ते आजकल बहुत फूँक फूँक कर कदम रखनेकी जरूरत है। तुम्हीं देखो कि दुनियामें धर्म साधुओंके ही द्वारा आसानीसे चल सकता है। वे ही नगर नगर और गाँव गाँव घूमकर दुनियाके झगड़ोंमें फँसे हुए गृहस्थोंको जगाकर धर्मकी तरफ लगा सकते हैं और अपनी सच्ची आत्मासे धर्मका उपदेश देकर मोही जीवोंके हृदयका मोह अन्धकार हटा सकते हैं। लेकिन आजकल यह मुश्किल आ पड़ी है कि हजारों और लाखों ठगोंने साधुओंका भेस धर लिया है और इस भेसके कारण लोगोंमें मान्यता होनेसे इन लोगोंको ठगी करनेका अच्छा मौका मिलने लगा है। यह लोग साधुका भेस धरकर धर्मके नामसे अनेक प्रकारके जाल फैलाते हैं और अपना काम बना ले जाते हैं।

ऐसे ठगोंका आचरण सभी बातोंमें गिरा हुआ होता है, इस कारण इनकी संगतिसे दुनियाके लोगोंका भी आचरण बिगड़ता है और बड़ी बड़ी खराबियाँ पैदा होती हैं। ये लोग अपना बाहरी स्वरूप और अपनी बाहरकी सब क्रियायें ऐसी बनाते हैं कि सच्चे और झूठे साधुकी पहचान करना अब बहुत ही मुश्किल हो गया है। बातें भी ये लोग ऊँचे दर्जेके वैराग्यकी ऐसी बनाते रहते हैं जिससे बड़े भारी सिद्ध महंत मालूम हों। इसके अलावा ये लोग दुनियादारोंके सामने अपने जोग और अपने तपका ऐसा बड़ा माहात्म्य गाते रहते हैं और अपने पास

ऐसे ऐसे जंतर-मंतरोंका होना भी बताते रहते हैं जिनके द्वारा दुनियाके लोगोंके मुश्किलसे मुश्किल काम भी क्षणभरमें सिद्ध हो सकें। दुनियाके लोग कुछ तो दुनियाके मोहमें पहलेसे ही अन्धे होते हैं और कुछ इन ठगोंकी बातोंसे हो जाते हैं। इस वास्ते दुनियाके लोग इनके पीछे पीछे फिरने लगते हैं और बरसों इनके जालमें फँसे रहते हैं।

मेरी बहनो, जब साधुओंका यह हाल है कि उनमें सच्चे कम हैं और ठग ज्यादा, और जब ये लोग ऐसे चालाक हैं कि बड़े बड़े होशियार आदमियोंकी भी आँखोंमें धूल डालकर अपनेको सच्चे साधुओंके समान पुजवा रहे हैं, तब तुम बेचारी तो क्या पहिचान कर सकती हो कि कौन सच्चा साधु है और कौन बनावटी। मेरी बहनो, तुम यह भी जानती हो कि आदमीकी मोती कैसी आब होती है जो जरासी बातमें बिगड़ती है और फिर नहीं सुधरती। काजलकी कोठड़ीमें घुसकर बिना दाग लगे कोई मुश्किलसे ही निकल सकता है और विधवाका तो बहुत ही मुश्किल मामला है; विधवाको तो अपनी बहुत ही सँभाल रखनेकी जरूरत है। इस वास्ते इस समय तुम्हारे लिए यही मुनासिब है कि तुम साधुओंसे कुछ वास्ता मत रक्खो। चाहे कोई कैसा ही सच्चा साधु हो और चाहे गाँवभरकी सारी स्त्रियाँ उसके दर्शनोंको जाती हों, परन्तु तुम ऐसेके पास भी मत जाओ और न उसको अपने घर बुलाओ, अर्थात् तुम किसी भी साधुसे कुछ गरज मत रक्खो।

साधुके पास जानेसे दुनियाके लोग दो ही प्रकारके लाभ उठा सकते हैं, एक तो धर्मोपदेशका और दूसरे अपने दुनियाके कामोंकी सिद्धिका, जैसे औलादका होना, धन दौलतका मिलना, मुकदमेका जीतना, बैरीका नाश होना आदि। मेरी विधवा बहनो, अव्वल तो तुम्हें दुनियाके किसी कामकी ऐसी भटक ही नहीं है जिसके वास्ते तुम साधुओंकी सेवा करती फिरो और दूसरे वह तो सच्चा साधु ही नहीं है जो दुनियाके धंधोंमें पड़ता है और अपने घरका कारज छोड़कर लोगोंके झूठे सच्चे कारज सिद्ध करता फिरता है। एक कथा प्रसिद्ध है कि किसीकी गाय जंगलको भागी जा रही थी और गायका मालिक पीछे पीछे भागा जा रहा था। इतनेमें सामनेसे कोई साधु आता हुआ दिखाई दिया। गायवालेने आवाज देकर कहा कि बाबाजी हेरियो हेरियो, अर्थात् मेरी गायको रोक लो। बाबाजीने जवाब दिया कि बच्चा अगर हमें ढंगर हेरने होते तो अपने घरके ही न हेरते। मतलब इसका यह है कि जो साधु दुनियाके लोगोंके दुनियादारीके कामोंमें पड़ता है वह साधु ही नहीं है; क्योंकि अगर उसको दुनियाके ही कामोंमें लगना था तो वह अपना घर द्वार त्यागकर साधु ही क्यों बना? इस कारण वह साधु नहीं है, बल्कि बहुरूपिया और ठग है।

रही धर्मोपदेशकी बात, सो अव्वल तो आज कलके बहुतसे साधु धर्मोपदेश करना जानते ही नहीं और जो कुछ थोड़ा बहुत धर्मोपदेश करते भी हैं, तो उसमें भी कामकी

बात बहुत ही थोड़ी होती है। ज्यादा करके तो उसमें भी साधु-
ओंकी प्रशंसा और उनकी सेवा-टहलके महान् फलोंका ही
बखान होता है जिससे सुननेवालोंको साधुसेवाकी ही प्रेरणा
हो। गृहस्थोंको कार्यकारी सच्चा उपदेश करनेवाले साधु तो
आजकल कोई विरले ही होंगे। इस कारण धर्मोपदेशके
वास्ते भी साधुओंके पीछे फिरना बिल्कुल ही फिजूल है। आज-
कल सर्व प्रकारका धर्मोपदेश धर्मशास्त्रों और उपदेशी
पुस्तकोंसे बड़ी आसानीके साथ घर बैठे ही मिल सकता है।
इस समय तो प्रायः सर्व ही धर्मग्रन्थ और उपदेशी
पुस्तकें बहुत ही सरल भाषामें लिखी जा चुकी हैं और छप
जानेके कारण बहुत ही कम कीमतको जब चाहें मिल सकती
हैं। इस वास्ते सधवा स्त्रियाँ जो चाहे सो करें, लेकिन विधवा
स्त्रियो, तुम तो आजकलके साधुओंसे बिल्कुल ही अलग रहो
क्यों कि तुम्हारा मामला बहुत ही नाजुक है।

यही हाल आजकलके तीर्थस्थानोंका हो रहा है। इन
तीर्थों पर भी किसी समय बड़े बड़े महात्मा और अच्छे अच्छे
ज्ञानी पुरुष मिलते थे, जिनके उपदेशसे दुनियाके लोगोंको
बड़ा लाभ होता था, और इसी लालचसे दुनियाके लोग दौड़
दौड़ कर तीर्थस्थानों पर जाते थे, लेकिन आजकल तीर्थोंके
पंडोंका जो हाल है और आजकल तीर्थस्थानोंकी जो बद-
नामी है वह हम इस पुस्तकमें नहीं लिख सकते हैं, और न हम
चाहते हैं कि हमारी बहनोंको तीर्थोंके यह हाल मालूम हों।

हम तो उनसे सिर्फ यह ही कहना चाहते हैं कि समय बहुत खोटा बीत रहा है इस वास्ते आजकलकी दुनियामें न किसी भाई बन्धुका ऐतवार है, न किसी रिश्तेदारका, न नौकर-चाकरका और न अपने मनका। इस वास्ते विधवाओंका घरसे बाहर निकलना ही अच्छा नहीं है, उनको जो कुछ भी धर्म साधन करना हो वह घर बैठे ही कर लें।

विधवा बहनो, यह तुम भली भाँति जानती हो कि धर्मके जितने भी साधन हैं वे सब मनको शुद्ध करने और आत्माको पवित्र बनानेके वास्ते ही हैं। इसवास्ते तीर्थयात्राके द्वारा जितना मन शुद्ध हो सकता है और जितनी आत्मा पवित्र बन सकती है उतना तुम घर बैठे ही कर सकती हो। क्योंकि तुम तो घर पर भी सारे दिन धर्मसाधनमें ही लगी रहती हो, और अगर तुम तीर्थभक्तिको ही कोई विशेष आवश्यक धर्म मानती हो तो जिस प्रकार श्रीभगवान् या अन्य देवीदेवताओंका अपने मनमें ध्यान करके उनकी पूजा भक्ति करती रहती हो, उसी प्रकार तीर्थोंका भी ध्यान करके उनकी पूजा भक्ति कर लिया करो। इस विधिसे तुम सभी तीर्थोंकी वंदना कर सकती हो और अनेक वार कर सकती हो।

विधवा बहनो, मैं स्त्रियोंकी बुराई करनेके वास्ते नहीं लिखता हूँ, बल्कि यह बात बिल्कुल सच है कि तीर्थयात्रा करनेका शौक स्त्रियोंको ज्यादा करके इसी वास्ते होता है कि अनेक प्रकारके नगर गाँव, अनेक प्रकारकी नई नई चीजें

और भिन्न भिन्न देशके आदमी देखनेमें आवेंगे। पर मेरी प्यारी बहनो, ऐसे शौक सधवा स्त्रियोंको ही शोभा देते हैं। इसवास्ते अगर वे तीर्थयात्रा करती फिरें तो फिरो; मगर तुम तो अपने घरमें ही जोग साधे बैठी रहो और अपने मन और इन्द्रियोंको काबू करके, मोह और अहंकारका नाश करके, और अपने शरीरको पूरी तरहसे पराई सेवामें लगाकर अपनी आत्माकी ऐसी उन्नति करो कि लोग तुम्हारे ही दर्शनोंको आने लगें और तुम्हारा ही घर तीर्थस्थान बन जावे।

विधवा बहनो, तीर्थयात्राके समान धर्मके मेलोंमें भी तुम्हारे जानेकी कोई जरूरत नहीं है। यह काम भी तुम सधवाओंके वास्ते ही छोड़ दो। बल्कि तुम्हें तो यह भी चाहिए कि जिस प्रकार सधवायें प्रतिदिन मंदिर शिवालयोंमें दर्शन करने और नदी-बावड़ियों पर स्नान करने जाती हैं, तुम इस बातमें भी उनकी रीस न करो और कहीं भी न जाओ, बल्कि जो कुछ भी धर्मसेवन तुमको करना हो वह घरमें ही बैठकर करो।

इस मौके पर तुम यह जरूर कहोगी कि हमने ऐसा क्या कुसूर किया है, जो हमको कैदीके समान घरमें ही पड़े रहनेकी सलाह दी जाती है और धर्मके वास्ते भी घरसे बाहर निकालनेको मना किया जाता है। परन्तु मेरी बहनो, बुरा मत मानो; क्योंकि मैंने जो कुछ लिखा है वह सब तुम्हारी ही भलाईके वास्ते लिखा है, और तुम्हारे धर्मकी बढ़वारी होनेके वास्ते लिखा है। देखो इस वक्त तो तुम घरसे बाहर निकलने

पर ही घबराती हो, परन्तु क्या तुम्हें यह मालूम नहीं है कि पिछले समयकी स्त्रियाँ विधवा हो जाने पर या तो अपने पतिके साथ जीती ही जल मरती थीं, या सिर मुँड़वा कर और जोगनका भेस बनाकर घरके एक कोनेमें ही जमीन पर आसन जमाकर अपनी उमर टेर कर देती थीं। वे न खाट पर सोती थीं, न अच्छा खाती थीं और न अच्छा पहनती थीं; बल्कि बिल्कुल रूखा सूखा खाकर और तन ढकनेके वास्ते एक आध मोटा-झोटा कपड़ा पहन कर बिल्कुल ही साधु संन्यासियोंकी तरह अपना रँडापा काटती थीं। मगर आजकलकी तो बात ही निराली है।

आज कल राँडें अपना सिर तो क्या मुँड़वावेंगी, उनको तो अपने सारे अलंकार ही उतारने भारी हो रहे हैं। आजकलकी स्त्रियोंने तो रँडापेके भेसको यहाँतक भुला दिया है कि कभी कभी तो स्त्रियोंको देखकर यह पहचान करना ही भारी पड़ जाता है कि यह सधवा है या विधवा। खाना पीना तो सभी विधवाओंका बिल्कुल सधवाओंके ही समान हो गया है; इसमें तो कुछ अन्तर रहा ही नहीं है, और लड़ना झगड़ना, कोसना पीटना गाली गलौज बकना तो आजकल विधवाओंमें सधवाओंसे भी ज्यादा आ गया है। आज कलकी विधवाओंको तो यह मालूम ही नहीं है कि भले मनुष्यकी दो ही अवस्था हो सकती हैं,—या तो रागकी या वैरागकी। इन दो अवस्थाओंके सिवाय मनुष्यकी कोई तीसरी अवस्था ही नहीं हो सकती है, जिसमें वह नेकीके साथ

रह सके। इसी वास्ते पहले समयकी स्त्रियाँ विधवा होने पर वैराग ले लेती थीं और अपना सिर मुँड्वाकर तथा भूमिका साँथरा बनाकर जोगी संन्यासियोंकी तरह एकान्तमें अपने दिन बिताती थीं।

लेकिन आजकल न राग है और न वैराग। आज कलकी विधवायें न इधर हैं न उधर। बल्कि आज कलका रँडापा तो एक प्रकारका खेल तमाशासा हो रहा है जिसके सबबसे आजकल के लोगोंको इनके विषयमें बड़ी भारी चिन्तायें हो रही हैं, अनेक अनेक प्रकारकी बातें उठने लगी हैं, और नईसे नई तदबीरें निकलने लगी हैं।

विधवा बहनो, आज कलकी विधवाओंकी जो हालत है वह तुम भी अच्छी तरह जानती हो और सब लोग भी अच्छी तरह जानते हैं। इस पुस्तकमें हम उसका कुछ भी बखान करना नहीं चाहते हैं। क्योंकि गंठके छिलके उधेड़नेसे सिवाय गंदगी फैलानेके और कुछ फायदा नहीं होता है। इस कारण तुम खुद ही समझ लो कि आज कलकी दुर्दशाको मेटनेके वास्ते तुम्हारा घरहीमें बैठा रहना उचित है या नहीं।

ज्यादा मुश्किल आज कलके जमानेमें यह आ रही है कि मर्दोंकी दशा स्त्रियोंसे भी ज्यादा बुरी है। यहाँतक कि वे अपने लिए किसी पापको पाप ही नहीं समझते हैं, और किसी ऐबको अपने लिए ऐब ही नहीं मानते हैं। चील जिस प्रकार झपट्टा मारनेके वास्ते आकाशमें मँड्लाती रहती है और

अपनी तेज आँखोंसे अपने खानेकी चीजोंको ताकती रहती है, बिल्कुल ऐसा ही हाल आजकलके मर्दोंका हो रहा है। वे भी हरवक्त बुरी बातोंकी ही ताकमें रहते हैं और इसी लिए सब जगह मँड़लाते हैं, यहाँतक कि धर्मस्थानोंमें भी अपने इस खयालको नहीं भूलते हैं और वहाँ भी अनेक प्रकारके खोटे विचार उठाकर अपने हृदयको गंदा बनाते रहते हैं। जंगलका भेड़िया जिस प्रकार हरवक्त शिकारकी ही फिकरमें रहता है और सभी जीवोंको भक्षण कर जाना चाहता है, बिल्कुल यही हाल आज कलके मर्दोंका हो रहा है। इस कारण आज कल दुनियाका मामला बहुत ही मुश्किलमें आ पड़ा है और बहुत सावधानीसे रहनेकी जरूरत पड़ गई है।

मेरी विधवा बहनो, जिस प्रकार चोरोंसे बचनेके वास्ते दुनियाके लोग रातको दर्वाजेकी कुंडी लगाकर घरमें बन्द होकर ही सोते हैं, इसी तरह आज कल तुमको भी घरमें ही बैठनेकी जरूरत है। जहाँ तुम्हारी और बहुतसी क्रियायें सधवा स्त्रियोंसे निराली हैं वहाँ एक यह भी सही। शुरू शुरूमें तो तुमको इस प्रकार लुककर बैठना बहुत दूभर मालूम होगा, लेकिन कुछ दिनोंके बाद अभ्यास हो जाने पर कुछ भी बुरा नहीं लगेगा, बल्कि हृदयको शान्ति प्राप्त होनेसे एक प्रकारका आनन्द आने लगेगा। और सच तो यह है कि चाहे तुमको कितना ही कष्ट मालूम हो, पर रहना चाहिए तुमको घरमें बैठ कर ही। क्यों कि रँडापा काटना तलवारकी धार पर खेलनेसे कुछ कम मुश्किल नहीं है। यही कारण था कि पहले समयकी

स्त्रियाँ रँडापेसे घबराकर आपघात कर लेती थीं और पतिके साथ ही जल मरती थीं। लेकिन तुम यह भी नहीं कर सकती हो, इस वास्ते तुमको तो तलवारकी तेज धार पर ही चल कर अपनी उमर टेर करनी पड़ेगी, अर्थात पूरी पूरी सावधानी रख कर ही अपना रँढापा काटना पड़ेगा।

विधवा बहनो, तुम इस बातसे भी मत घबराओ कि घरसे बाहर न निकलने और मंदिर शिवालय आदिमें न जानेसे तुम्हारे धर्मसाधनमें कुछ फर्क आ जावेगा; क्योंकि सभी लोगोंके धर्मसाधनका मार्ग एक नहीं हुआ करता है। तुम नित्य ही देखती हो कि गृहस्थ लोग तो चौकेसे बाहर निकली हुई रोटी नहीं खाते हैं, लेकिन साधु संन्यासी इन्हीं घरोंसे रोटी माँगकर ले जाते हैं और अपने स्थान पर बैठकर खाते हैं। लोग अपनी जातिके सिवाय और किसीके हाथकी रोटी नहीं खाते, लेकिन ये साधु सन्यासी लोग न तो अपनी जाति बताते हैं और न गृहस्थोंकी जाति पूछते हैं। चुपचाप सभीके घरोंसे रोटी माँगकर ले जाते हैं और खा लेते हैं। गृहस्थ लोग मंदिर शिवालयोंमें जिस प्रकार देवताका पूजन करते हैं, फल फूल आदि अनेक द्रव्य चढ़ाते हैं, उस तरह साधु लोग नहीं चढ़ाते हैं। इसी प्रकारकी और बहुतसी क्रियाये हैं जिनमें गृहस्थ और संन्यासियोंमें भेद है। कारण इसका यह है कि गृहस्थ तो सिर्फ बाहरकी ही क्रियायें करते हैं, अपने शरीरको घो-माँजकर और नहा धोकर ही अपनेको पवित्र मान लेते हैं और इसी कारण अनेक प्रकारकी छूतछात मानते हैं, लेकिन साधु

लोग अपने हृदयके मैलको धोते हैं और मान माया लोभ क्रोध आदि कषायोंका नाश करके अपनी आत्माको पवित्र बनाते हैं। इस वास्ते वे अन्तरंगकी क्रियायें करते हैं और बाहरकी क्रियाओंकी कुछ परवाह नहीं करते।

गृहस्थ लोग खूब जानते हैं कि हमारी बाहरी क्रियाओंसे अन्तरंगकी कुछ भी सफाई नहीं होती है। इसी वास्ते वे परमेश्वरसे प्रार्थना करते रहते हैं कि "मेरे औगुन मत न चितारो, स्वामि मुझे अपना जानकर तारो।" अर्थात् हे परमेश्वर चाहे हममें कितने ही दोष हों तो भी तू हमारे दोषों पर कुछ खयाल मत कर और हमको वैसे ही तार दे। साधु संन्यासियोंके पास भी ये गृहस्थ लोग इसी वास्ते जाते हैं, इसी वास्ते उनकी सेवा चाकरी करते हैं, मंदिर शिवालोंमें भी इसी वास्ते जाते हैं, देवी देवताओंको भी इसी कारण मनाते हैं और तीर्थयात्रा भी इसी कारण करते हैं कि हमको अपने हृदयको तो पवित्र करना न पड़े और अपनी पापक्रियायें छोड़नी न पड़ें, बल्कि अनेक प्रकारके पाप करते हुए भी और हृदयको अत्यंत अपवित्र रखते हुए भी हमको पुण्यकी प्राप्ति हो जावे। परन्तु साधु संन्यासी लोग ऐसा नहीं चाहते। वे तो अपने पापोंको दूर करके अपने आपेको ही सुधारना चाहते हैं। इसवास्ते वे गृहस्थोंकी तरह परमेश्वरकी प्रार्थना करनेके स्थानमें 'सोहम्'का जाप करते हैं, अर्थात् आप ही परमात्मा बनना चाहते हैं और अन्य भी सब ऐसी क्रियायें करते हैं, जिससे अन्तरंगकी शुद्धि हो।

प्यारी बहनो, अब तुम ही अपने हृदयमें विचारो कि तु
गृहस्थोंकी तरह बाहरी धर्म कमाना चाहती हो या सा
ओंकी तरह अपने अंतरंगको शुद्ध करके अपना सच्चा कल्या
करना चाहती हो । तुम अच्छी तरह विचार लो कि तुम
गृहस्थोंकी तरह दुनियादारीकी दलदलमें ऐसी फँसी
नहीं हो जिससे लाचार होकर तुमको भी यही कहना प
कि हमसे तो अपने अंतरंगकी शुद्धि हो ही नहीं सकती है। बल्
तुम तो बड़ी अच्छी तरहसे अपनी आत्माको शुद्ध और पवि
बना सकती हो और दयाधर्म पालकर, पराया उपकार करके
अपने कुटुम्बियोंकी सेवा टहल करके और दुख दर्दमें उन
काम आकर बहुत कुछ पुण्य कमा सकती हो। इस वास्ते तुम
गृहस्थोंकी तरह बाहरी क्रियाओंमें ही उलझे रहनेकी जरूर
नहीं है । फिर तुम क्यों घबराती हो कि घरमें ही बैठे रहने
नित्य मंदिर शिवालयमें न जानेसे, नदी बावड़ी पर स्ना
न करनेसे, साधु संन्यासियोंके दर्शन न मिलनेसे, तीर्थयात्रा न
होनेसे और मेले तमाशे न देखनेसे, हमारे धर्मसाधनमें को
कमी आ जावेगी । तुम निश्चय मानो कि घर बैठनेसे तुम्हारे
धर्मसेवनमें कुछ भी कमी न आवेगी, बल्कि बहुत ज्यादा ज्यादा
बढ़वारी होगी; क्योंकि तुम तो ऊँचे दर्जेका वह उत्तम धर्म
पालन कर सकती हो जिसमें इन बातोंकी जरूरत ही नहीं है।
यकीन मानो कि अगर तुम सच्चा धर्म पालन करोगी और
अपनी आत्माको शुद्ध और पवित्र बनाओगी तो तुमही घर
बैठी पुजोगी और साक्षात् देवी मानी जाओगी ।

विधवाको अपने कुटुम्बियोंके साथ ही रहना चाहिए।

अब सबसे जरूरी और सबसे आखरी बात जो मुझे तुमसे कहनी वह यह है कि शास्त्रमें साधुओं और संन्यासियोंको भी अकेले हनेकी मनाही है, उनके वास्ते भी कई साधु मिलकर इकट्ठा हनेकी आज्ञा है। कारण इसका यह है कि यह मन बहुत ही चंचल और जबरदस्त है, जिसका काबूमें रखना कोई आसान बात नहीं है। अकेला रहने पर यह मन चारों तरफ दौड़ता है और आदमीको अनेक प्रकारके प्रलोभन देकर भ्रमाता है। लेकिन जब कई आदमी इकट्ठा रहते हैं तब उसका दबाव उस पर और उसका दबाव उस पर पड़ता रहता है और यह चंचल मन ज्यादा हाथ पैर नहीं निकालनें पाता, बल्कि बहुत ही कमजोर हो जाता है और दबा रहता है। विधवा बहनो, अब तुम ही विचारो कि जब साधु संन्यासियोंके वास्ते भी अकेले रहनेमें डर है और उनको भी दूसरे साधुओंके साथ ही रहनेकी आज्ञा है, तो तुम्हारे अकेला रहनेमें तो जितना डर माना जावे उतना ही थोड़ा है। तुम्हें तो किसी हालतमें भी अकेला नहीं रहना चाहिए, बल्कि अपने कुटुम्बवालोंमें ही मिलकर रहना चाहिए।

पशुओंको अपना जीवन बितानेके वास्ते एक दूसरेकी सहायता लेने और आपसमें मिलकर रहनेकी जरूरत नहीं है, इस वास्ते वे अलग अलग रहते हैं, परन्तु मनुष्यका तो मनुष्यपना ही यह है कि वह कुटुम्ब बनाकर रहे और एक

दूसरेकी सहायता करे। परन्तु आजकलकी स्त्रियाँ कुछ ऐसी मूर्खा हो गई हैं कि वे भी पशुओंकी तरह बिल्कुल अलग ही रहना चाहती हैं। बल्कि आजकलकी स्त्रियोंको तो अलग रहनेका कुछ ऐसा चावसा होगया है कि अव्वल तो गौने आते ही वे अपनी साससे अलग होना चाहती हैं और अगर उस वक्त वे अपनी साससे अलग न हुईं तो थोड़े दिनों पीछे अपनी देवरानी जेठानीसे तो जरूर ही अलग हो जाती हैं। यद्यपि इस प्रकार जल्द अलग हो जानेसे स्त्रियोंको बहुत कष्ट उठाना पड़ता है, घरका सब कारखाना बारह बाट होजाता है और कुनबेकी आबरू खाकमें मिल जाती है, तो भी आज कलकी स्त्रियाँ अपने अहंकारमें कुछ ऐसी मस्त हैं कि वे सब बुराइयाँ झेलनेको तय्यार हैं, लेकिन इकट्ठा रहनेको तय्यार नहीं हैं। और विधवा होकर तो आज कलकी स्त्रियाँ कुछ ऐसी आपेसे बाहर हो जाती हैं कि उनको एक पलभर भी इकट्ठा रहना नहीं सुहाता है, इस वास्ते वे तो जरूर ही अपना चूल्हा अलग रख लेती हैं और ख्वामख्वाहकी अकड़ मरोड़में आकर अनेक प्रकारके दुख सहती हैं।

मेरी विधवा बहनो, यद्यपि सधवा स्त्रियोंको भी इकट्ठा रहनेहीमें नफा है और अलग रहनेमें नुकसान है, लेकिन तुम्हारा अकेला रहना तो बहुत ही ज्यादह भयंकर और अनेक आपत्तियोंकी जड़ है। इस वास्ते चाहे कुछ भी हो, परंतु अकेली मत रहो। विधवा होनेसे पहलेसे अगर तुम अपनी देवरानी, जेठानी या और किसी सम्बंधीके साथ रहती चली आती हो,

तो अब भी उसी तरह उनके साथ रहती रहो और अगर तुम पहलेसे अलग हो गई थीं तो अब फिर शामिल हो जाओ। अव्वल तो तुम्हारे कुटुम्बी ही अपनी आँख पर ऐसी ठीकरी नहीं रख लेंगे कि विधवा होने पर तुमको अलग कर दें, या फिर दोबारा शामिल करनेसे इनकार करने लगें; बल्कि वे चाहे तो लोकदिखावेके वास्ते हो और चाहे अपने सच्चे हृदयसे हो, एक बार जरूर तुमको अपनेमें शामिल करनेके वास्ते कहेंगे और अगर वे बेशरम होकर न कहें— मुँहफट बनकर शामिल करनेसे इन्कार कर दें, तो भी तुम सौ खुशामदें करके और सौ तदबीरें बना कर उनमें शामिल होनेकी कोशिश करो। क्यों कि अपनी गरज बावली होती है। मसल भी मशहूर है कि "अपनी गरजमें गधेको भी बाप बनाना पड़ता है।"

विधवा बहनो, तुम यकीन मानो कि अपने कुटुम्बियोंमें शामिल होकर रहनेकी तुमको बड़ी ही जबरदस्त गरज आ पड़ी है। क्यों कि रँडापा काटना काले नाग खिलानेके समान है। जिस प्रकार एक पल भरके लिए भी सपेरेके असावधान हो जानेसे और जरा सा भी अपना कर्तब चूक जानेसे साँप तुरंत ही सपेरेको काट खाता है, उसी प्रकार विधवाओंके भी जरा चूक जाने पर उनका सब धर्म कर्म नष्ट होकर नरक जानेकी तय्यारी हो जाती है। इस वास्ते जिन विधवाओंको सच्चा धर्मसाधन करना हो, अपना अगंत सँवारना हो और पापोंसे बचना हो उनको लाख जतन करके भी अपने कुटु-

छोड़ो, बल्कि तुम भी अपनी देवरानी जेठानी और कुटुम्बकी अन्य सभी सुहागन स्त्रियोंकी कदर और पूछ प्रतीत उतनी ही करो जितनी सुहागनोंकी होनी चाहिए और तुम अपनी पूछ प्रतीत सिर्फ उतनी ही कराओ जितनी कि विधवाओंको जरूरत है। देखो, तुम्हारे तो सभी विषय भोग बिदा हो गये हैं, इस वास्ते तुमको तो आयु पूरी करनेके वास्ते रूखे सूखे पेट भर भोजनकी और बदन ढकनेके वास्ते एक आध मोटे झोटे कपड़ेकी जरूरत है। लेकिन सुहागनोंको तो अपनी पाँचों इन्द्रियों और छठे मनका भोग पूरा करना है। इस वास्ते उनको तो दुनियाकी सभी चीजें दर्कार हैं और सब ही चीजोंमें उनको मजेदारी और खूबसूरती भी देखनी जरूरी है। इस वास्ते उनकी इच्छाको पूरी करनेके वास्ते अगर सारा घर भर रातदिन खड़ा न रहे तो काम कैसे चले और तुम्हारे वास्ते अगर कोई सारा दिन खड़ा रहे तो क्या तो वह तुम्हारा काम करे और क्या तुम्हारी पूछ पुर्शिश करे।

अब रही तुम्हारे मैकेकी बात, सो वहाँ भी तुम्हारे जाते ही दो चार दिन तो खूब रोना धोना और हाय कलाप रहते हैं, सब ही रोते हैं और तुम्हें रुलाते हैं; पर चार दिनके बाद तुम्हारे भाई भावज और चाची ताई सब अपने अपने धन्धेमें लग जाते हैं और रोना धोना छोड़कर अपने अपने आनन्दोंमें ऐसे मग्न हो जाते हैं मानो उनको यह खयाल ही नहीं है कि हमारे घरमें कोई अभागिनी विधवा भी आई हुई है। हाँ, एक

तुम्हारी माँके हृदयसे तुम्हारे दुःखका खयाल सौ कोशिशें करने पर भी दूर नहीं होता है। वह तो रह रह कर तड़पती है और यही चाहती है कि किसी तरह अपनी बेटीका दुख चूँट कर अपने लगा लूँ और धधकते अंगारों पर लोटती हुई अपनी दुलारीको गोदमें उठा कर जलनेसे बचा लूँ। पर जब उसका भी कोई बस नहीं चलता, तो वह भी सब्र करके बैठ जाती है और मन मसोस कर रह जाती है। पाँच सात दिन आँखें गलानेके बाद जब रोते रोते उसकी आँखोंमें भी पानी नहीं रहता और जब वह यह देखती है कि मेरे रोनेसे मेरी दुखिया बेटीको दुगनी दुगनी चोट लगती है तब वह भी छाती पर पत्थर बाँधकर चुप हो जाती है, तुम्हें भी सब्र करनेके वास्ते समझाने लगती है, और फिर आहिस्ता आहिस्ता एक दो दिन पीछे वह भी अपने कुटुम्बके आनन्द-में लग जाती है और घरकी हँसी खुशीमें शामिल हो जाती है।

यदि वह बेचारी ऐसा न करे तो करे क्या? क्योंकि उसको जैसी तुम्हारी मुहब्बत है वैसी ही अपने बेटों पोतों और उनकी बहू बेटियोंकी भी है। इस कारण उसको उन सबकी हँसी खुशीमें शामिल होना और उनके साथ हँसना खेलना उतना ही जरूरी है जितना कि तुम्हारे दुखमें दुखी होना। इस वास्ते तुम्हारी माँका तो यह हाल होता है कि उसकी एक आँखमें आँसू होते हैं और दूसरी आँखमें हँसी खुशी। इस कारण वह एक बातमें हँस कर और एक बातमें रोकर ही अपना दिन काटती है

और माँग कर खानेवाली होती है। सभी जानते हैं कि बेटी न-माना धन है। इस वास्ते मुझको तो यहाँ नमानी बनकर ही रहना चाहिए और पराये घरोंसे आई हुई इन भावजोंको मेरी मुहब्बत हो भी क्यों, मुझे ही इनकी क्या मुहब्बत है, इस वास्ते इनके कहने सुननेका गिला भी क्या? मैं यहाँ कुछ इनके भरोसे थोड़ी ही आई हूँ जो इनका गिला करूँ। जीते रहो मेरे भाई भतीजे जिनके कारण मैं यहाँ आई हूँ। सो अभी तो कुछ दिन उनमें और रहूँगी और जब उनकी टहल करके अच्छी तरह जी भर जावेगा तब जाऊँगी।

देखो मेरी माँ बेचारी कितनी दुखी रहती है। वह अपने दुखदर्दकी बात किससे कहे और किसको सुनावे। गए घरोंकी आई हुई इन भावजोंने मेरे भोले भाइयोंको ऐसा बसमें कर रक्खा है कि माँसे बात तक भी नहीं करने देती हैं, बल्कि आप ही झूठी सच्ची लगा कर और उन बेचारोंका मन फाड़ कर घरका मटिया मेट करती रहती हैं। इनहींके कारण मेरे तीनों भाइयोंके तीन रस्ते हो रहे हैं। माँ बेचारी सोच सोचमें ही मर रही है, सूख सूखकर काँटेसी हो गई है। अब मेरे यहाँ आने पर जबसे उस बेचारीने अपनी कही और मेरी सुनी तबसे उसका जी कुछ हलकासा हुआ है। ना साहब, चाहे मेरी भावजें मेरे सौ जूते भी मारें और बाँह पकड़ कर भी निकालना चाहें तब भी मैं अभी नहीं जानेकी हूँ, बल्कि

माँको अच्छी तरह समझाकर और उसकी अच्छी तरह तसल्ली करके तबही हिलूँगी यहाँसे।

ऐसा विचार करके तुम मैकेमें ही रहने लगती हो और अपनी भावजोंकी खूब टहल करके उनको राजी रखनेकी कोशिश करती हो जिससे वे तुम्हारे वहाँ ठहरनेको बुरा न समझें और कोई बात मुँह पर न लावें। तुम्हारी भावजें भी तुमसे नौकरनी या टहलनीकी तरह काम लेने लगती हैं और तुमको काममें मुस्तैद देखकर तुम्हारे भाई भतीजे और छोटे बड़े सभी हर एक काम तुमसे ही लेने लगते हैं। गरज यह है कि इस तरह तुम्हारे मैकेवालोंको बेतनख्वाहका एक बेउजर नौकर मिल जाता है जिससे वहाँ तुम्हारे कुछ दिन कट जाते हैं। परन्तु कुछ दिन पीछे वहाँसे भी जी उचाट होता है और फिर सुसराल जाना सूझता है। वहाँ जाकर भी दो चार महीने तो ज्यों त्यों जी लगता है परन्तु फिर पहलेकी तरह मन उचाट हो जाता है और कुटुम्बके सब लोग दुश्मन नजर आने लगते हैं।

विधवा बहनो, अपनी इस सारी कथाको—जो हमने विस्तारके साथ लिखी है—खूब गौरके साथ पढ़ोगी तो तुमको मालूम हो जावेगा कि अपना मन स्थिर न होनेके कारण ही तुमको सारी उमर इस प्रकार भटकना पड़ता है और अपनी अवस्थाको ठीक ठीक न समझनेके सबब ही घरके सब लोग बैरी दिखाई देने लगते हैं। अगर तुम्हारा मन ठिकाने हो और

तुम अपनी अवस्थाको अच्छी तरह पहचान लो, तो न तो तुम्हारा मन भटके, न तुम्हें कुछ दुख हो और न ये कुटुम्बी लोग तुमको पराये मालूम हों, बल्कि सभी काम ठीक बैठ जावें। देखो, यदि सुहागन स्त्रियाँ अपनी सुसरालमें रह कर सिंगार न करें, चटक मटक न दिखावें और बात बातमें नखरे न करें तो बदतमीज और फूहड़ कहलावें; परन्तु अगर वही स्त्रियाँ अपने बापके यहाँ जाकर भी सिंगार करने लगें और चटक मटक दिखाने लगें तो बेशरम और निर्लज्ज समझी जावें। क्यों कि सुसरालमें उनकी कुछ और अवस्था होती है और मैकेमें कुछ और। मैकेमें रहते हुए तो उनका यही काम होना चाहिए कि आप तो वे बिल्कुल ही सादगीसे रहें, परन्तु अपनी भावजोंको खूब बढ़िया सिंगार करावें, उनको चटक-मटकवाली बनावें, उनके नखरे उठावें और इसी बातमें आनन्द मनावें।

मेरी विधवा बहनो, इसी प्रकार तुम्हारी भी अब यही अवस्था है कि अपनी सुहागन देवरानियों जेठानियोंको आनन्द मंगल मनाती हुई देखकर तुम भी उनके साथ आनन्द मंगल मनाओ और जिस प्रकार सारा घरभर उनको राजी रखने, उनकी इच्छाओंको पूरी करने और उनके सब नखरे उठानेके लिए तय्यार रहता है उसी तरह तुम भी करो और उनकीही खुशीमें अपनी खुशी समझो। देखो अगर एक ही माँ-बापके दो बालकोंमें एक बेटा और एक बेटी होती है तो वही माँ बाप

उनकी हरएक बातमें कितना अन्तर कर देते हैं। बेटेको जैसा अच्छा खाना और अच्छा कपड़ा मिलता है वैसा बेटीको नहीं मिलता। बेटेका जिस प्रकार लाड़ लड़ाया जाता है, जिस तरह उसकी जिद पूरी की जाती है और जिस प्रकार उसकी भली बुरी सही जाती है बेटीके साथ उस तरहका वर्ताव कदाचित् भी नहीं होता है। यहाँ तक कि बेटीको जो आधी-धोधी और गिरी पड़ी चीज मिलती है यदि उसको भी बेटा माँगने लगता है तो बेटीसे छीनकर उसको दे दी जाती है और अगर कभी दोनों बहन भाई लड़ पड़ते हैं और कुसूर भी बेटेका ही होता है तो भी धमकाया जाता है बेटीको ही कि—अगर यह तेरा भाई तुझपर ज्यादती भी करता था तो करने दिया होता, कुछ मर तो न जाती तू इसकी ज्यादती करनेसे, तू क्यों लड़ी इससे ?

मेरी विधवा बहनो, बेटाबेटीके साथ वर्तावका यह अन्तर नित्य सभी घरोंमें देखनेमें आता है, परन्तु क्या ऐसे अनोखे वर्तावसे बेटी इस बातका रोस करती है कि क्यों मेरे साथ तो ऐसा बुरा वर्ताव और मेरे भाईके साथ ऐसा अच्छा वर्ताव किया जा रहा है ? क्या मैं उसही माँके पेटसे पैदा नहीं हुई हूँ जिस पेटसे कि मेरा भाई पैदा हुआ है और फिर उसको तो क्यों ऐसे लाड़ लड़ाये जाते हैं और मैं क्यों ऐसी तुच्छ समझी जा रही हूँ ? विधवा बहनो, तुम खूब जानती हो कि ऐसे रंज भरे विचार न तो किसी बेटीको पैदा ही होते हैं और न उनको ऐसे विचार

पैदा होने ही चाहिए, बल्कि वे तो खूब अच्छी तरह जानती हैं कि हमारी अवस्था और है और हमारे भाईकी और। इसी वास्ते वह खुद भी अपने भाईको लाड़ लड़ानेमें खुश होती है, सौ कष्ट उठाकर अपने भाईको प्रसन्न रखनेकी कोशिश करती है, अपने भाईके सर्व प्रकारके चाव मनानेमें ही आनन्द मनाती हैं और अपने भाईको ही देख देखकर जीती है तथा अंगमें फूली नहीं समाती है। मेरी विधवा बहनो, तुमको भी इसी प्रकार समझना चाहिए कि तुम्हारी अवस्थामें और तुम्हारी सुहागन देवरानी जेठानियोंकी अवस्थामें तुम्हारे विधवा होनेके दिनसे ही धरती आकाशका अन्तर होगया है। इस वास्ते उनके लाड़ चाव होते देखकर तुमको रोस नहीं करना चाहिए, बल्कि तुमको भी यही मुनासिब है कि तुम भी उनकी ही खुशीमें खुशी मनाओ, उनके सब नखरे थामो और उनके ही आनन्दमें आनन्द मानकर अपना सब दुख भूल जाओ।

विधवा बहनो, गृहस्थीके मंगल-कारजोंमें जो तुम मनहूस समझी जाती हो उसका कारण यही है कि उस समय सब लोग तो आनन्द मना रहे होते हैं और तुमको रोना आता है, और अगर तुम लोकलाजसे अपने उस रोनेको जाहिरमें रोकती भी हो तो भी तुम्हारे अन्तरंगके भाव तुम्हारे चेहरेपरसे साफ साफ दिखाई देते रहते हैं। ऐसी अवस्थामें तुम ही इन्साफ करो कि-अपने शुभ कारजोंमें गृहस्थोंका तुमको मनहूस समझना सच है या झूठ। अगर तुम अपने अन्तर-

को साफ कर लो और दूसरोंका आनन्द मंगल देखकर यर्थ रीस करना छोड़ दो, बल्कि सदा सबका भला ही ाहती रहो, और उनकी बढ़वारी देखकर हृदयसे खुश होती हो तो क्यों कोई तुमको मनहूस माने, क्यों तुम्हारे कुटुम्बके लोगोंका तुमसे मन फटे और फिर क्यों तुम न्याद-ीसी पड़ी रहो ?

विधवा बहनो, अगर तुम दिलसे अपने कुटुम्बवालोंको चाहने लगो, सच्चे दिलसे उनके ही आनन्दमें अपना आनन्द मानो, रात दिन उनकी ही टहल चाकरीमें लगी रहो और अपने मनका भटकाना छोड़ दो, तो तुम्हारा रँडापा भी सुखसे कट जावे और कुटुम्बवाले भी अपनी गरजसे तुम्हारी कदर करने लगें—तुमको अपने सिरपर बिठाने लगें।

सारांश इस सारे कथनका यह है कि कुटुम्बवालोंसे अलग रहकर तुम्हारा रँडापा अच्छी तरह कटना बहुत मुश्किल है, इस वास्ते सौ यत्न करके तुम उनहीमें शामिल हो जाओ और उनमें ऐसी बनकर रहो जिससे वह एक दिनके वास्ते भी तुम्हारा अलग होना पसन्द न करें, अपने भाई भतीजोंसे मिल आनेके वास्ते कभी दो दिनके लिए भी तुमको मैके न जाने दें और अगर तुम चली जाओ तो जे दिन तुम अपने मैकेमें रहो उतने दिन तुमको याद कर करके तड़पते रहें और तुम्हारे वापिस बुलानेका तकाजा बराबर करते रहें।

जिन जिन बहनोंको यह पुस्तक प्राप्त हो उनसे मेरी प्रार्थना है कि वे दयाधर्मको हृदयमें धरकर और अपनी सर्व विधवा बहनोंके कल्याणका खयाल करके अपनी दूसरी बहनोंको भी यह पुस्तक दिखावें, उनको पढ़कर सुनावें, और खुद भी बार बार पढ़ें। जितनी वार हमारी बहनें इस पुस्तकको पढ़ेंगी उतनी ही बार उनको नया नया रहस्य इसमेंसे मिलेगा और हृदयमें शांति आवेगी। विधवा बहनोंके हृदयकी तड़पको दूर करनेके वास्ते यह पुस्तक महा मंत्रके समान है और उनके पाप कर्मोंको काटकर उनका अगला सुधारनेके लिए यह पुस्तक महा ओषधि है। परन्तु इसे तोतेकी तरह रटलेनेसे कुछ काम नहीं बनेगा, हाँ जो कोई भी इसके लिखे अनुसार चलेगी उसका जरूर कल्याण होगा।

बोलो मेरी बहनो सब मिलकर कि "सदा सबका भला हो और परोपकार तथा दयाधर्मकी जय हो।"

समाप्त।
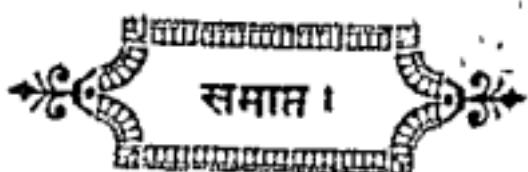
स्त्रियोपयोगी उत्तम साहित्य ।

यह प्रसन्नताकी बात है कि, स्त्रियोंमें पढ़ने लिखनेका प्रचार होता जाता है । शहरोंकी रहनेवाली धनी और मध्यम स्थितिकी स्त्रियोंमें तो पुस्तकें पढ़ना व्यसनका रूप धारण करता जाता है । परन्तु अनुभवी विद्वानोंका विचार है कि स्त्रियोंको बुरे साहित्यके पढ़नेकी लतसे बचाना चाहिए और उन्हें अच्छी उपयोगी और चरित्र सुधारनेवाली पुस्तकें ही पढ़नेके लिए देनी चाहिएँ । धार्मिक ग्रन्थ तो उन्हें खास तौरसे पढ़नेके लिए दिये जाने चाहिएँ । हम अपनी समझके अनुसार नीचे एक छोटीसी पुस्तक-सूची देते हैं, जो स्त्रियोंके लिए बहुत विचारके साथ तैयार की गई है । विधवा बहनोंको चाहिए कि वे अपने पास सीखनेके लिए आनेवाली और परिचय रखनेवाली स्त्रियोंको उनकी योग्यता और आवश्यकताके अनुसार इनमेंसे पुस्तकें चुन कर मँगा दिया करें ।

चरित्र सुधारनेवाली पुस्तकें ।

१ गृहदेवी और २ ब्याही बहू । ये दोनों पुस्तकें इसी पुस्तकके लेखक श्रीयुत बाबू सूरजभानजी वकीलकी लिखी हुई हैं, इस लिए इनकी प्रशंसा करना व्यर्थ है । दोनों पुस्तकें पढ़ने योग्य हैं । पहलीका मूल्य चार आने और दूसरीका तीन आने है ।

गृहिणीभूषण । इसमे पतिप्रेम, सतीत्वरक्षा, स्वजनवात्सल्य, गृहप्रबन्ध, माताका कर्तव्य, आदि स्त्रियोंके २४ श्रेष्ठ गुणोंका वर्णन बड़ी सरलतासे किया है । मूल्य ।॥)

गृहिणीकर्त्तव्य । इसकी भाषा तो कुछ कठिन संस्कृतमिश्रित है, पर पुस्तक बहुत ही अच्छी है। गृह, गृहस्थाश्रम, पंचमहायज्ञ, समय

२ मितव्ययिता या गृहप्रबन्ध शास्त्र। मूल्य ॥≈)

उपन्यास।

आज कल उपन्यास बहुत बदनाम हो रहे हैं। नीचे लिखे उ न्यास बहुत ही शिक्षाप्रद और चरित्रसंशोधक हैं:—

प्रतिभा मू० १)	सरस्वती १)
अन्नपूर्णाका मन्दिर ॥)	मिलनमन्दिर १॥)
शान्तिकुटीर ॥≈)	शारदा ।≈)
आदर्श दम्पति ।≈)	हिन्दू गृहस्थ ॥)
गृहलक्ष्मी १)	उमा १)

चरित्र कहानी आदि।

सच्ची स्त्रियाँ ॥)	सच्ची और मनोहर कहानियाँ ॥)
राजपूतानेकी वीर रानियाँ ॥)	देवी जौन (फ्रान्सकी वीर नारी) ॥)

नोट—इनके सिवाय और भी बहुतसी पुस्तकें हैं जिनके नाम स्थानाभावसे नहीं लिखे जा सके। सूचीपत्र मँगाकर देखिए।

मिलनेका पता—

मैनेजर **हिन्दी-ग्रन्थरत्नाकर कार्यालय,**

हीराबाग, पो० गिरगाँव, बम्बई।

समर्पण-पत्र।

स्वर्गवासिनी सौभाग्यवती श्रीमती भगवती देवी की

पवित्र आत्मा को प्रेम-पुष्पांजलि स्वरूप

"स्वराज्य-सोपान"

सादर तथा सप्रेम

समर्पित।

शोक सन्तप्त पति—

भगवत प्रसाद शुक्ल।

भारतवर्ष ने स्वतन्त्र होने के महदुद्देश्य से प्रेरित हो शान्तिपूर्ण असहयोग की जो शरण ली है वह समयोचित और भारत के योग्य ही है। इसी एक ज़बरदस्त उपाय के अवलम्बन से भारतवर्ष शीघ्र ही स्वतन्त्र होगा। इस में तिलमात्र भी सन्देह नहीं।

प्राचीन भारत की एक हलकी झलक, वर्तमान अधोपतित अवस्थाका धुंधला खाका और हमारे कर्तव्य की सरल तथा महत्वपूर्ण विधिगति इस छोटी सी पुस्तक में बतलाने की मैंने धृष्टता की है। भारत की दासता की कड़ी ज़ञ्जीरों को तोड़नेमें यदि पाठकों ने इससे ज़रा भी लाभ उठाया तो मैं अपने इस परिश्रम को सफल समझूँगा।

देशका एक तुच्छ सेवक,
भगवतप्रसाद शुक्ल।

छिन्दवाड़ा (मध्यप्रदेश)
१५-६-२१।

स्वराज्य-सोपान।

(१)

संसार के इतिहास-पृष्ठों को उलटने से पता चलता है कि जिस समय आधुनिक सभ्य देश अज्ञानान्धकार की घोर निन्द्रा के वशीभूत हो खुर्राटे भर रहे थे उस समय भारतवर्ष के सौभाग्य—सूर्य की स्वर्णमयी मधुर किरणें समस्त संसार को आलोकित कर रही थीं। विद्या, बल, सम्पत्ति, कला-कौशल और संसार की आँखों को चौंधिया देने वाली श्रेष्ठ सभ्यता रूपी अनेक सुख-सौन्दर्य-पूर्ण नदियां भारत-समुद्र में आ मिली थीं। इनके समागम से अद्वितीय प्राकृतिक सौन्दर्यागार भारत समस्त संसार का सब बातोंमें, गुरू बन बैठा था। उस समय के भारत की सभ्यता और श्रेष्ठता की संयुक्त श्री-द्युति के सामने इन्द्रपुरी का सुख-सूर्य भी फीका जान पड़ता था।

जिस समय यह देश स्वतन्त्र, समृद्धिशाली तथा सुशिक्षित था उस समय अपने जीवन की समस्त आवश्यकताओं को पूरी कर यह अन्य देशों की भी अधिकांश आवश्यकताओं को पूर्ण करता था। इस विश्व में, सूर्य के नीचे, ऐसा कोई भाग्यशाली देश नहीं जो भारतवर्ष का किसी न किसी रूपमें ऋणी न हो। किसी ने यहां के साहित्य का सहारा ले अपने स्वतन्त्र और सभ्य-श्रेष्ठ कहलाने वाले साहित्य-भवन का निर्माण किया है, किसी ने यहां की युद्ध-विद्या का सहारा ले इस समय संसार को छका देने वाले नाना प्रकार के भयङ्कर और खूंखार वैज्ञानिक युद्धास्त्रों का आविष्कार किया है और किसी ने यहां की जगद्विख्यात पवित्र राजनीति के सहारे अपनी स्वार्थ-सिद्धि के लिये परोपकार और न्याय का ढोंगी जामा पहन मक्कारी और दग़ाबाज़ी से दूसरों का समूल नाश कर स्वार्थप्रधान सुदृढ़ राजनैतिक चक्रव्यूह बनाया है। सारांश यह कि प्राचीन भारत के सर्वश्रेष्ठ कलाकौशल और साहित्य की नक़ल करने से ही आधुनिक सभ्य संसार अपनी निस्सार भौतिक उन्नति कर सका है।

भारत की वर्तमान शोचनीय अवस्था के वास्तविक कारणों को भली भाँति समझने के लिये हमें उसके अतीत इतिहास की ओर एक दृष्टि अवश्य डालनी होगी। इसी इतिहास के द्वारा हम को इस बात के समझने में सहायता मिलेगी कि किन किन परिस्थितियों के उपस्थित होने के कारण इस देश में ऐसा भीषण परिवर्तन हुआ।

हिन्दू-राजत्व काल में यह देश इतना अधिक सुखी और सन्तुष्ट था कि जिसकी समता आधुनिक किसी भी सभ्य देशसे नहीं की जा सकती। यहां का शासन सदा प्रजा की इच्छानुसार होता था। स्वाधीन और शक्तिशाली होते हुए भी भारतीय शासक स्वेच्छाचारी न थे। ये बड़े प्रजावत्सल थे। अपने स्वार्थ के लिये प्रजा के गले पर छुरी चलाना इन लोगों ने सीखा ही न था। यदि इनके धन-धाम स्त्री-पुत्र-कलत्र तक के त्यागने से प्रजा का लाभ हो सकता था तो ये लोग खुशी से इस माया और ममता को भी लात मारने को तैयार रहते थे। प्रजावत्सल हिन्दू राजाओं के समय में यह देश धन-धान्य से सदा परिपूर्ण रहता था। विद्या का यहां ज़रा भी अभाव न था

सरस्वती के पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के लिये किसी को भी किसी प्रकार की असुविधा न थी। लक्ष्मी-पुत्र, निर्धन, ब्राह्मण, शूद्र, सब पक्षपात रहित विद्या प्राप्त करनेके समान अधिकारी समझे जाते थे। सारी प्रजा को सुशिक्षित बनाने के लिये राजा लोग राजकोष से प्रचुर सम्पत्ति व्यय करते थे। इसी कारण देश के एक कोने से लेकर दूसरे कोने तक ढूंढ़ने पर भी कोई अशिक्षित न मिलता था। आज कल संसार में ऐसी कोई भी विद्या विद्यमान नहीं जो उस समय यहां प्रचलित न रही हो। विज्ञान और चिकित्साशास्त्र में इस देश ने जो उन्नति की थी, अभी तक उसका मुकाबिला किसी देश ने करके नहीं दिखलाया है। भारतवर्ष ने अजेय आध्यात्मिक शक्ति के प्रताप से जो असीम आश्चर्यजनक आविष्कार सब बातों में, कर दिखाया है उस को आधुनिक सभ्य कहलानेवाला भौतिक संसार न अभी तक कर सका है और न भविष्यमें उसके करसकने की ही आशा है।

समस्त विद्याओं में ही नहीं, भारतवर्ष ने व्यापार में भी बड़ा नाम कमाया था। यहां का व्यापार मुसलमानी राजाओं के काल तक उन्नति की

उच्चतम सीढ़ी पर आरूढ़ रहा। संसार में ऐसा कोई देश न था जहां भारतवर्ष ने व्यापार न किया हो। यहां की चीजें इतनी अच्छी और सस्ती बनती थीं कि संसार के सब देश के बाज़ारों में इन की चाह होती थी। अन्य देशवासी यहां की चीजों को बड़े चावसे ख़रीदते थे। यहां यह बात स्मरण रखना चाहिये कि भारतवर्ष ने किसी देश का ज़बरदस्ती गला घोंट कर अपने व्यापार की उन्नति नहीं की थी। जिस प्रकार यहां के व्यापारी अन्य देशों में व्यापार करते थे, उसी प्रकार दूसरे देशों के व्यापारियों को भी यहां आकर व्यापार करने की पूर्ण सुविधा और स्वतन्त्रता थी। यह दूसरी बात है कि अन्य देशवाले अज्ञानी और असभ्य होने के कारण इस देश से व्यापार न कर सके हों। जिस प्रकार भारत ने अन्य देशवासियों के लिये यहां आकर स्वतन्त्र रूप से व्यापार करने का दरवाज़ा खोल रखा था, कुछ समय के पश्चात् उन्हीं देशों ने भारतवासियों को वहां जाकर व्यापार करने की ज़रा भी स्वतन्त्रता न दी। इस बातका विस्तृत और सप्रमाण वर्णन आगे किया जायगा।

वस्त्र-व्यवसाय के सदृश ही भारतवर्ष नौ-व्यवसाय केलिये भी प्रसिद्ध था। वैदिक काल से लेकर मुसलमानी काल तक यह व्यवसाय यहां बड़ी अच्छी तरह से चलता रहा। बड़े छोटे सब प्रकार के जहाज यहां बनते और दूर दूर के देशों में बिकने के लिये जाते थे। युक्त कल्पतरु में भिन्न भिन्न भारतीय नौकाओं की जो लम्बाई चौड़ाई दी है उससे यह स्पष्ट है कि भारत में यह व्यवसाय बहुत उन्नति कर चुका था। *

नाम	लम्बाई (क्यूबिट्समें)	चौ० (क्यू०में)	ऊंचाई (क्यू०में)
क्षुद्रा	१६	४	४
मध्यमा	२४	१२	८
भीता	४०	२०	२०
चपला	४८	२४	२४
पटला	६४	३२	३२
भया	७२	३६	३६
दीर्घा	८८	४४	४४
पत्रपुटा	९६	४८	४८
गर्भरा	११२	५६	५६

* श्रीयुक्त प्राणनाथजीके भारतीयसम्पत्तिशास्त्रके आधारपर।

मन्थरा	१२०	६०	६०
जौपाला	१२८	१६	१२$\frac{४}{५}$
धारिणी	१६०	२०	१६
वेगिनी	१७६	२२	१७$\frac{२}{३}$

पञ्जाब की सिन्धु नदी में उपर्युक्त आकार की नौकाएँ हज़ारों की संख्या में रहा करती थीं। सिकन्दर ने जिस समय भारतवर्ष पर आक्रमण किया था, उस समय उसने यहीं से दो हज़ार नौकाएं प्राप्त की थीं। महाराज चन्द्रगुप्त के काल में जल-सेना तथा नौका प्रबन्ध के लिये एक पृथक ही सभा रहा करती थी। अन्ध्र-कुशान काल में, जब कि भारत का व्यापार रोम के साथ प्रारम्भ हुआ तब, यहां के नौ-व्यवसाय को बहुत ही अधिक उत्तेजना मिली थी। गुप्त और हर्षवर्धन के समय तक भी यह नौ-व्यवसाय पूर्ववत् हरा भरा बना रहा। कालिंग के पूर्वीय राज्यों में ऐसे बहुत से शिला लेख मिले हैं जिन से विदित होता है कि उस समय राजा लोग पोत-विद्या को खूब उत्तेजना देते थे। मुसल्मानी राज्य में भी इस देश का नौ-व्यवसाय अच्छी उन्नति पर था।

सिन्ध का प्रसिद्ध बन्दरगाह दीवाल चीनी तथा यूरान के व्यापारियों का केन्द्र था। चीनी जहाज भड़ोंच ठहरते हुए दीवाल जाते थे। बलबन ने सामुद्रिक पोतों के द्वारा ही बङ्गाल को विजय किया था। अकबर के समय में बङ्गाल के निम्न लिखित स्थान व्यवसाय के लिये प्रसिद्ध थे :—

(१) सन्द्वीप (२) दूधाली (३) जहाजघाट (४) चाकरती (५) टण्डा (६) वल्क (७) श्रीपुर (८) सोनार गोयात (९) सत गोयात (१०) घीर,

घाटनगर चिरकाल से बङ्गाल में नौ-व्यवसाय का केन्द्र था। यहां के कुछ उत्साही व्यापारियों ने अपने जहाजों के द्वारा सूस तक यात्रा की थी और रेशम का माल वेचा था। औरङ्गजेब के समय तक भारतीय नौ-व्यवसाय को उन्नति तथा उत्तेजना मिली। जिस समय अंग्रेज लोग भारतवर्ष में आये उसी समय यहां का नौ-व्यवसाय नष्ट किया गया। मिस्टर टेलर ने अपने 'भारतीय इतिहास' में लिखा है कि "हिन्दुस्तानी जहाज जब लन्दन नगर में पहुंचे, उसी समय अंग्रेज कारीगरों में हलचल मच गई। इन लोगों ने भारतीय जहाजों को देखते ही अपने

सत्यानाश को ताड़ लिया। वे कहने लगे कि भारतीय जहाजों के कारण अब उन्हें भूखों मरना पड़ेगा। सन् १८१३ में इंगलिस्तान के अन्दर इस प्रश्न ने भयङ्कर रूप धारण कर लिया। उसी समय से अंग्रेजी राज्य ने अपनी यह स्थिर नीति बना ली कि अब भविष्य में भारतीय नौ-व्यवसाइयों को किसी प्रकार की सहायता न दी जायेगी। इसका परिणाम यह हुआ कि कई सहस्र वर्षों का फला फूला हुआ नौ-व्यवसाय अंग्रेजों के समय में सर्वदा के लिये नष्ट हो गया।

भारतवर्ष का शिल्प तथा चित्रण व्यवसाय भी संसार में अपना सानी नहीं रखता था। अशोक के स्तम्भ, जँगलें, लाटें तथा स्तूपों को जिन कारीगरों ने बनाया था उन्हीं की सन्तानों तथा वंशजों ने मुसलमानी समय की बड़ी बड़ी इमारतों को बनाया था। ताजमहल, हुमायूं का मकबरा और आगरा तथा दिल्ली के किले भारतीय शिल्पियों के शिल्प के ही नमूने हैं। शिल्प के सदृश ही भारतीय चित्रण-व्यवसाय ने भी अपूर्व उन्नति प्राप्त की थी। अकबर

के दरबार में निम्न लिखित चित्रकार प्रसिद्ध थे :—

(१) ताब्रीजके मीर सय्यद अली।
(२) ख्वाजा अब्दुस्समाद।
(३) दस्वन्थ।
(४) बसवान।
(५) केशु।
(६) मुकुन्द।
(७) जल।
(८) मुश्किन।
(९) फ़रुख।
(१०) फाल्मक।
(११) मधु।
(१२) जगन।
(१३) भवेश।
(१४) क्षेमकरण।
(१५) तारा।
(१६) सन्वुल्लाह।
(१७) हरिवंश।
(१८) राम।

इन चित्रकारों की आमदनी का इसी से पता लगाया

जा सकता है, कि अकबर ने रज्मनामा नाम की पुस्तक को छ लाख रुपये में खरीदा था। जहाँगीर के समय में तो चित्रकला ने अकबर के जमाने से भी अधिक उन्नति की थी। पूर्व काल में चित्रकारों की इतनी अधिक इज्जत होती थी कि राजा महाराजा तक उन के साथ मित्रवत् व्यवहार करते थे। हिन्दू राजाओं के समय में राजपूताने में भी शिल्पियों तथा चित्रकारों का अच्छा नाम था। उन को उच्च पद दिये जाते थे। कलकत्ता के राजकीय पुस्तकालय में फारसी की एक हस्तलिखित पुस्तक है उस में ताजमहल बनानेवाले शिल्पियों के मासिक वेतन का ब्योरा इस प्रकार दिया है:—

प्रथम श्रेणी के शिल्पी			१०००)
द्वितीय	,,	,,	८००)
तृतीय	,,	,,	४००)
चतुर्थ	,,	,,	२००)

भारतीय शिल्पकारी की अलौकिकता और विचित्रता का पता पूर्व समय में सुराष्ट्र प्रायद्वीप के दक्षिण में स्थापित सोमनाथ की मूर्ति से लगता है। जिस समय

सन् १०२३ में महमूद गजनवी ने इस मूर्ति पर आक्रमण किया था उस समय वहाँ के पुजारियों को लड़ाई में जीत लेने के पश्चात् उसने इस मूर्ति के तोड़ने का यत्न किया, परन्तु अनेक प्रकार के पाशविक बल का प्रयोग करने पर भी उसे न तोड़ सका। मूर्ति को निरावलम्ब खड़ी देख कर उस के आश्चर्य का ठिकाना न रहा। जब अनेक यत्न करने पर भी वह मूर्ति तोड़ने में सफल न हो सका, तब उस ने अप ने नजूमियों से उस के तोड़ने का उपाय पूछा। नजूमियों ने विचार कर बतलाया कि इस मूर्ति के बनाने में चुम्बक की सहायता ली गई है। चुम्बक के अलग होने पर मूर्ति आप से आप पृथ्वी पर गिर पड़ेगी। इस बात के जानने पर महमूद ने उस मन्दिर की एक दीवाल तुड़वाई। उस दीवाल के टूटते ही मूर्ति उस ओर जरा सी झुक गई। इसके पश्चात् उस ने मन्दिर का कलश तुड़वाया। कलश के टूटते ही मूर्ति पृथ्वी पर गिर कर चूर चूर हो गई। इस मन्दिर का अवशेष चिह्न, कुछ दरवाजे, यहां की कारीगरी की स्मृति सदा जीती जागती रखने के

लिये सन् १८४२ में आगरा लाये गये, जो इस समय भी आगरा के किले में मौजूद हैं। उन की शिल्प-चातुरी देख आज भी जी चाहता है कि उन के बनानेवालों का हाथ चूम लें।

भारतीय स्त्रियों तक ने चित्रण तथा शिल्पकला में ऐसी कुशलता तथा दक्षता प्राप्त की थी कि उनकी कारीगरी को देखकर सारा संसार स्तम्भित तथा चमत्कृत हो जाता था। क्या कला, क्या कौशल, क्या विद्या, क्या वैभव, क्या सुख, क्या सभ्यता सभी बातों में भारत ने हद कर दी थी। परन्तु इस परिवर्तन-शील धरा पर कोई भी भौतिक पदार्थ सदा एकसा नहीं रह सकता। जिस प्रकार दिन के पश्चात् रात्रि का समागम होता है ठीक उसी प्रकार भौतिक उन्नति और अवनति भी हुआ करती हैं। किसी कवि ने ठीक ही कहा है ; "चक्रवत् परिवर्तन्ते दुःखानि च सुखानि च।" भला जिस भारतवर्ष ने उन्नति के उच्च-तम प्रासाद में आरूढ़ होकर सुख और स्वातंत्र्य का अनुपम रसास्वाद चखा है वह सदा एक ही अवस्था में कैसे रह सकता था! अटल प्राकृतिक नियमा-नुसार उस को भी सिर झुकाना पड़ा। अनेक प्रकार

के सुख भोग कर उसको भी परतन्त्रता की दृढ़ शृङ्खला में आवद्ध होकर दुःख की भयङ्कर खाई में गिरना पड़ा। अंग्रेजों के राज्यकाल के प्रारम्भ होते ही यहां की समस्त श्री नष्ट हुई। जिस भारतवर्ष में एक समय सौभाग्य-सूर्य बड़ी शान से चमक चमक क्रीड़ा कर रहा था, वह अस्ताचलगामी हुआ और यहां अमावस्या की घनांधकारमयी रजनी का साम्राज्य स्थापित हो गया। अस्तु।

भारत को विशेषतया व्यापार ने ही समुद्र के उस पार प्रख्यात किया था। इस देश को सोने की खान जानकर पन्द्रहवीं शताब्दी में यहां व्यापार करने की इच्छा से पोर्चुगीज़, डच, फरांसीसी और अंग्रेज लोग आये। अपनी कूटनीति के सहारे अंग्रेजों ने व्यापार के साथ ही साथ कौशल से यहां अपने राज्य की भी जड़ जमाना प्रारम्भ कर दिया। अन्त में सन् १७५७की प्लासी की लड़ाई जीतने के पश्चात् अंग्रेजों के राज्य का खम्भा यहाँ मज़बूती से जम गया। व्यापारी जाति (Nation of shop-keepers) होने के कारण धन कमाना ही इन लोगों का राज्य करने का एक मात्र उद्देश रहा। व्यापारी जाति का मनोवांछित लाभ

दूसरी जाति के व्यापार करते हुए कभी नहीं हो सकता। इस लिये इन्हों ने सब से पहले भारतीय व्यापार को नष्ट करने का संकल्प कर लिया। राजशक्ति का ज़बरदस्त अस्त्र इनके पास था ही। इसकी सहायता से इन्हें अपने मनोभिलषित उद्देश को पूरा करने में पूर्ण सहायता मिली। किस कौशल से अंग्रेज़ों ने भारतवर्ष के व्यापार की हत्या की, इस का कुछ थोड़ासा हाल हम अपने पाठकों को बतलाते हैं।

यह बतलाने की विशेष आवश्यकता नहीं है कि भारतवर्ष का पहले से इंग्लिस्तान के साथ बड़ा घनिष्ट व्यापारी सम्बन्ध था। भारतवर्ष में अकेले इंग्लिस्तान से ही सन् १७०८ से १८२५ तक में व्यापार द्वारा ४२६०१०००००) रु० आये। अंग्रेज लोगों से अपने देश का इतना रुपया भारतवर्ष में आते हुए न देखा गया। उन्होंने बड़ा शोरगुल मचाया और अन्त में अपने यहां भारत का कपड़ा आना रोक ही दिया। इंग्लिस्तान की सरकार ने भारत के वस्त्र-व्यवसाय को रोकने के विचार से सामुद्रिक बाधक कर का निर्माण किया। यदि कोई व्यापारी

वहां जाकर कपड़ा बेचना ही चाहे तो वह सामुद्रिक बाधक कर देकर बेच सकता था। इस सामुद्रिक बाधक कर के लग जाने से भारतीय व्यवसाइयों को वहां जाकर व्यापार करने में लाभ के स्थान में बहुत हानि होने लगी। इस हानि से बचने के लिये उन्हें विवश हो इंग्लिस्तान के साथ व्यापार करने से अन्तिम नमस्कार करना पड़ा। सन् १८१३ से पूर्व तक भारतीय वस्त्रों पर इंग्लिस्तान में राज्य की ओर से जो सामुद्रिक बाधक कर लगे थे उस का ब्यौरा इस प्रकार है :—

भारतीय पदार्थ	इंग्लिस्तान में सामुद्रिक कर १५०००) रु के मालपर
छींट	१०२५) रु०
मलमल	२६०) रु०

रंगीन वस्त्र बेचना बिलकुल बन्द।

सन् १८१३ में यही सामुद्रिक कर इस प्रकार और भी बढ़ाया गया।

भारतीय पदार्थ	इंग्लिस्तान में सामुद्रिक कर १५०००) रु० के माल पर
छींट	११०५) रु०
मलमल	४६०) रु०

रंगीन वस्त्र बेचना बिलकुल बन्द।

भारतीय वस्त्र-व्यवसाय के इंग्लैंड में बन्द हो जाने पर वहां के व्यवसाइयों ने स्वयं ही कपड़ा बनाना प्रारम्भ किया। अंग्रेजों का अभिप्राय केवल इतना ही न था कि वे भारतवासियों का वस्त्र अपने यहां न आने दें वरन् वे चाहते थे कि भारतवासी भारत में भी अपना बनाया हुआ कपड़ा न बेच सकें। सर्वत्र विलायती माल ही बिके। उन लोगों का यह विचार केवल उसी अवस्था में पूर्ण हो सकता था जब कि भारतीय कपड़ा बनाने वालोंका पूर्ण रूप से सत्यानाश हो जाता। हुआ भी ऐसा ही। अंग्रेज लोग किस प्रकार भारत के व्यवसाय को नष्ट करने पर उद्यत थे इसका थोड़ा पता सन् १८५० के दो अंग्रेजों की निम्नलिखित बातचीत के मर्मांश से लग जावेगा। *

मान्टगोमरी मार्टिन—हमलोगों ने गत २५ वर्षों से भारतवासियों को अपना बनाया हुआ माल खरीदने के लिये विवश किया है। हम लोगों के

---

* श्रीयुत महादेव दुच देसाई के Bombay chronicle में प्रकाशित "How India's Industry was ruined" नामक लेख के आधार पर।

ऊनी कपड़ों पर किसी प्रकार का भी कर निर्धारित नहीं किया जाता, हम लोगों के सूती कपड़ों पर केवल ३॥ प्रति शत कर निश्चित किया गया है। इधर हम लोगों ने भारतीय व्यवसाय रोकने के लिये उन लोगों के माल पर १० से लेकर १००० प्रति शत कर लगा दिया है। अर्थात् १००) रुपये के माल पर भारत वासियों से १० से लेकर १०००) रु० तक कर के रूप में वसूल किये जाते हैं। १००) रु० का माल और उस पर १०००) रु० कर, गज़ब हो गया! आज कल यहाँ भारतवर्ष के साथ स्वतन्त्र व्यापार करने के लिये लोगों ने आवाज उठाई हैं। सच पूछो तो स्वतन्त्र व्यापार हो ही रहा है। इस देश का जो व्यापार भारत में होता है वह तो स्वतन्त्र है ही। उस पर नाममात्र केलिये ज़रा सा कर लगाया गया है। भारत का इस देश में जो व्यापार होता है वह वास्तव में स्वतन्त्र नहीं। उस को रोकने के लिये भयंकर कर लगा दिया गया है। भारतीय व्यवसाय के सूरत, ढाका मुर्शिदाबाद प्रभृति केन्द्र स्थानों का जिस प्रकार नाश और अधःपतन हुआ है, उस को स्मरण करने से बड़ा दुःख होता है। मेरी समझ में

व्यापारिक दृष्टि से इस विषय में न्याय नहीं किया गया। यहां "जिसकी लाठी उसकी भैंस" वाली उक्ति चरितार्थ की गई है।

ब्राकलहर्स्ट—इस देश का कल्याण किसी न किसी देश के जुलाहों का अधःपतन हुए विना कैसे हो सकता था। भारतीय जुलाहों का अधःपतन हमारे लाभ के लिये ही हुआ है। क्या अब आप इस देश का गला घोंट कर भारतवासियों का पुनरुत्थान करना चाहते हैं?

मार्टिन—मैं उसका पुनरुत्थान नहीं करना चाहता। मैं केवल भारत के साथ जो लगातार अत्याचार किया जा रहा है उस को रोकना चाहता हूं। इस से यह बात सिद्ध नहीं होती कि भारतीय व्यवसाइयों के यहाँ आ कर रोज़गार करने देने पर प्रतिद्वन्दिता न करने के कारण विलायती जुलाहों का नाश होगा। उस का बड़ा ज़बरदस्त कारण यह है कि भारतीय जुलाहों के पास इतनी अधिक प्रचुरता में शक्ति-यंत्र, बुद्धि और मूलधन नहीं है जितना कि ग्लासगो और मैनचेस्टर में है।

ग्राकलहर्स्ट—असली दारमदार तो पूर्णतया अच्छे कपड़ों पर ही है जो शक्ति-यंत्रों के द्वारा कभी बनाये ही नहीं जा सकते। विचारणीय बात यह है कि हमको अपने देशमें उत्तमोत्तम कपड़े बनाना चाहिये या उन के बनाने का विचार ही छोड़ देना चाहिये।

मार्टिन—यदि भारत के साथ अन्याय कर के इस व्यापार को उत्तेजना दी जाती है तो मेरा कहना इतना ही है कि यह सर्वथा अनुचित और निन्दनीय है। परिणाम का जरा भी खयाल न कर के न्यायानुकूल काम करना ही उचित है। इंग्लैंड ने जिस देश पर विजय प्राप्त की है उस को अपने या अपनी जाति के कुछ आदमियों के लाभ के लिये नष्ट कर डालने का कोई अधिकार नहीं है।

ग्राकलहर्स्ट—सन् १८३३ में, जिस समय भारतवर्ष इंग्लैंडके अधीन हुआ, उसी समय उसके कपड़े का व्यवसाय नष्ट हो गया। इस लिये अब उस बात पर विचार करने की तो कोई आवश्यकता ही नहीं है। जो कुछ होना था सो हो गया। 'गतम् न शोचाम्यकृतम् न मन्ये' पर ही सन्तोष करना

चाहिये। यह बात तो इस समय स्पष्ट प्रकट हो रही है कि भारतवर्ष व्यवसायी होने की अपेक्षा अधिक कृषि-प्रिय है। जो लोग पहले व्यवसाय करते थे वे अब कृषि के उद्योग में लग गये हैं। यदि इस देशमें व्यवसाय बंद कर दिया जाय तो क्या आप सोचते हैं कि यहाँ भी लोग कृषि-कर्म करने लगेंगे ?

मार्टिन—मैं यह बात मानने के लिये बिलकुल तैयार नहीं कि भारतवर्ष कृषिप्रधान देश है। भारतवर्ष जितना कृषि-प्रिय देश है उतना ही व्यवसाय-प्रिय भी है। जो लोग उसे कृषि प्रधान देश बनाने की चेष्टा करेंगे वे मानो उसकी सभ्यता को ही कुचलने का प्रयत्न करेंगे। मैं यह नहीं चाहता कि भारतवर्ष इंग्लैंड के लिये अन्न उपजाऊ खेत बन जाय। वह व्यवसायी देश है। उसका अनेक प्रकार का व्यवसाय शताब्दियों से होता चला आ रहा है। संसारका कोई भी देश उसको इस बात में ईमानदारी से नीचा नहीं दिखा सका है। इस समय मैं उसके ढाका के मल-मल और काश्मीर के शालों की बात नहीं कर

रहा है। उसने अनेक प्रकार की ऐसी ऐसी अद्भुत वस्तुएँ बनाई हैं कि जिनका मुकाबिला संसार के किसी भी देशने नहीं किया है। ऐसे देश को कृषक बनाना घोर अन्याय नहीं तो क्या है?

उपर्युक्त बातचीत से पाठकों को यह विदित हो गया होगा कि भारत के उन्नतशील व्यापार से स्वार्थी अंग्रेजों को कितना भय था और वे उसके नाश करने के लिये—न्याय अन्याय का बिना विचार किये ही—कैसे तुले हुए थे। इस बात की सत्यता पाठक मि० ब्राकलहर्स्ट के विचारों से ही समझ सकते हैं।

सन् १८३३ में चारटर (सनद) बदला गया। इस नई सनद में एक शर्त यह भी रखी गई कि 'ईस्ट इंडिया कम्पनी को अब भविष्य में भारत के साथ किसी भी प्रकार का व्यवसाय न करना चाहिये।' कम्पनी को विवश हो इस शर्त के अनुसार अपना सब भारतीय व्यापार बन्द कर देना पड़ा। इसके कारण भारतवर्ष के व्यापार को बहुत कुछ लाभ हुआ। इससे उत्साहित होकर समस्त भारतीय व्यवसाइयों ने सन् १८४० में परलीमेंट में एक

दरखास्त भेजी, जिसका आशय यह था कि भारतीय व्यवसाय पर सरकार द्वारा जो असहनीय कर निर्धारित किये गये हैं वे सब के सब हटा लिये जायें। इस दरखास्त पर उचित निर्णय करने के अभिप्राय से 'हाउस आफ कामन्स' ने कुछ विद्वान और योग्य मनुष्यों की एक कमेटी बनाई। इस कमेटी के एक सदस्य मिस्टर ब्राकलहर्स्ट भी थे जिनकी उपर्युक्त बातचीत से पाठक उनकी योग्यता का पता पा चुके होंगे। जिस कमेटी में ऐसे ऐसे स्वार्थी सम्मिलित हों उसका निर्णय क्या हुआ होगा यह हमारे योग्य पाठक स्वयं अनुमान कर सकते हैं।

जिस प्रकार इस समय महात्मा गांधी ने विदेशी वस्त्रों का आन्दोलन प्रारम्भ किया है उसी प्रकार का आन्दोलन इंग्लैंड में १८वीं शताब्दी में किया गया था। उस समय इंग्लैंड के अधिकार में भारतवर्ष न था। उस समय भारतीय छींट इंगलैंड में बहुत अधिक प्रमाण में खपती थी। महारानी मेरी ने भी (जो उस समय इंग्लैंड के राज्य-सिंहासन पर आरूढ़ थीं) भारतीय छींट के प्रचार को खूब उत्ते-

जना दी। इस पर अंग्रेज व्यवसाई बहुत असन्तुष्ट और रुष्ट हुए। इन लोगों ने भारतीय वस्त्रों के बहिष्कार का एक बड़ा ज़बरदस्त आन्दोलन किया। उसका परिणाम यह हुआ कि इंग्लैंड की सरकार को ऐसे ऐसे कड़े नियम बनाने पड़े जिससे भारतीय वस्त्रों का व्यापार वहां बन्द हो गया। इस बात का प्रमाण उस समय के इतिहासकार मिस्टर लैकी के "इंगलैंड के इतिहास" से मिलता है।

१७वीं शताब्दी के अन्त में अधिक संख्या में बहुत सस्ते और खूबसूरत कपड़े—छींट मलमल तथा और बहुत से रंग बिरंगे कपड़े—भारत से विलायत भेजे गये। इसकी आश्चर्यजनक खपत देखकर ऊन और रेशम के विलायती व्यवसायी भय-भीत हो उठे। उन लोगों के अथक प्रयत्न करने पर सन् १७०० और १७२१ में पारलीमेंट द्वारा इस आशय के कानून पास किये गये कि किसी भी प्रकार के छींट के तथा अन्य प्रकार के छपे हुए कपड़े न तो यहां बनाये जांय और न उपयोग में ही लाये जांय। यदि कोई भी स्त्री भारत की छींटके बने हु कपड़े बरतेगी तो उसको दण्ड दिया

जावेगा। अनेक स्त्रियों को इस कानून के भंग करने के लिये आर्थिक दण्ड दिया गया। सन् १७०६ में एक स्त्री को इस अपराध पर २०० पौंड (अर्थात् ३२०० रु०) जुर्माना किया गया था . कि उसके पास फरासीसी सूतका बना हुआ रूमाल पाया गया!

इंग्लैंड स्वतन्त्र देश था। इस लिये वह अपने व्यापार-वृद्धि के लिये मन माने कानून गढ़ सकता था। इंग्लैंड-सरकार को अपने रोज़गार के बढ़ाने की कितनी प्रबल इच्छा थी यह ऊपर बतलाये हुए कानूनों से ही झलकती है। भारतवर्ष पर राज्य-सत्ता स्थापित करने के पश्चात् उसको अपने अभीष्ट सिद्ध करने का मार्ग बिलकुल सुलभ और सुगम हो गया। लगातार ७० या ८० वर्ष तक अंग्रेजों ने भारतीय व्यापार नष्ट करने के अभिप्राय से भारत-वासियों पर जो २ भयंकर अत्याचार किये वे अवर्णनीय हैं। जैसा कि मिस्टर प्राकलहर्स्ट ने ऊपर की बातचीत में स्वीकार किया है, न्यायकी उद्दण्डतापूर्वक हत्या करने पर अंग्रेज लोग वास्तव में भारतीय व्यवसाय को नष्ट करने में सफल हुए।

उस समय की दुःखद अवस्था का खाका कोई भी इतनी अच्छी तरह नहीं खींच सका है जैसा कि भारत के एक महान और विश्वसनीय सुपूत मिस्टर आर० सी० दत्त ने खींचा है। अपनी सारी उक्तियों की पुष्टि उन्होंने सरकारी कागज़ों, अंग्रेज यात्रियों और इतिहासकारों के लेखों द्वारा की है। हम उनके विचारों को यहां संक्षेप में वर्णन करते हैं।

"कम्पनी के हाथ में जिस समय थोड़ी सी राजनैतिक शक्ति आई उसी समय से स्वार्थ-परिपूर्ण व्यवसायी-नीति का अवलम्बन किया गया। इस नीति का पीछा उस समय तक न छोड़ा गया जब तक कि उसके द्वारा अनेक रूप में सफलता प्राप्त न कर ली गई। भारतीय व्यवसाइयों को ज़बरदस्ती कम्पनी के कारखानों में काम करने के लिये विवश किया गया। कम्पनी के एजेण्टों ने अधिकार प्राप्त कर ज़ुल्म और ज़बरदस्ती से व्यापार की गुप्त बातें जानने के लिये जुलाहों को बहुत तङ्ग किया। अनेक प्रकार के कौशल-पूर्ण प्रयत्न करने पर इस बात में इन को कुछ सफलता भी मिली।

मि० दत्त कम्पनी के गुमाश्तों की करतूतों का विस्तृत वर्णन सरजेंट ब्रेगो के २६ मई सन् १०६२ के एक पत्र से इस प्रकार उद्धृत करते हैं।

"कोई भी सभ्य पुरुष माल खरीद ने या बेचने के लिये यहां अपना गुमाश्ता भेज देता है ; यह गुमाश्ता प्रत्येक ग्रामनिवासी से उस का माल खरीदने और उसके हाथ माल बेचने का पूरा अधिकारी समझता और उसके (ग्रामनिवासी) इस बात पर राजी न होने पर (असमर्थता के कारण) उसको शीघ्र ही बेत मारने की या जेल की सजा दी जाती है और केवल इतना ही नहीं, उनके साथ इस बात की भी जबरदस्ती की जाती है कि जिस माल को कम्पनी के नौकर बेचते या खरीदते हैं, उनका व्यवसाय वे बिलकुल बन्द कर दें। यदि लोग इस बात पर कान न देकर व्यापार करते ही हैं तो फिर उनके साथ शक्ति का प्रयोग किया जाता है और अन्य सौदागरों की अपेक्षा इन अपराधियों से बहुत ही कम मूल्य में चीजें खरीदी जाती हैं और कभी कभी तो मूल्य दिया ही नहीं जाता। यदि मैं इस बात में

हस्तक्षेप करता है तो रिपोर्ट कर दी जाती है। इन तथा अन्य अवर्णनीय अत्याचारों के कारण जिनका कि बंगाल के गुमाश्ते नित्य प्रति उपयोग करते हैं, बाकरगंज (बंगाल का एक समृद्धशाली तथा उन्नत जिला) जनहीन होता जा रहा है। बहुत से मनुष्य अधिक सुरक्षित स्थान में रहने के लिये चले जा रहे हैं। जिन बाज़ारों में पहले बहुत सी चीजें मिलती थीं, अब वे सुनसान पड़ी हुई हैं। वहां कुछ भी नहीं मिलता। इन गुमाश्तों के चपरासियों को बेचारे ग्रामनिवासियों पर अत्याचार करने का पूर्ण अधिकार प्राप्त होता है और यदि जमीनदार कुछ आपत्ति करता है तो उसको भी इसी प्रकार के व्यवहार किये जाने की धमकी देते हैं। पहिले आम कचहरी में न्याय होता था, परन्तु अब प्रत्येक गुमाश्ता ही न्यायाधीश बन बैठा है और प्रत्येक मनुष्य का घर ही कचहरी हो गया है। वे जमींदारों तक को स्वयं सजा कर देते हैं और कम्पनी के कारिन्दों के साथ असद् व्यवहार करने का मिथ्या दोष लगा कर उनसे बहुत सा रुपया दण्डस्वरूप वसूल कर लेते हैं।

भारतीय व्यापार को नष्ट करने के पश्चात् इन्हों ने अपने व्यापार की किस प्रकार रक्षा की, यह बतलाने के लिये मिस्टर दत्त उसी समय का एक और पत्र उद्धृत करते हैं। उसका आशय यह है : —

"सच्ची बात तो यह है कि एतद्देशीय समस्त वर्तमान आन्तरिक व्यवसाय और कम्पनी द्वारा विचित्र रूप से व्यापार में लगाया हुआ युरोप का धन अत्याचार का जीता जागता एक भीषण दृश्य है। इसका दुःखद परिणाम देशका प्रत्येक जुलाहा और व्यापारी भोग रहा है। कोई भी वस्तु हो जो यहां बनी उन की ही हो जाती है। अंग्रेज लोग बनियन (Banyans) या मुतसद्दी और अपने भारतीय गुमाश्तों की सलाह से यह बात निश्चित करते हैं कि इनलोगों से कौन कौन माल बनवाना चाहिये और उन्हें उसका कितना मूल्य देना चाहिये।...... जिस समय गुमाश्ता किसी औरङ्ग (Aurung—a manufacturing town) अथवा व्यवसायी नगर में जाता है तो वहाँ वह एक निश्चित स्थान में— जिसे वह कचहरी कहता है—अपने चपरासियों के द्वारा दलालों (जिन्हें पैकार कहते हैं)

और जुलाहों को एकत्रित कराता है और इन्हें अपने, मालिकों से प्राप्त रुपयों का कुछ अंश पेशगी दे देता है। साथही उनसे इस प्रकार का एक इकरारनामा लिखवा लेता है कि हम इतनी इतनी चीजें इतने इतने मूल्य पर अमुक समय पर बना कर दे देंगे। ग़रीब जुलाहे इन शर्तों पर रजामन्द हैं या नहीं, इसका जरा भी ध्यान नहीं रखा जाता। कम्पनी के नौकर होने के कारण गुमाश्ता लोग इन से मनमानी शर्तों पर दस्तख़त करा लेते हैं। यदि जुलाहे माल बनाने में असमर्थता बतला कर पेशगी रुपया लेने से इनकार करते हैं तो उन की कमर में रुपया बांध दिया जाता है और उनको बेत मार कर भगा दिया जाता है।......... कम्पनी के गुमाश्तों के रजिस्टरों में कुछ ऐसे जुलाहों के नाम भी दर्ज होते हैं जो कम्पनी के अतिरिक्त और किसी का भी काम नहीं करने पाते। गुमाश्ते लोग दासों के अनुसार इन के साथ अत्याचारपूर्ण और क्रूर व्यवहार करते हैं।

इस मुहकमे द्वारा जो २ बदज़ातियां की जाती हैं वह विचारशक्ति के बाहर हैं। इन ग़रीब जुलाहों

को बड़ा भयङ्कर धोखा दिया जाता है। कम्पनी के गुमाश्ते और कपड़ों की परख करनेवाले (जांचेदार) वस्तुओं का जो मूल्य निश्चित करते हैं वह बाजारभाव से १५ से ४० सैकड़ा तक कम रहता है। अर्थात् जो वस्तु किसी भी बाजार में १०० रु० में बिक सकती है वह ६० रु० तक में जबरदस्ती खरीदी जाती है। जब ज़बरदस्ती लिखे हुए राजीनामे के अनुसार जुलाहे अपना वचन पूरा नहीं कर सकते तब कम्पनी के एजंट, जिन्हें बंगाल में सर्वत्र मुचुलका (Mutchulcahs) कहते हैं —इन लोगों का सामान ज़ब्त कर अपनी क्षतिपूर्ति करने के लिये बेंच डालते हैं। कच्चा रेशम औंटनेवाले नागोद इस प्रकार के अत्याचार के शिकार बनाये जाते हैं। ऐसे भी उदाहरण मिले हैं कि रेशमी कपड़ा बनाने से बचने के लिये कहीं कहीं इन लोगों ने अपने अंगूठे तक काट डाले हैं।

इस अत्याचार के साथ ही साथ कम्पनी के नौकरों ने देश का सब आन्तरिक व्यापार बिना किसी प्रकार का कर दिये ही करना प्रारम्भ कर

दिया था। जो कुछ भी कर देना पड़ता था वह केवल भारतवासियों को ही देना पड़ता था। इस स्वेच्छाचारिता पर उस समय के नवाब मीर कासिम ने असन्तोष प्रकट किया। उसने एकदम सब लोगों के सारे आन्तरिक कर बन्द कर दिये। इस उदार और परोपकारी कृति की प्रशंसा करना तो दूर रहा, कलकत्ता की कौंसिल इस बात से बहुत क्रुद्ध हुई और जोश में आकर यहां तक कह डाला कि नवाब साहब ने हमारा राष्ट्रीय अपमान कर डाला! मिस्टर दत्त इस समय के कम्पनी के नौकरों के अत्याचारों का प्रदर्शन करने के लिये जेम्स मिल का एक बहुत बढ़िया उदाहरण उद्धृत करते हैं, जिस से इस बात का पूरा पता लग जाता है कि शक्ति-मद में मतवाले हो कर लोग न्याय और लज्जा का किस प्रकार ध्यान नहीं रखते।

"डायरेक्टरों ने भी इस व्यापाराधिपत्य और अत्याचार का पहले विरोध किया था। परन्तु ज्यों ही उनको बंगाल बिहार और उड़ीसा के दीवानों ने राजनैतिक शक्ति प्रदान की, उनकी उदार चित्तवृत्ति में परिवर्तन हो गया और उन लोगों ने

भयंकर से भयंकर अत्याचार करने में भी आना-कानी न की। इस से पता लग सकता है कि राज-शक्ति मिलने पर लोगों की विचारशैली में कितना भीषण परिवर्तन हो जाता है। राजशक्ति की बागडोर हाथों में आते ही इन लोगों को अंग्रेज़ जुलाहों का स्मरण हो आया। १७ मार्च सन् १७६६ के पत्र में कम्पनी ने यह इच्छा प्रकट की कि बंगाल में कच्चे रेशम के व्यापार को उत्साहित करना चाहिये और रेशमी कपड़ों के व्यापार को हतोत्साहित करना चाहिये। कम्पनी ने इस बात की भी सिफ़ारिश की कि रेशमी कपड़ेवालों से ज़बरदस्ती कम्पनी ही के कपड़े बनवाना चाहिये। उनको घर पर भी कपड़े न बनाने देना चाहिये। इन शिफ़ारिशों पर विचार करने के पश्चात् विलायत की निर्वाचित कमेटी (Select Committee)ने निर्भीकतापूर्वक इस प्रकार कहा था कि "इस पत्र में उत्साहित करने और ज़बरदस्ती करने की पूरी नीति की बंदिश बांधी गई है। इस से बंगाल के व्यवसाय के पूर्णरूप से नाश हो जाने की सम्भावना है। इसका परिणाम यह होगा कि इस व्यवसायी देश की पूरी काया-

पलट हो जावेगी और यह देश विलायत के लिये उपयोगी कच्चा माल तैयार करने का एकमात्र खेत बन जायगा।"

भारतवर्ष के साथ इंगलैण्ड की यह नीति अर्ध-शताब्दी से अधिक समय तक रही। सन् १८०४ में बङ्गाल, विहार, युक्तप्रान्त का अधिक भाग, करनाटक, उत्तरी सरकार, कनाड़ा और मलाबार— जहाँ व्यवसायी जीवन जवानी के उत्कर्ष में फल फूल रहा था—कम्पनी की छत्रच्छाया में आ गये। इस नीति का जो परिणाम हुआ उसका अनुमान इसी एक बात से लगाया जा सकता है कि इन प्रान्तों के निवासी, जो अबतक योरोप के बाजारों में अपने यहाँ का माल भेजा करते थे, अधिकाधिक संख्या में विदेश से माल मंगवाने लगे।" मिस्टर दत्त ने हाउस आफ कामन्स में पेश किये गये एक हिसाब के आधारपर लिखा है कि सन १०१४ में भारत में भेजे हुए कपासके माल का मूल्य १५६ पौंड था। यही सन् १८१३ में बढ़कर १०८८२४ पौंड हो गया। *

*Return to an order of the House of Commons, dated 4th May 1813.

सन् १८१३ की पारलीमेंटरी इन्कायरी जिसके कारण कम्पनीका भारतीय व्यापाराधिपत्य नष्ट किया गया और जिसके कारण सैकड़ों अंग्रेज व्यापारियों को बेकाम हो जाना पड़ा, कम से कम इस बात के लिये तो चिरस्मरणीय रहेगी कि उसमें अच्छी अच्छी मार्के की बातें गवाहियों में खुली थीं। ग्रेम मरसर (Gracın Mercer) ने जो इस्ट इण्डिया कम्पनीका डाक्टर था, अपनी गवाही में इस प्रकार कहा था—"लार्ड वेलस्ली ने रुहेलखण्ड में विलायती ऊनी वस्त्रों की एक प्रदर्शनी इस अभिप्राय से की थी जिस से विलायती माल भारतीय बाजारों में प्रख्याति प्राप्त करे।" जान रैंकिङ्ग के इज़हार से जो कि एक व्यवसायी था, पता चलता है कि किस प्रकार 'निषेध कर' द्वारा भारतीय माल विलायत जाने से रोका गया। ६ अगस्त सन् १९२१ के 'कर्मवीर" में 'देशी कपड़े का व्यवसाय कैसे नष्ट हुआ' शीर्षक जो लेख प्रकाशित हुआ है उसे भी हम यहाँ उद्धृत कर देते हैं। पाठक उससे एतद्देशीय व्यवसायके नष्ट होने का यथार्थ कारण और भी अच्छी तरह समझ जायँगे—

"इण्डिया आफिस के कागजात की रिपोर्ट में

लिखा है कि "सन् १७८५ में नाटिङ्घम (विलायत) में कपड़े का कारखाना खुला और दो वर्ष बाद ढाके की मलमल की नक़ल पर पांच लाख थान मोटे और खरखरे कपड़े के तैयार हुए। उस समय विलायत में शोर हुआ कि ढाका के कारीगरों से विलायती कारीगरों की रक्षा की जानी चाहिये। इस लिये ब्रिटिश सरकार ने हिन्दुस्तान से आने वाले सभी सूती माल की कीमत पर ७५ फी सदी महसूल लगा दिया अर्थात् १००) के माल पर ७५) कर देना पड़ता था। फल यह हुआ कि सन् १७८७ में ढाका से इंगलैंड में जो ३० लाख रुपयों की मलमल गई थी वह महसूल लगानेके बाद घट कर सन् १८०० में ८॥ लाख रुपयों की ही रह गई; सन १८१३ में ३॥ लाख की और १८१७ में उसका जाना बिलकुल बन्द हो गया।

मिल अपने ब्रिटिश भारत के इतिहास में लिखता है कि "इंगलैण्ड में सन १८१३ तक हिन्दुस्तान का सूती और रेशमी माल इंगलैंड के माल की अपेक्षा ५०—६० फी सदी कम कीमत पर बिकता था। इस लिये इंगलैंड के माल की रक्षा करने के लिये इंगलैंड में आने वाले हिन्दुस्तानी माल पर कीमत

के हिसाव से ७०–८० फी सदी कर लगा कर उसका आना विलकुल ही वन्द कर दिया गया। ऐसा न किया जाता तो पेज़ली और मैनचेस्टर की नई स्थापित हुई कपड़े की मिलें हिन्दुस्थानी माल के मुक़ाविले में भाफ़ के वल से भी नहीं चलाई जा सकती थीं।

Useful art and manufactures of Great Britain नामक पुस्तक में लिखा है कि "मलावार प्रान्त की छीट को इङ्गलैंड में रोकने के लिये अंग्रेज जुलाहों के प्रार्थना करने पर पारलीमेण्ट ने उस छीट पर फी गज डेढ़ आना टेक्स लगाया। दो वर्ष वाद यह टैक्स फी गज तीन आना कर दिया गया और सन् १७२० में क़ानून वना दिया गया कि जो लोग इङ्गलैण्ड में हिन्दुस्थानी छींट वेचेंगे उन पर २००) रु० और जो खरीदेंगे उन पर ५०) जुर्माना होगा। हिन्दुस्थान के रेशमी कपड़े और छीटों को रोकने के लिये सन १७००में क़ानून पास किया गया कि वङ्गाल, चीन, फारिस या ईस्टइण्डीज में वना हुआ रेशम और वहाँ पर रँगी हुई या छपी हुई छीटें २६ सितम्बर सन १७०१ के वाद इङ्गलैंड में न मँगाई जावें और न

पहिनी जावें। उस तारीख के बाद जो माल मंगाया जावेगा वह गोदामोंमें बन्द कर दिया जावेगा या फिर से विदेशों में भेज दिया जावेगा।

इसी प्रकार हिन्दुस्थानी कपड़ों पर सन् १९२१ तक टैक्स बढ़ते गये। उस समय के टैक्सों का विवरण इस प्रकार है:—

माल			टैक्स
कपासका कपड़ा	फी सदी	...	८१)
कपास ...	फी मन	...	१५)
छींट ...	फी सदी	...	८१)
तनज़ेज ...	...	...	३२॥)
चटाई ...	...	...	८४॥≈)
बकरेंके ऊनकी चीजें	...	...	८४॥≈)

(२)

हिन्दुस्थान में देशी कपड़े के व्यवसाय की हत्या।

इंगलैंड में ही हिन्दुस्थानी माल पर कड़ा टेक्स लगा कर अंग्रेज़ लोग सन्तुष्ट नहीं हुए। परंतु हिन्दुस्थानी कारीगरों को नष्ट करने और भारतमें इंगलैंड के माल का प्रचार बढ़ानेके लिये भी ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने रोमांचकारी अत्याचार किये।

इतिहासकार मिल कहता है कि अँग्रेजों ने प्राप्त की हुई राजनैतिक शक्ति से इङ्गलैण्ड के व्यवसाय की प्रतिद्वन्द्विता में हिन्दुस्थानी व्यवसाय का गला घोंटना शुरू किया। उन्होंने यहां पर अपना माल विना टेक्स बेचने का अधिकार चलाया और जहां कहीं उन्हें महसूल देना भी पड़ता था, तो उसके मुकाबिले में हिन्दुस्थानी माल पर कई गुना अधिक कर लगाया गया था। "लार्ड बैंटिङ्क के समय में इस विषय पर अनुसंधान करने से मालूम हुआ कि अंग्रेज़ी कपड़े

(२)

पहिले की सुखी अवस्था।

कम्पनी की ज्यादतियों से हमारे कपड़े का व्यवसाय नष्ट हो गया। डाक्टर बुकानन ने कम्पनी की आज्ञा से उत्तरी भारत की कारीगरी और वाणिज्य की दशा की जाँच करने के लिये सन १८०७ में पटना और शाहाबाद आदि स्थानों का पर्यटन करके जो रिपोर्ट पेश की थी उसमें कपड़े के बारे में लिखा है कि उस समय पटना जिले में धान १॥) की मन मिलता था। वहाँ की आबादी ३३ लाख थी जिनमें ३३०४२६ औरतें सूत कात कर साल भर में १०८१०००) कमा कर अपना पेट भरती थीं।

शाहाबाद में १५९५०० औरतें हर साल १२५००००) का सूत कातती थीं। यहां ७९५० करघे चलते थे और १६०००) के कपड़े बनते थे।

भागलपुर ज़िले में चांवल का भाव फी रुपये

३७॥ सेर था। वहां ३२७५ करघे टसर वुनने के और ७२७६ करघे सूनी कपड़ा वुनने के थे।

गोरखपुर जिले में १७५६०० औरतें चरखों से सूत कात कर अपनी जीविका चलाती थीं और ६१५०००) कमाती थीं वहां पर ६११४ करघे चलते थे। ५०० घरानोंमें रेशम का व्यवसाय होता था। और जुलाहे १६१४००० के कपड़े प्रति वर्ष वुनते थे।

विहार के समान वङ्गाल और दक्षिण के जिलों का भी यही हाल था। परन्तु ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हमारे व्यवसाय और जनता का सर्वनाश करके ही छोड़ा। परिणाम यह हुआ कि हमारे उन्नत नगर और ग्राम उजड़ने लगे और सदा के लिये अकाल ने हमारे देशमें डेरा डाल दिया। ट्रेवेलियन सन १८८० में कहता है कि वंगाल में एक रेशम के समान विचित्र प्रकारका सूत होता था उससे ढाके की मलमल वनाई जाती थी। वह अव दिखाई नहीं देता। व्यवसाय के नष्ट हो जाने से ढाका की आवादी डेढ़ लाख से घट कर तीस चालीस हजार रह गई है।

इस प्रकार हमारा घरू धन्धा नष्ट हुआ जिसके परिणाम से हम अपना तन ढाकने के लिये भी इंग-

लैंड के मुहताज हो गये। प्रति वर्ष ६० करोड़ रुपये हमारे देश से इंगलैंड जाने लगे और धन्धा न रहने के कारण हमारी जनता भूखों मरने लगी। देश में वर्तमान बरबादी आ गई।..............।"

इस अत्याचार और क्रूरता के साथ भारतीय व्यापार और कला-कौशल के समूल नष्ट करने का परिणाम यह हुआ कि लाखों जुलाहे बेकार होकर भूखों मरने लगे ; इन लोगों को समस्त संसार अन्धकार मय प्रतीत होने लगा। काठियावाड़ के लाखों जुलाहे तो कोई अच्छा रोजगार न मिलने के कारण मेहतर हो गये! निस्सहाय तो बिचारे थे ही ऐसा न करते तो और करते ही क्या? बहुतों ने किसी न किसी प्रकार उदर पोषण करने के लिये किसानी की शरण ली। किसानी में जो कुछ पैदा होता उससे बेचारे रूखा सूखा खाकर अपनी जठराग्नि शान्त करने लगे। यह सब होने पर भीतर ही भीतर देश में असन्तोष की मात्रा नित्य प्रति बढ़ने लगी। इन लोगों को दृढ़ विश्वास हो गया कि पराधीनता के ही कारण इनकी यह शोचनीय दशा हुई है। इस पराधीनता से छुटकारा पाने के लिये ये उतावले हो

उठे। किसी सुअवसर पर इन लोगों ने एक बार स्वतन्त्र होने के लिए प्राणपन से प्रयत्न करने का दृढ़ संकल्प कर लिया। अनेक कारणों से कुछ समय पश्चात् भारत में इनका मनोभिलषित परस्थितियां उपस्थित हो गईं। इन लोगों ने इस सुअवसर को हाथ से जाने देना उचित न समझा। सन् १८५७ के प्रसिद्ध बलवे में इन लोगों ने अपने मनोवांछित संकल्पको सफल बनानेका संगठित प्रयत्न किया। परन्तु ग्रहों के सानुकूल न होने के कारण ये लोग विफल मनोरथ हुए। इनको भयङ्कर हार खानी पड़ी। इनका भावी सुखस्वप्न भी इसी समय दूर हुआ। अंग्रेजों ने इस बलवे को दबा कर मानों हाथोंहाथ स्वर्ग पा लिया। उनकी धाक भी इसी समय से भारतवर्ष में पूर्णतया जम गई। बलवे को शान्त करने के लिये भारतवासियों पर अंग्रेजों ने जो जो लोमहर्षण अत्याचार किये उसके यहाँ दोहराने की आवश्यकता नहीं। इसके पश्चात् महारानी विक्टोरिया ने भारतवासियों के जले हुए हृदय के घाव पर अपनी प्रसिद्ध घोषणा-मरहम लगाने का प्रयत्न किया। इस घोषणा का भारतवासियों के धधकुचले हृदयों पर कैसा प्रभाव पड़ा

हम भारतीय राजाओं के प्रति धार्मिक बन्धनों में उसी प्रकार आवद्ध हैं, जिस प्रकार अपनी प्रजा के प्रति। उस परम पिता परमेश्वर की कृपा से हम अपने वचनों को बड़ी ईमानदारी और सावधानी से निबाहेंगे।

ईसाईधर्म की सत्यता पर अटल विश्वास रख कर उसकी और धार्मिक महत्ता को भली भाँति समझ कर भी हम अपनी प्रजा को अपने मतानुसार चलने के लिये कभी विवश न करेंगे। अपनी शाही इच्छा और मर्जी से हम यह बात घोषित करते हैं कि किसी भी व्यक्ति के साथ उसके धार्मिक विश्वास या कृत्यों के कारण न तो कभी अनुग्रह ही किया जायगा और न अन्याय या असद्व्यवहार ही। सबलोगों की निष्पक्ष तथा समभाव से न्याया-

देश के प्राचीन रीति रिवाज का पूरा ध्यान रखा जाय।

हम उन ख़राबियों और विपत्तियों केलिये हार्दिक पश्चाताप करते हैं. जो भारत के कुछ उच्चाभिलाषी मनुष्यों के कृत्यों के कारण यहां घटित हुई हैं। इन लोगों ने झूठी खबरें फैलाकर यहाँ बलवा फैलाया तथा अपने देशवासियों को धोखे में डाला। युद्धक्षेत्र में उस बलवे को दबाने के समय हमारी शक्ति का प्रदर्शन किया जा चुका है। जो मनुष्य अनिच्छापूर्वक कुमार्गगामी बनाये गये थे और अब, जिन्हें अपने कुकार्यों के लिये धार्मिक पश्चाताप हुआ है, हम उनके अपराधों को क्षमा कर उनके प्रति दया दर्शाना चाहते हैं।

हमारे वाइसराय और गवरनर जनरल ने, अधिक खूनखराबी बन्द करने और हमारे भारतीय राज्य में
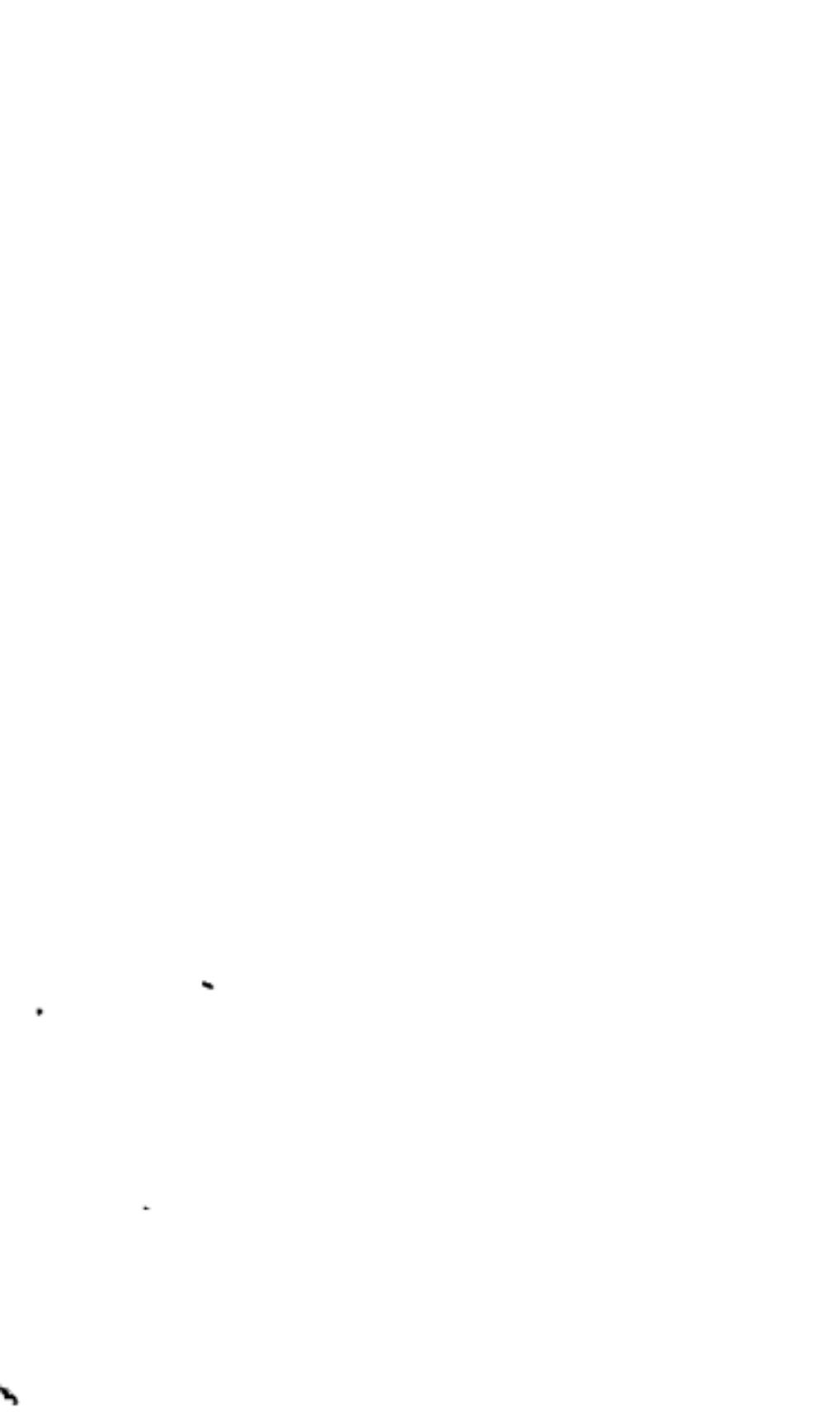
जिन्हों ने जानबूझ कर खून किया है या जिन्हों ने बलवे को उत्तेजित किया और अगुआ बन कर युद्ध किया है, उनकी केवल प्राण रक्षा की जा सकती है। इन लोगों को दण्ड देते समय उन परि-स्थितियों का पूर्ण विचार किया जायगा, जिनके कारण ये लोग राजभक्ति के विरुद्ध कार्य्य करने के लिये विवश किये गये हैं। उन लोगों के प्रति विशेष दया दर्शाई जायगी, जिन्हों ने झूठी खबरें पाने पर, जोश में आकर अपराध किया है

हम उन सब लोगों के प्रति जिन्हों ने हमारी राज-मर्यादा को उल्लंघन कर भूल से अस्त्र उठाया है बिना किसी शर्त के क्षमा और दया प्रदर्शित करते हैं। ये लोग अपने अपने घर लौट कर शान्ति पूर्वक उद्योगधन्धा कर सकते हैं।

द्वारा हमारी ये इच्छाएं जनता के
लाभ के लिये पूर्ण हों।"

महारानी विक्टोरिया की यह सन् १८५८ की उदार घोषणा अनेक विशेषताओं के कारण भारतीय इतिहास में चिरस्मरणीय रहेगी। महारानी की उपर्युक्त घोषणा से उनके शुद्ध और विशाल अन्तःकरण का पता अच्छी तरह से चलता है। उनकी प्रजावत्सलता की कोई भी प्रशंसा किये विना नहीं रह सकता। उनकी इच्छानुसार यदि भविष्य में भी काम किया जाता तो भारतवर्ष कभी ऐसी अधोगति अवस्था पर न पहुंचता। महारानी विक्टोरिया ने भारतीय जनता के कल्याण के लिये इस देश के शासन की बागडोर अपने हाथों में ली थी। वे यह बिलकुल नहीं चाहती थीं कि भारतवर्ष के साथ किसी प्रकार का भी अन्याय या अत्याचार किया जाय। परन्तु भविष्य में उनके स्वार्थी नौकरों ने उनकी इच्छा को कार्य रूप में परिणत करने का कभी कष्ट नहीं उठाया। महारानी की यह इच्छा होते हुए भी कि भारतवासी अपनी योग्यता और शिक्षा के अनुसार सरकारी उच्च पदों पर

रखे जांय उनके नौकरों ने सरकारी उच्च पदों का द्वार भारतवासियों के लिये एक प्रकार से बन्द ही कर दिया। जितने सरकारी उच्च पद थे वे अंग्रेजों के लिये ही सुरक्षित रख लिये गये। काला चमड़ा होना ही पाप समझा जाने लगा। अंग्रेजों से लाख दर्जे अनुभवी और योग्य होने पर भी भारतवासियों का हर जगह अपमान और तिरस्कार होने लगा।

भारतकी स्वतन्त्रता यथा नष्ट हुई उसपर दुःखका पहाड़ टूट पड़ा। कला-कौशल तथा व्यवसायके नष्ट होते ही दारिद्र्यने भी सुअवसर पा इस देशपर बड़ा जबरदस्त आक्रमण किया। सर्वत्र त्राहि त्राहि मच गई। लोग भूखसे तड़पने लगे। करोड़ों मनुष्य आधेपेट भोजन खा जीवन व्यतीत करने लगे। पूरा भोजन न मिलनेके कारण भारतवासियोंकी शक्ति भी क्षीण हो गई। वे अकालही कालके गालमें समाने लगे। शक्तिहीन होने पर भारतवासी प्लेग हैजा और इन्फ्लूएंजाके भी आखेट हुए। दरिद्रताके कारण भयङ्करसे भयङ्कर विपत्ति जो इस देश पर पड़ी वह और कहीं भी सुननेमें नहीं आई।

अंग्रेजी राज्यसे भारतवर्षको कुछ लाभ अवश्य हुआ है. परन्तु दिन प्रति दिन बढ़ती हुई भयङ्कर दरिद्रताके सामने यह कुछ भी नहीं है। अंग्रेजोंके आनेसे पहले भारतवर्ष कितना धनवान था, यह निम्न लिखित उदाहरणसे ज्ञात हो जायगा।

जहांगीरने अपने जीवनके इतिहास में लिखा है,—जब जब प्रधान सेनापति मानसिंह मेरे पिता अकबर से मुलाकात करने जाता था तब तब उसको अट्ठारह लाख रुपयों की भेंट देनी पड़ती थी। मानसिंह का एक वर्ष में अकबर से कम से कम दो चार मुलाकात करनी पड़ती थी। जहांगीर का कथन है, कि आगरा शहर के विक्रमजीत के खजानचियों के पास १०करोड़ रुपये जमा थे। यह चाहे महज कयास ही क्यों न हो परन्तु इससे यह भली भांति जाना जा सकता है कि उस समय आजकल की अपेक्षा कितने अधिक करोड़पती पाये जाते थे।

अपने पिता से प्राप्त किये हुए राजसिंहासन को जहांगीर के और अधिक अलंकृत करने पर तीन करोड़ रुपयों का व्यय हुआ था। उस में बारह हीरे

जड़े थे। प्रत्येक का मूल्य पन्द्रह लाख रुपये थे। आगरा के किले के बनाने में २६ करोड़ २५ लाख रुपये खर्च हुए थे।

जहांगीर के रनिवास और निजी नौकरों का हिसाब सुनने योग्य है। उसका कथन है कि केवल इस मद में उसको पन्द्रह करोड़ बारह लाख रुपये वार्षिक व्यय करने पड़ते थे। जिस समय उसने नूरजहाँ के साथ ब्याह किया, उस समय उसको केवल जवाहर और ४० दाने के मोती का एक हार खरीदने के लिये ७ करोड़ बीस लाख रुपये देने पड़े थे। अपनी एक बहू को उसने ४० मोतियों का एक जड़ाऊ हार उपहार दिया था, जिसका मूल्य १०,००० रुपये था।

उसके मृत भाई दानियल का सामान जब दक्षिण से आगरा लाया गया तब उसकी कीमत का अन्दाजा लगाना कठिन हो गया। अकेले जवाहिरों का ही मूल्य ४५ करोड़ रुपये कूता गया था।

अकबर बादशाहने अपने खजाने का अन्दाजा लगानेकी इच्छासे खिलजी खां को अपने सरकारी खजाने के केवल सोने का हिसाब तैयार करने का

हुक्म दिया था। उसका विवरण जहांगीर ने अपने जीवन चरित्र में यों दिया है,—

खिलजीखां ने आगरा के खजाने में जाकर इस बात के जानने का पूर्ण प्रयत्न किया। उसने शहर के व्यापारियों से ४०० तराजू के जोड़े प्राप्त किये। ये तराजू रात दिन लगातार पांच महीने तक सिक्के और बहुमूल्य धातु तौलने में लगे रहे। इतने दिनों के बाद मेरे पिता अकबर ने यह बात जाननी चाही कि अभी तक कितने मन सोने का हिसाब किया जा चुका है। उसका उत्तर यह मिला कि यद्यपि पूरे पांच महीने तक लगातार एक हजार आदमी रात दिन केवल एक खजाने का माल नापने में लगे रहे, परन्तु अभी तक वे उसको नाप नहीं सके हैं। इस बातके विदित होने पर मेरे पिताने कहा कि बस करो। अब अधिक तर-द्दुद करने की आवश्यकता नहीं। सब जहां का तहां मुहर और ताला लगाकर बन्द कर दो। यह स्मरण रखना चाहिये कि यह केवल एक शहर के खजाने का हाल है।"

जिस समय से इन सौभाग्यशाली अंग्रेजों

जड़े थे। प्रत्येक का मूल्य १२२ लाख रुपये थे। आगरा के किले के बनाने में २६ करोड़ २५ लाख रुपये खर्च हुए थे।

जहांगीर के रनिवास और निजी नौकरों का हिसाब सुनने योग्य है। उसका कथन है कि केवल इस मद में उसको पन्द्रह करोड़ बारह लाख रुपये वार्षिक व्यय करने पड़ते थे। जिस समय उसने नूरजहाँ के साथ ब्याह किया, उस समय उसको केवल जवाहर और ४० दाने के मोती का एक हार खरीदने के लिये ७ करोड़ बीस लाख रुपये देने पड़े थे। अपनी एक बहू को उसने ४० मोतियों का एक जड़ाऊ हार उपहार दिया था, जिसका मूल्य १०,००० रुपये था।

उसके मृत भाई दानियल का सामान जब दक्षिण से आगरा लाया गया तब उसकी कीमत का अन्दाजा लगाना कठिन हो गया। अकेले जवाहिरों का ही मूल्य ४'५ करोड़ रुपये कूता गया था।

अकबर बादशाहने अपने खजाने का अन्दाजा लगानेकी इच्छासे खिलजी खां को अपने सरकारी खजाने के केवल सोने का हिसाब तैयार करने का

हुक्म दिया था। उसका विवरण जहांगीर ने अपने जीवन चरित्र में यों दिया है,—

खिलजीखां ने आगरा के खज़ाने में जाकर इस बात के जानने का पूर्ण प्रयत्न किया। उसने शहर के व्यापारियों से ४०० तराज़ू के जोड़े प्राप्त किये। ये तराज़ू रात दिन लगातार पांच महीने तक सिक्के और बहुमूल्य धातु तौलने में लगे रहे। इतने दिनों के बाद मेरे पिता अकबर ने यह बात जाननी चाही कि अभी तक कितने मन सोने का हिसाब किया जा चुका है। उसका उत्तर यह मिला कि यद्यपि पूरे पांच महीने तक लगातार एक हजार आदमी रात दिन केवल एक खजाने का माल नापने में लगे रहे, परन्तु अभी तक वे उसको नाप नहीं सके हैं। इस बातके विदित होने पर मेरे पिताने कहा कि बस करो। अब अधिक तह-कीक़ात करने की आवश्यकता नहीं। सब जहां का तहां मुहर और ताला लगाकर बन्द कर दो। यह स्मरण रखना चाहिये कि यह केवल एक शहर के खज़ाने का हाल है।"

जिस समय से इन सौभाग्यशाली अंग्रेज़ों

का इस दुर्भागी धरा पर पदार्पण हुआ, उसी समय से यहां का अपार धन लोप हो चला। धन के साथ ही साथ यहां का गल्ला भी अपरिमित प्रमाण में विलायत जाने लगा। यह देश भूखों ही क्यों न मरता रहे विलायत वालों का पेट अवश्य भरना चाहिये। बेचारे भारत वासी चूं तक नहीं कर सकते। इसका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों के आने के पश्चात् यहां अधिकाधिक अकाल पड़ने लगे। पाठकों को निम्न लिखित विवरण से इस बात का पूरा पता चल जायगा,—

ब्रिटिश राज्य से पूर्व

ग्यारह वीं शताब्दी में		२	अकाल
बारहवीं	,, ,,	१	,,
तेरहवीं	,, ,,	३	,,
पन्द्रहवीं	,, ,,	२	,,
सोलहवीं	,, ,,	३	,,
सत्रहवीं	,, ,,	३	,,
अठारहवीं	,, (१७४५ तक)	४	,,

ब्रिटिश राज्य स्थापित हो जाने के पश्चात्।

अट्ठारहवीं शताब्दी के अन्तिम ३१ वर्षों में ७ अकाल
उन्नीसवीं रानको में.............................३१ "
उन्नीसवी शताब्दी के आदि के २५ वर्षों में ५ "
(इन अकालों ने दस लाख मनुष्यों की बलि ली।)
अन्त के २५ वर्षों में १८ "
(इन अकालों से २६०००००० मनुष्यों की मृत्यु हुई।)

आजकल ग्यारह वर्षों से तो इधर प्रत्येक वर्ष ही अकाल पड़ रहा है। इस बात को कौन नहीं जानता।

भारत को इस निर्धनता और अकाल का क्या प्रभाव पड़ा उसका वर्णन कुछ अंग्रेज तथा भारत-वासियों ने इस प्रकार किया है :—

मद्रास के अंग्रेज उपदेशक रेवरेण्ड डुबोइस का सन् १८२० का कथन है :—

"दुःख की बात है कि बेचारे हिन्दुओं को धर्म-पुस्तकों की इस समय जरा भी आवश्यकता नहीं है। क्योंकि वे रात दिन क्षुधा-निवारणार्थ अन्न की चिन्ता में लगे रहते हैं। जब पेट खाली और पीठ खुली रहती है तब अच्छे से अच्छे अंग्रेज भी बाइबिल का ध्यान भूल जाते हैं।"

सर डवल्यु डवल्यु हंटर का सन् १८०० का कथन है :—

भारत में चार करोड़ ऐसे मनुष्य हैं, जिनको पेट भरने के लिये यथेष्ट भोजन नहीं मिलता।"

सर विलियम डिगवी ने Prosperous British India नामक ग्रन्थ में, सन् १६०० में लिखा था:—

"सन् १६०० में किसानों की संख्या छः करोड़ बढ़ गई। यदि भारत की आमदनी जितनी कि १८०० में थी उतनी १६०० में भी हो तो चार करोड़ (सर डवल्यु डवल्यु हंटर के मतानुसार) और पांच करोड़, कुल नौ करोड़ मनुष्य ब्रिटिश भारतमें बीसवीं शताब्दी के प्रारम्भ से निरंतर भूखे रहते हैं।"

आर० सी० दत्तका सन् १६०२ का कथन है :—

"भारतवासियोंकी असीम दरिद्रता प्रतिदिन बढ़ती जाती है। सरकारी कागजोंके आधारपर हिसाब लगाया गया है कि भारतवर्ष की जनसंख्या का पांचवां भाग या ६ करोड़ मनुष्य, अच्छी फसल होने पर भी भूखों मरते हैं।

आर० सी० दत्तने अपनी Economic History of British India में सन १९०० में लिखा है :—

"ऐसी परिस्थिति में उसकी भयङ्कर दरिद्रता और दुःखमय जीवन का खाका नहीं खींचा जा सकता। उसकी फूस की झोंपड़ी से ठण्ढ और वारिश का जरा भी बचाव नहीं होता। उसकी स्त्रियां कम्बलों से अपना तन ढांके रहती हैं। उसके लड़के तो सदा नङ्गे ही रहते हैं। सामान तो उसके पास कुछ रहता ही नहीं। एक फटा-पुराना धुस्सा ठंढकालमें बड़े आनन्दकी चीज समझी जाती है। यदि उसके बच्चे मवेशियोंको चराकर कुछ आमदनी बढ़ा सके और उसकी स्त्री काम धंधाकर सकी तो वह अपनेको परम सुखी समझता है। इस बातमें जरा भी अत्युक्ति नहीं कि भारतीय किसान पूरे सालभर भूखा रहता हैं।"

मिसेज एनीबेसेण्ट ने लन्दन के डेली हेरल्ड नामक पत्रमें सने १९१९ में लिखा था :—

लगभग आधे भारतवासी केवल एक ही समय भोजन कर सकते हैं और वह भी भर पेट नहीं। प्रत्येक मनुष्यका औसत जीवनकाल केवल २३ वर्ष का है।

यही इङ्गलैण्ड में ४० और न्यूज़ीलैंड में ६० वर्ष है। यहां वास्तविक भय भूख-विपलव के हो जाने का है। विलायत के प्रसिद्ध डाकृर सर फ्रेडरिक ट्रेवीस ने भारत में भ्रमण करने के पश्चात् कहा था :—

भारत के असंख्य नरनारी भूखों मरने की अवस्थामें पाये जाते हैं। यह अशक्त जन-समुदाय प्रतिवर्ष अकाल और हैजा का शिकार होता है। प्लेग से बीस हजार मनुष्य एक सप्ताह में मरते हुए पाये गये हैं। हैजा से उसकी दस गुनी संख्या, अर्थात् दो लाख मनुष्य प्रतिवर्ष काल के गाल में जाते हैं। एक समय के अकाल में तो सवा पांच करोड़ मनुष्य मरे थे।"

पञ्जाब के फ़ाइनेंशल कमिश्नर एस एस थार्बर्न का कथन है :—

सात करोड़ भारतवासी दरिद्रता की ऐसी शोचनीय अवस्था में हैं कि उनका किसी भी प्रकार उद्धार होना सम्भव नहीं। इस दरिद्रताका मूल कारण भारतीय अन्नका विलायत भेजा जाना ही है। प्लासीके युद्ध के पश्चात् से ही भारतीय अन्न विलायत भेजा जाने लगा है।

बर्क एडम्सने अपने Law of civilization and decay नामक पुस्तक के ३०५वें पृष्ठमें लिखा है,—

"शताब्दियों तक अँग्रेज करोड़ों भारतवासियों का धन छीन कर उसी प्रकार विलायत ले गये जैसे कि रोमन लोग ग्रीस और पोटस का माल इटली ले गये थे। भारत के खज़ाने में कितना रुपया रहा होगा इसका अन्दाज़ा लगाना कठिन ही नहीं वरन् नितान्त असम्भव है।"

बङ्गाल के शासक एफ०जे० शोर का कथन है:—

"अँग्रेजों के राज्य करने का मूल उद्देश्य भारतवासियों को हर एक बात में अपने पर अवलम्बित बनाना ही रहा है। जिन प्रान्तों में इनका अधिकार हुआ है उनपर इन्होंने हद दर्जे का टैक्स लगाया है। प्रत्येक प्रान्त से जितना रुपया खींच सके, खींचा है। इस बात पर हम लोग सदा घमण्ड करते आये हैं कि हम लोग देशी राजाओं की अपेक्षा अधिक कर वसूल कर सके हैं। नीच से नीच अँग्रेज को तो ऊँचीसे ऊँची सरकारी नौकरी मिलसकती है परन्तु अच्छे से अच्छे भारतवासी को किसी प्रकार की मान-मर्य्यादा या नौकरी नहीं दी जाती।"

एफ़० जे० विलसन ने मार्च सन् १८८४ में 'The fortwightly Review' में लिखा था:—

"किसी न किसी रूप में हम उस दुखी देश से प्रतिवर्ष तीस करोड़ पौंड प्राप्त करते हैं। प्रत्येक भारतवासी की औसत आय प्रतिवर्ष दो पौंड है। अर्थात् प्रत्येक भारतवासी की मासिक आमदनी २॥) रुपया है। सम्भवतः इससे कम आमदनी और किसी भी देश में न होगी। हम छः करोड़ कुटुम्बियों को अर्थात् तीस करोड़ मनुष्यों की कमाई चूस कर मोटे बन रहे हैं।"

क्रेक हार्डी का कथन है :—

"भूमिकी उपज के अनुसार भारतीय किसानों को पचास से लगा कर पचहत्तर प्रतिशत जरलगान देना पड़ता है। इसके अतिरिक्त उन्हें और भी बहुत से टैक्स देने पड़ते हैं। १००) रु० की आमदनी पर प्रत्येक किसान को ७५) रु० कर के रूप में दे देना पड़ता है। यही कारण है,जिससे भारतवासियों को निरुपाय हो दरिद्रता की चक्की में रातदिन पिसना पड़ता है।"

भारत का प्लेग वास्तव में निर्धनता है। जिन जन्तुओं से यह बीमारी फैली है वह सरकार है। प्रजा के दुर्बल रक्तहीन शरीर में इस प्लेग से बचने की शक्ति नहीं है। यह बीमारी सहज में ही भारतवासियों को अपना ग्रास बना डालती है।

क्रिश्चियन कालेज प्रयाग के प्रोफेसर श्रीयुत पण्डित दयाशङ्कर एम० ए०, एल० एल० बी०, एफ० आर०ई० एस० ने भारत के आधा पेट भोजन पाने वालों की संख्या का बड़ी विद्वत्ता पूर्वक इस प्रकार निश्चय किया है :—

आध पेट भोजन पाने वालों की संख्या		प्रति सैकड़ा (ऐसे युवा मनुष्य)
१९११-१२	५४९ लाख	४५.१
१९१२-१३	८८४ ,,	६९.७
१९१३-१४	१०१६ ,,	८३.५
१९१४-१५	७३१ ,,	६०.१
१९१५-१६	४५५ ,,	३७.४
१९१६-१७	३४७ ,,	२९.५
१९१७-१८	५४५ ,,	४३ ८
		औसत ५२.७

इस कोष्टक से मालूम होता है कि सन् १९१६-१७ में जो कि कृषि की दृष्टि से बहुत अच्छा वर्ष था, आधा पेट भोजन पानेवालों की संख्या प्रायः ३॥ करोड़ थी। यह संख्या १९१३-१४ में १० करोड़ तक पहुंच चुकी थी। सात वर्ष का औसत निकालने पर ऐसा प्रकट होता है कि ५२७ फी सैकड़ा युवा मनुष्यों को, या यों कहिये कि देश के आधे जवान स्त्री-पुरुषों को, हमेशा आधा पेट भोजन करके जीवन व्यतीत करना पड़ता है।"

प्रोफेसर दुबे, अनेक कारणों वश, वर्त्तमान वर्ष तक आधे पेट भोजन पानेवाले मनुष्यों का हिसाब नहीं लगा सके हैं। यदि इस समय हिसाब लगा कर देखा जाय तो सम्भवतः भारतवर्ष के कम से कम ७० फी सदी मनुष्य आधा पेट भोजन पाकर—वह भी अच्छा अन्न नहीं—जीवन निर्वाह करने वाले निकलेंगे।

यह उदार अँग्रेजों के विशेष अनुग्रह का फल है कि भारतवासियों की ऐसी शोचनीय दशा हुई! अंग्रेज लोग नैपोलियन बोनापार्ट के कथनानुसार सत्य ही (Nation of shop keepres) "दूकान-

दारों की जाति" है। भारतवासियों को भूखों मरते और निर्धनता के कारण तड़पते देखकर भी, इस निर्दयी दूकानदारों की जाति को दया न आई! सच है, जिस समय फरिश्ते रोते हैं उस समय शैतानों को बहुत आनंद होता है! (Devils dance while angels weep) भारतवासियों को निर्धनता के समुद्र में डूबा हुआ देखकर अंग्रेज पूंजीपतियों ने यहां बहुत से कारखाने खोलना शुरू किये। इन कारखानों में बेचारे भारतीय मजदूर तो जीतोड़ परिश्रम करके खूनका पसीना बहावें और उसका प्रचुर लाभ उठावें अंग्रेज व्यवसायी। समय तेरी बलिहारी है! तू जो चाहे सो कर सकता है। राजा को फकीर और अमीर को ग़रीब बनाना तेरे बायें हाथ का खेल है। जिस देश के साथ व्यापार की प्रतिद्वन्द्विता में ईमानदारी से किसी ने विजय न पाई, वहां आज अंग्रेजों के हज़ारों कारखाने खुल गये हैं और भारतवासी उनकी गुलामी कर किसी तरह अपने पापी पेट को भर रहे हैं! निम्न लिखित अंकों से पता चल जायगा कि आजकल भारतीय व्यवसाय अंग्रेजों के

हाथ में कितना और हिन्दुस्तानियों के हाथ में कितना है।

उद्योग या कारखाना	संख्या	भारतीय मालिकों के	युरोपियनों के
बैंक	१६	८	११
पत्थर का कोयला	१३५	१४	१२१
पीसने की कलें	११	०	११
जूट के कारखाने	४६	०	४६
चाय की कम्पनियां	१२४	०	१२४
रेल और ट्राम कम्पनियाँ	४७	१२	३५
रुई और कपड़े की मिलें	७६	४८	२८
चायके खेत (बङ्गालमें)	२७६	३६	२४०
सन के कारखाने	५०	०	५०
सन दबाने के कारखाने	२०६	५२	५७
कलोंके वर्कशाप	४५	६	३६
नील के खेत (बिहार उड़ीसा)	११६	१४	१०५
रेलवे वर्कशाप (बंबई मद्रास पञ्जाब)	५५	०	५५
चाय (अजमेर मेरवाड़ा आसाम मैसूर)	६०६	६०	५४६

⊛ Capital के २० जून सन् १६१६ के लेख के आधार पर।

सोने की खाने	६	०	६
रबर के कारखाने	१०	०	१०
कहवे के खेत (मद्रास)	१०३	१७	८६
अन्य कारखाने	१"४	२०	११४

गत दो वर्षों में भी कम्पनियों और मिलों की संख्या खूब बढ़ी है। इनसे भी भारतवासियों को हानि के सिवाय लाभ नहीं हुआ है। अधिक संख्या में यहां अंग्रेजों की मिलें और कम्पनियों के खुलने का प्रधान कारण यही जान पड़ता है कि जिसमें कच्चा माल बराबर विलायत पहुंचता जाय। इन लोगों के धंधो में जरा भी धक्का न लगने पावे और भारतवर्ष अधिकाधिक गरीब और परावलम्बी बनता जावे। विलायत में ऐसे कई कारखाने हैं जिनमें काम आनेवाला कच्चा माल भारतवर्ष में ही तैयार हो सकता है। इस मालको तैयार करने के लिये भी अंग्रेजों की बहुत सी मिलें और कम्पनियां यहां खुली हैं। यदि भारतवर्ष में कपास की खेती अधिक न की जाय और यदि यहांका कच्चा सूत अधिक परिमाण में विलायत न भेजा जाय तो लङ्काशायरकी कपड़े की मिलें एकदम बन्द हो जायें।

पहिले से विश्वास किया गया होता, तो अकेला भारतवर्ष ही जर्मनी सरीखे कई देशों को जीत कर दिखा देता। खैर, इतना दुर्बल होने पर भी भारत ने जो कुछ किया, वह कम गौरव की बात नहीं।

युद्ध प्रारम्भ होने के बाद ही इङ्गलैण्ड के प्रधान मन्त्री मिस्टर लायड जार्ज ने भारतीय मुसलमानों को विश्वास दिलाया, कि हमारा अभिप्राय टर्की पर विजय प्राप्त करने से मुसलमानी धर्म्म-स्थानों पर कब्जा करने का बिलकुल नहीं है। हम लोग न्याय और दुर्बलों की रक्षा करने के उद्देश से ही रणक्षेत्र में अवतरित हुए हैं। इसलिये मुसलमानों को भी हमारी सहायता करने से मुँह न मोड़ना चाहिये। भारतीय मुसलमान मिस्टर लायड जार्ज के वाग्-जाल में फंस गये और अपने राजा की इच्छा से टर्की में जाकर अपने सहधर्मियों तक से युद्ध किया।

परन्तु युद्ध जीतने के पश्चात् मिस्टर लायड जार्ज ने अपना वचन किस प्रकार निभाया? टर्की के टुकड़े किये गये, उसके पेलेस्टाइन, सीरिया तथा अन्य धर्म-स्थान जीते हुए राष्ट्रों के अधिकारमें आगये और

टर्कों का सुलतान एक साधारण जमीन्दार बनादिया गया ! मुसलमान और अन्यान्य भारतीय जनता इस विश्वासघात को देखकर बहुत क्षुभित हुई। उसने खिलाफत की पूर्ण रक्षा के लिये आन्दोलन प्रारम्भ किया। हिन्दुओं ने भी अपने मुसलमान भाईयों का सहर्ष साथ दिया। बड़ी बड़ी सभायें करके भारतीय जनता ने टर्कों के साथ किये गये अन्यायों पर असन्तोष प्रकट किया और भारतीय सरकार से सादर अनुरोध किया कि वह मुसलमानों की इस विपत्ति में सहायता करे। परन्तु इसका कुछ भी लाभदायक परिणाम नहीं हुआ। इसके पश्चात् ड़े बड़े मुसलमान नेताओं ने विलायत जाकर प्रधान मन्त्री मिस्टर लायड जार्ज को उनके वचनों की याद दिलाई और उनसे प्रार्थना की कि टर्कों के धार्मिक स्थानों पर किसी भी अन्य जाति को कब्जा न दिलाया जाय। परन्तु वह सब अरण्यरोदन के समान हुआ। मुसलमानोंके धर्म-स्थानों पर ईसाइयों का झण्डा फहराने लगा! स्वार्थ के सामने करोड़ों भारतीय मुसलमानों के धार्मिक भावों पर पानी फेर दिया गया!

भारतवासियों को आशा थी कि युद्ध के पश्चात्

हमारे साथ न्याय का व्यवहार किया जायगा, हमको सब जगह बराबरी का दर्जा दिया जायगा, काले और गोरे का भेद मिटा दिया जायगा और किसी भी प्रकार हमारा अनादर न किया जायगा। परन्तु इतनी उदारता भला भारतीय नौकरशाही कैसे दिखला सकती थी? भारतवासियों ने गत महायुद्ध में जो सहायता की, उसकी प्रशंसा के पुल तो अवश्य बाँध सकती थी। परन्तु न्यायानुकूल अपने गुलामों से बराबरी का व्यवहार करने को बिलकुल तैयार न हुई। फिर भी, भारतवासी युद्ध में सहायता करने के उपलक्ष में कुछ पुरस्कार पाने की आशा छोड़ न सके। सुअवसर पा भारतीय नौकरशाही ने भारतवर्ष को जो अलौकिक पुरस्कार दिया वह इस देश के इतिहास में सदा बड़े बड़े काले अक्षरों में लिखा रहेगा। हम उस पुरस्कार का यहां बिलकुल संक्षेप में वर्णन कर देते हैं।

अप्रेल सन् १९१९ में एक दिन वैसाखी मेला का उत्सव मनाने के लिये अमृतसर-पञ्जाब के जलियान-वाला बाग में हज़ारों मनुष्य एकत्रित हुए। ये

लोग शान्ति पूर्वक अपने धार्मिक उत्सव मनाने में तल्लीन थे। इसी अवसर पर जनरल डायर नामक एक अँग्रेज फौजी अफसर ने इस शान्त और धार्मिक जन-समूहपर गोलियों की वृष्टि प्रारम्भ कर दी। हजारों मनुष्यों का समूह अकस्मात् गोलियों की बौछारों से घबरा उठा। देखते देखते, क्षण भर में डायरकी गोलियों ने १७०० निशस्त्र मनुष्यों के कलेजों को छेद डाला। मनुष्योंके खूनसे पृथ्वी भीज गई। उस समयके छोटे छोटे बच्चों का चीत्कार, स्त्रियों का भयाकुल रुदन-क्रन्दन और घायल मनुष्यों का तड़पना जिस समय याद आता है, उस समय अब भी हृदय कांप उठता है। सैकड़ों मनुष्यों की हत्या हुई, कितनी ही सौभाग्यवती स्त्रियाँ बेवा तथा सन्तानहीन हुईं, कितनेही पिता पुत्रहीन हुए, पुत्र पिताहीन हुए और सैकड़ों कुटुम्ब निरावलम्ब और निराश्रय हो गये। आकाश में चारों ओर हाय! हाय!! शब्द का चीत्कार प्रतिध्वनित होने लगा! करुणा-समुद्र उमड़ पड़ा। प्रकृति देवी ने भी मानों इस हत्याकांड को देखकर कुछ समय के लिये अपना मुँह ढाँक लिया।

यह लोमहर्षण तथा अमानुषिक हत्याकाण्ड डायर ने क्यों किया? इस प्रश्न के पूछे जाने पर उस नरपिशाच हत्यारे ने कहा, कि मुझे ऐसा ज्ञात हुआ था कि ये एकत्रित मनुष्य भारतवर्ष में न्यायानुकूल स्थापित ब्रिटिश गवर्नमेंट को समूल नष्ट करनेवाले हैं, इसलिये इनको मैंने ज़रा भी पूर्व सूचना देना उचित न समझ कर मार डालना ही अच्छा समझा। मेरे तथा मेरे साथियों के पास यदि मसाला न घटता तो मैं अवशिष्ट मनुष्यों की भी हत्या कर डालता! शाबाश बहादुर! शाबाश!! तुम्हारी और तुम्हारी बुद्धि की बलिहारी है! जिन मनुष्यों के हाथ में आत्मरक्षा के लिये लकड़ी तक न हो, जिन सात-सात आठ-आठ बरस के बच्चों को राजविद्रोह क्या चीज़ है, यह मालूम तक न हो, जिन अबला स्त्रियों को अपने धार्मिक उत्सव मनाने के अतिरिक्त और किसी बातका ध्यान तक न हो और जिन पञ्जाबी राजभक्त वीरों को अपने सम्राट की इच्छा पर अपने प्राणतक दे देने में ज़रा भी संकोच न हो, उनसे क्या वास्तवमें अँग्रेज़ी राज्य के जमने के उखड़ जाने की सम्भावना थी? तुमने ऐसे स्वतर-

नाक समय में अँग्रेजी राज्य की रक्षा करके बहुत अच्छा काम किया!

इस भयङ्कर अत्याचार का समाचार समस्त देश में बहुत शीघ्र ही फैल गया। भारतीय जनता इस दुस्सम्वाद को सुनकर अत्यन्त अधीर हुई। इसके पश्चात् पञ्जाब के बहुत से स्थानों में मार्शल ला जारी किया गया। सैकड़ों निरपराध माननीय पञ्जाबी बिना किसी अपराध के जेल में ठूंस दिये गये। विद्यार्थियों को जेठ की कड़ी धूप में बारह बारह मील तक पैदल चलाया गया! कई विद्यार्थियों को मोटे और बलिष्ट होने के अपराध में बेतों की सजा दी गई। अच्छे अच्छे इज्जतदार और विद्वान मनुष्यों को नङ्गा करके रण्डियों के सामने बेत लगाये गये। पञ्जाबी लोग अँग्रेजों को झुक झुक कर सलाम करने के लिये विवश किये गये। जिस सड़क पर कुछ मनुष्यों ने मिस शेरउड नामक एक अँग्रेज महिला को मारा था उस सड़क से निकलने वाले सब मनुष्यों को जबरदस्ती सांप के सदृश पेट के बल चलाया गया। जिन मनुष्यों ने इस काम के करने में असमर्थता बतलायी उनको

पीठ पर बन्दूक के कुन्दे मारे गये और उनको कोड़े-मकोड़े के सदृश चलने के लिये विवश किया गया! जनरल डायर तथा और दूसरे सरकारी नौकरों पर इन कृत्यों के कारण कोई भी मुकद्दमा न चलाया जा सके इस गरजसे भारतीय नौकरशाही ने एक अनोखा कानून रच डाला। उसी समय रौलट एक्, सिडीशस मीटिंग एक् और बहुतसे ऐसे एक् बना डाले गये, जिनका लेजिसलेटिव असेम्बली में, समस्त भारतीय मेम्बरों ने एक मत हो तीव्र विरोध किया। परन्तु सुनता कौन था? उस समय तो अँग्रेज लोग मनमाना काम कर रहे थे। लेजिसलेटिव काउन्सिल के बहुतसे मेम्बरों ने इस अन्यायके कारण अपनी अपनी मेम्बरी से इस्तीफा दे दिया।

जनरल डायर ने यह हत्याकाण्ड किया, पञ्जाब के भूतपूर्व लेफ्टिनेण्ट गवर्नर सर माइकल ओडायर ने इस हत्याकाण्ड के होने में सहायता प्रदान की और भारतवर्ष के भूतपूर्व वाइसराय और गवर्नर जनरल लार्ड चेम्सफोर्ड ने इस अत्याचार को उचित माना। इस अत्याचार के होने पश्चात् ही भारतवर्ष के कोने कोने से डायर, ओडायर और चेम्सफोर्ड

पर खुली अदालत में मुकद्दमा चलाये जाने के लिये आवाज सुनाई देने लगी। अपने अपराधों की जांच करने के लिये भारत सरकार ने चट हण्टर कमीशन की नियुक्ति की। इस कमीशन के सदस्य अधिकतर खैरखाह सरकार रखे गये। उन्होंने काम भी सरकार के इच्छानुसार ही किया। बहुत दिनों तक जांच-पड़ताल करने के बाद यह तय हुआ कि डायर ने जरूर खराब काम किया है। लेकिन वह जान बूझ कर नहीं किया गया। इसमें डायर का अपराध यह है कि उसने सामयिक परिस्थितियों के अनुसार अपने "निश्चय करने में भूल" (Error of Indement) की।

इङ्गलैण्ड की पार्लिमेण्ट ने भी हण्डर कमीशन के निर्णय को ठीक समझा। अन्त में पार्लिमेण्ट से फैसला यह हुआ कि, भविष्य में जनरल डायर को सरकारी नौकरी में न रखा जाय। उसको पेन्शन दे दी जाय। जिस मनुष्य ने सैकड़ों निरपराध मनुष्यों की हत्या की, जिसका अपराध पूर्ण रूप से सिद्ध हो गया, जिसको अपने भयंकर पाप-कृत्यों पर जरा भी पश्चात्ताप नहीं हुआ, जिसने पाप

की पराकाष्ठा कर दिखलाया, उसको फाँसी की सजा देना तो दूर रहा, अँग्रेजी न्याय के अनुसार एक दिन की भी सजा न दी गई।

जनरल डायर के इस सुकृत्य पर अधिकांश इङ्गलैण्ड निवासी बड़े खुश हुए। उन्होंने उस जल्लाद की भूरि भूरि प्रशंसा की। पेन्शन मिलने के कारण बिचारे को जो आर्थिक हानि हुई थी उसे पूरी करने के लिये हजारों अँग्रेजों ने लाखों रुपये चन्दा करके उसको भेंट किया! जितना रुपया जिन्दगी भर नौकरी करके भी डायर कमा न सकता, उससे अधिक इस घोर कृत्य के करने से मिल गया! साथ ही साथ उसने वह नाम कमाया जो भारत में तो कम से कम अमिट रहेगा। नाम चाहे भला हो या बुरा इससे कोई मतलब नहीं। भला इससे अधिक लाभ की बात और क्या हो सकती है?

पञ्जाब पर जो घोर अत्याचार और अन्याय हुआ, उसे मिटाने के लिये भारत के नेताओं ने कोई प्रयत्न उठा न रखा। भारत सरकार से बारबार अपील की गई, इङ्गलैण्ड की सरकार से सब प्रकार

अनुनय विनय की गई और जो कुछ भी न्यायानुकूल कार्य्य किया जा सकता था वह सब किया गया परन्तु उसका कोई सन्तोषप्रद परिणाम न हुआ। जनरल डायर इस समय भी स्वतन्त्र होकर लन्दन में मौज उड़ारहा है। सरमाइकल ओडायर और लार्ड-चेम्सफोर्ड इंग्लैण्ड की पार्लिमेंट से सुशासकों की पदवी पाकर अपनेपूर्व कृत्यों पर मन ही मन हँसरहे हैं और पञ्जाब के सैकड़ों निरपराध मनुष्य इस समय भी कारावास के कठिन दुःखों को भोग रहे हैं।

पञ्जाब और खिलाफत के अन्याय के कारण भारतवासियों की, अंग्रेजों न्याय पर रहीसही श्रद्धा भी सदा के लिये उठ गई। भारतवर्ष की परिस्थित में भयङ्कर परिवर्तन देखकर इंग्लैण्ड के कुछ नीति-विशारदों ने भारत को, शान्त करने के लिये कुछ राजनैतिक अधिकार दिये। इन राजनैतिक अधिकारों से अधिकांश भारतीय जनता बिलकुल सन्तुष्ट न हुई। कुछ भारतीयों ने भले ही इसका स्वागत किया हो परन्तु बड़े बड़े अनुभवी और योग्य भारतीय नेताओं ने इन अधिकारों से जरा भी लाभ न उठाने का संकल्प कर लिया।

उसका परिणाम यह हुआ सुधरी हुई कांउसिलों में (Reformed councils) अधिक योग्य मनुष्य नहीं गये। किसी किसी प्रांत में तो लेजिसलेटिव कौंसिल के मेंबर चमार धोबी और मोची तक हो गये, जिनको अलिफ का नाम तक नहीं आता।

जिन कांउसिलों में स्वर्गीय गोखले का प्राथमिक शिक्षा-बिल पास न हुआ, जिन कांउसिलों में प्रेस एक्ट, रौलट एक्ट, इन्डैमिनिटी एक्ट, इण्डिया डिफेन्स एक्ट तथा बहुत से भारत-हित-घातक एक्ट पास हुए, जिन कांउसिलों में भारत के अद्वितीय विद्वान नेता लोकमान्य बाल गङ्गाधर तिलक के लिये शोक प्रदर्शक प्रस्ताव तक पास न हुआ, उन कांउसिलों से क्या भारत का कभी लाभ हो सकता है? इस बात को अधिकांश भारत वासियों ने स्वीकार किया और इसके अनुसार काम भी किया। स्वराज्य प्राप्त करने का प्रयत्न कांउसिल के बाहर ही करने का निश्चय हुआ।

---

(६)

पंजाब तथा खिलाफत पर अन्याय होने के पूर्व तक अखिल भारत-वर्षीय कांग्रेस का विश्वास था, कि भारत की भलाई ब्रिटिश गवर्नमेण्ट से प्रार्थना करने ही से हो सकती है। परन्तु इस अन्याय से कांग्रेस के नेताओं को विश्वास हो गया कि अब ब्रिटिश सरकार से प्रार्थना करने से हमारा कल्याण नहीं हो सकता। जो लोग हमारे साथ न्याय करने के लिये तैयार नहीं, उनसे भलाई की आशा करना बालू पर भीत उठाने के समान है। ईश्वर उनकी अवश्य सहायता करता है, जो स्वयं अपने पैरों पर खड़े होते हैं। स्वराज्य प्राप्त करने के लिये हमको भिक्षा मांगने की आवश्यकता नहीं। हमारे अथक प्रयत्न ही हम को स्वराज्य दिला सकते हैं।

अपनी शक्ति पर पूरा भरोसा करने के पश्चात् सन् १९२० की नागपुर कांग्रेस में असहयोग का प्रस्ताव पूर्ण रूप से पास किया गया। कर्मवीर महात्मा मोहनदास करमचन्द गान्धी के इच्छा-

नुसार समस्त देश काम करने को तैयार हो गया। महात्मा जीकी इच्छा के अनुसार ही इस वर्ष कांग्रेस के उद्देश्य (Creed) में भी परिवर्तन किया गया। इस वर्ष कांग्रेस का उद्देश्य "भारत वर्ष के लिये शान्ति-पूर्ण और उचित उपायों द्वारा स्वराज्य प्राप्त करना रखा गया। अभी तक कांग्रेस का उद्देश्य "ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत स्वराज्य प्राप्त करना" था। इस 'साम्राज्यान्तर्गत' शब्द को निकाल देने का यह अर्थ कदापि नहीं कि हम लोग ब्रिटिश छत्रच्छाया के नीचे रहना ही नहीं चाहते। हमारी इच्छा जैसी पहले ब्रिटिश शासन में रहने की थी, वैसी अब भी है। स्वराज्य प्राप्त कर लेने के पश्चात् अंग्रेजों का व्यवहार देख कर हम यह निश्चय करेंगे कि ब्रिटिश साम्राज्यान्तर्गत रहना चाहिये या नहीं।

भारतीय नौकर शाही की शासन प्रणाली उसी समय तक सुचारु रूपसे चल सकती है, जब तक भारतवासी उसमें सम्मिलित रहें। जिस दिन भारत-वासी नौकरी करना छोड़ देंगे। उसी दिन नौकरशाही का काम चलना असम्भव हो जावेगा। ऐसा कोई मुहकमा नहीं, जिसमें भारत-

वासी न हों; इसलिये जितने अत्याचार भारतीय नौकरशाही भारत वर्ष के साथ करती है। उसके पाप के भागी अंग्रेजों के समान ही हिन्दुस्थानी भी हैं। इस पाप से बचने का यदि कोई उपाय है तो यही कि नौकरशाही को, शासन कार्य्य में किसी प्रकार की सहायता न दी जाय। जिस समय नौकरशाही का काम रुक जावेगा; उसी समय उसके होश ठिकाने आ जावेंगे और वह भारतवासियों के इच्छानुसार काम करने को तैयार हो जावेगी। भारतीय नौकरशाही को सुमार्ग पर लाने के अभिप्राय से ही महात्मा गान्धी की इच्छा नुसार कांग्रेस ने असहयोग का प्रस्ताव पास किया। इस प्रस्ताव के पास करने में अंग्रेजों प्रति द्वेष या घृणा का भाव जरा भी न था।

कांग्रेस द्वारा यह शान्तिपूर्ण असहयोग का प्रस्ताव पास करा कर ही महात्मा गांधी सन्तुष्ट न हो गये। देश के कोने कोने में जाकर उन्हों ने लोगों को जगाया और उनसे कांग्रेस के आदेशानुसार काम करने का अनुरोध किया। आदर्श

स्वार्थत्यागी, भारत के उज्ज्वल रत्न, करोड़ों भारतवासियों के हृदय-सम्राट् महात्मा गान्धी की एक एक बात का लोगों पर बड़ा ज़बरदस्त प्रभाव पड़ा। सामयिक कर्त्तव्य-ज्ञान प्राप्त कर अचेत भारतवासी जाग उठे। भारत वर्ष का बच्चा बच्चा स्वराज्य प्राप्त करने के लिये उतावला हो उठा। देश में आशाजनक परिवर्तन हो गया।

कांग्रेस के शान्तिपूर्ण असहयोग प्रस्ताव को कार्यरूप में परिणत करने का दृढ़ संकल्प कर हजारों विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल तथा कालेजों का बहिष्कार कर दिया। वे इन गुलामखानों में रहना अपना तथा अपने राष्ट्रका अपमान समझने लगे। जिन स्कूलों में गुलाम होने के अतिरिक्त और अन्य प्रकारको शिक्षा न दी जाती हो, उसमें स्वाभिमानी देश-भक्त विद्यार्थी भला कैसे शिक्षा ग्रहण कर सकते थे? सैकड़ों वकीलों ने गरीबों का रक्त चूस कर मोटे बनने वाले व्यवसाय को तिलांजलि दे दी। पदवी-धारियों ने गुलामी की स्मारक उपाधियों का त्याग किया। आनरेरी मजिस्ट्रेटों ने आनरेरी मजिस्ट्रेटी के पद, तमगे और सम्मान सब वापिस कर दिये।

कुछ सरकारी नौकरों ने तो अपनी नौकरी तक छोड़ दी। यह सब कुछ हुआ, परन्तु अशान्ति का कहीं नाम तक सुनाई न दिया। अशान्ति होती कैसे? लोग भली-भांति समझ गये थे कि जिस प्रकार शरीर बिना आत्मा के जीवित नहीं रह सकता, उसी प्रकार यह असहयोग आन्दोलन भी बिना शान्ति के जीवित नहीं रह सकता। अशान्ति हुई, कि काम बिगड़ा। इतना जानते हुए भी क्या कोई अशान्ति कर सकता था?

भारतीय नौकरशाही, जिसको सुमार्ग पर लाने के उद्देश्य से यह आन्दोलन प्रारम्भ किया गया था, असहयोगियों की आशातीत सफलता देखकर घबरा उठी। वह स्वेच्छाचारिणी रहना चाहे और लोग उसके विरुद्ध आन्दोलन करें। गज़ब रे गज़ब! उसने असहयोग आन्दोलन को कुचल डालने का दृढ़ संकल्प कर लिया। अपने निश्चय के अनुसार उसने सैकड़ों ऐसे देश-भक्तों को गिरफ्तार करना प्रारम्भ किया, जो लोगों को कर्त्तव्य-मार्ग सुझाते थे। गिरफ्तार होने पर इन देश-भक्तोंने सफाई देने की अपेक्षा जेल जाना ही श्रेयस्कर समझा। जिस

नौकर शाही ने भारत के साथ कभी भी न्यायानुकूल वर्त्ताव नहीं किया, उसकी अदालतों में सफाई देने से भी क्या कभी न्याय हो सकता था ? बहुत से देश-भक्तों से अदालतों ने प्रश्न किया कि तुम लोग अपनी सफाई क्यों नहीं देते ? उन लोगों ने उत्तर दिया कि "हम इस अन्यायी सरकार से न्याय की जरा भी आशा नहीं रखते। हमने जो कुछ किया है वह पवित्र उद्देश और आत्मा के निर्देश से किया है। हम अपने को धर्म और ईश्वर के प्रति अपराधी नहीं समझते। देश को स्वतन्त्रता प्राप्त करने का मार्ग बतलाना यदि अपराध समझा जाता है तो हम अवश्य अपराधी हैं इस अपराध के लिये हम कड़ा से कड़ा दण्ड भोगने के लिये तैयार हैं। कांग्रेस की आज्ञा भङ्ग करने के पूर्व हम अपना अस्तित्व ही नष्ट हो जाना श्रेयस्कर समझते हैं। हमारी कांग्रेस की आज्ञा है कि सरकारी अदालतों में किसी प्रकार की सफाई मत दो और जेल जाने के लिये खुशी से तैयार रहो। जेल के कठिन कष्टों द्वारा ही हम को शीघ्र स्वराज्य मिलेगा। हम अपनी कांग्रेस की आज्ञा शिरो-

धार्य कर सफाइ देना नहीं चाहते। हम लोग शान्ति पूर्वक जल जाने के लिये तैयार हैं। आप फैसला कीजिये।" धन्य हैं ऐसे देश भक्त जिनके ऐसे महान और पवित्र उद्गार हैं। धन्य हैं वे मातायें जिनकी कोखों से ऐसे देशभक्त पुत्र पैदा हुए हैं।

इधर भारतीय नौकरशाही दमननीति द्वारा इस आन्दोलन को कुचल डालने का प्रयत्न करती रही और उधर महात्मा गांधी इसको सफल बनाने के लिये जीजानसे परिश्रम करते रहे। थोड़ेसे समय में ही आशातीत सफलता प्राप्त करने पर महात्मा जी को विश्वास हो गया कि भारतवर्ष स्वराज्य प्राप्त करनेके लिये बड़े से बड़े स्वार्थ को तिलाञ्जलि देने के लिये तैयार है। भारतवर्षका सुख-साम्राज्य यहां के व्यवसाय के नष्ट किये जाने के कारण ही लुप्त हुआ था। इसलिये जब तक भारतीय वस्त्र-व्यवसाय की उन्नति के लिये उत्तेजना न दीजायगी,तबतक खोखले स्वराज्य के प्राप्त करने से कोई वास्तविक लाभ नहीं। इस बात को भली भांति समझ कर महात्मा गांधी ने भारतीय वस्त्र-व्यवसाय के पुनरुत्थान करने का सब से सरल और सर्वोत्तम उपाय ढूंढ निकाला।

सन् १६२१ के मार्च के महीने में, अखिल भारतवर्षीय कांग्रेसकमेटी का अधिवेशन बेजवाड़ा में हुआ। महात्मा गांधी द्वारा प्रस्तावित, इस आशय का प्रस्ताव इस कमेटी द्वारा पास हुआ, कि ३० जून सन् १६२१ तक भारतवर्ष से एक करोड़ कांग्रेस के उद्देश को मानने वाले मेम्बर हो जाना चाहिये और देश भर में २० लाख चर्खे काम में आ जाना चाहिये। सब से बड़ी महत्व की बात जो इस प्रस्ताव में है वह बीस लाख चरखों की है। इन्हीं चरखों द्वारा महात्मा गांधी ने भारतीय व्यवसाय के पुनरुत्थान का उपाय ढूंढ निकाला। वास्तव में इससे बढ़ कर भारत की भलाई और किसी चीज से नहीं हो सकती। जिस चरखे के अभाव से भारत की स्वतन्त्रता नष्ट हुई थी, उसी चरखे की सहायता से भारतवर्ष फिर स्वतन्त्रता प्राप्त करेगा और अवश्य करेगा। आगे चलकर यह बतलाया जायेगा कि भारतवर्ष में अपनी आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिये कितने चरखों के चलने की आवश्यकता है।

बेजवाड़ा कांग्रेस-कमेटी के नियमानुसार ३० जून के पूर्व ही भारतवर्ष से एक करोड़ से भी अधिक

रुपये वसूल हो गये, एक करोड़ कांग्रेस के मेम्बर हो गये और देश भर में बीस लाख से अधिक चरखे चलने लगे। अभी तक कभी भी किसी संस्था या मनुष्य ने राष्ट्रोत्थान के लिये इतने अधिक रुपये एकत्रित करके नहीं दिखलाया था। अथक परिश्रम करनेवाला महात्मा गांधी के अतिरिक्त और कोई भी मनुष्य इतना रुपया एकत्रित नहीं कर सकता था। एक करोड़ तो क्या यदि महात्मा गांधी चाहते तो यह गरीब देश स्वतन्त्र होने के लिये कई करोड़ रुपये दे सकता था।

इस शान्तिपूर्ण असहयोग युद्ध में महात्मा गांधी को जितनी अधिक सफलता मिलती जाती थी। भारतीय नौकरशाही के उतने ही अधिक होश धावड़े होते जाते थे। भारतवर्ष की स्वतन्त्रता का यह शान्तिपूर्ण अलौकिक युद्ध यहां के इतिहास में स्वर्णाक्षरों में लिखा जायगा। एक ओर भारतीय नौकरशाही है और दूसरी ओर भारतीय जनता। नौकरशाही के योद्धा शसस्त्र, राजमदमत्त और बड़े बलिष्ट हैं और बेचारी भारतीय जनता निशस्त्र निर्बल और परतन्त्रता के भारी बोझ

से दबी हुई निस्सहाय है। नौकरशाही के पास गोला, बारूद, बम, वायुयान, अहंकार और दमन-नीति के बड़े बड़े प्रबल अस्त्रशस्त्र हैं और इधर भारतीय जनता के पास कष्ट सहिष्णुता, देशप्रेम, असीम साहस, विशाल शुद्ध हृदय, अलौकिक स्वार्थ-त्याग और शान्ति रूपी अनेक अस्त्रशस्त्र हैं। हां भारतीय जनता के पास एक अमोघ महास्त्र और भी है जिसका नाम है सुदर्शन चक्र अथवा चरखा।

नौकरशाही के दमननीति के शस्त्रास्त्र अनेक स्थानों से छूटकर भारतीयों के हृदयों में प्रवेशकर अनेक बड़े बड़े वीरों को घायल कर रहे हैं। पर इस शक्ति की क्षति से भारतवासी अपने दृढ़ संकल्प से जरा भी विचलित नहीं हुए हैं। वे द्विगुणित साहस और अदम्य उत्साह से रणांगण में डटे हुए हैं। उनका प्रधान सेनापति महात्मा गांधीने उनको आज्ञा दी है कि कष्ट सहो और देशपर बलि होना सीखो। तुम्हारे ऊपर कैसा भी असहनीय वार क्यों न हो परन्तु तुम उफ् तक मत करो। तुमको अपने विपक्षियों की जान लेना तो दूर रहा उनके विरुद्ध जबान से कटुशब्द तक न निकालना चाहिये।

तुम्हारा युद्ध शान्तरूप से और नियमानुसार होना चाहिये। उसमें एक बूँद भी खून न गिरना चाहिये। ज़रा भी अशान्त हुए और तुम्हारा पलड़ा उलटा। तुम्हारा युद्ध शान्तप्रिय असहोग युद्ध है। इस युद्ध की विजय खूंखार शस्त्रास्त्र, घृणा द्वेष, क्रोध, अहंकार और बदला लेने की प्रवृत्ति से न होगी। इसकी विजय पवित्र प्रेम और कष्टसहिष्णुता से ही होगी। हमारी प्रबल आत्मिक शक्ति के सामने नौकरशाही की पाशविक शक्ति को अवश्य ही सर झुकाना होगा। संसार में कहीं भी पशुबल की जीत नहीं हुई है।

दोनों ओर के सेनापति विपक्षियों को हराने के लिये अपने अपने वार कर रहे हैं। महात्मा गांधी बड़े नीतिकुशल और साहसी सेनापति हैं। उनको अच्छी तरह मालूम हो गया है कि विपक्षियों के दुर्ग का मर्मस्थल उनका एतद्देशीय व्यापारही है। उस मर्मस्थल पर एक संगठित और शान्ति पूर्ण अस्त्र प्रहार करने से ही हमारी जीत होगी। जो अस्त्र प्रहार किया जावेगा उसमें इतनी प्रबल शक्ति है, जितनी श्रीविष्णु भगवान के सुदर्शन चक्र में थी। वह अमोघ शस्त्र चरखे के सिवाय और कुछ नहीं। इस चरखे का

से दबी हुई निस्सहाय है। नौकरशाही के पास गोला, बारूद, बम, वायुयान, अहंकार और दमन-नीति के बड़े बड़े प्रबल अस्त्रशस्त्र हैं और इधर भारतीय जनता के पास कष्ट सहिष्णुता, देशप्रेम, असीम साहस, विशाल शुद्ध हृदय, अलौकिक स्वार्थ-त्याग और शान्ति रूपी अनेक अस्त्रशस्त्र हैं। हां भारतीय जनता के पास एक अमोघ ब्रह्मास्त्र और भी है, जिसका नाम है सुदर्शन चक्र अथवा चरखा।

नौकरशाही के दमननीति के शस्त्रास्त्र अनेक स्थानों से छूटकर भारतीयों के हृदयों में प्रवेशकर अनेक बड़े बड़े वीरों को घायल कर रहे हैं। पर इस शक्ति की क्षति से भारतवासी अपने दृढ़ संकल्प से जरा भी विचलित नहीं हुए हैं। वे द्विगुणित साहस और अदम्य उत्साह से रणांगण में डटे हुए हैं। उनका प्रधान सेनापति महात्मा गांधीने उनको आज्ञा दी है कि कष्ट सहो और देशपर बलि होना सीखो। तुम्हारे ऊपर कैसा भी असहनीय वार क्यों न हो परन्तु तुम उफ् तक मत करो। तुमको अपने विपक्षियों की जान लेना तो दूर रहा उनके विरुद्ध जबान से अपशब्द तक न निकालना चाहिये।

तुम्हारा युद्ध शान्तरूप से और नियमानुसार होना चाहिये। उसमें एक बूँद भी खून न गिरना चाहिये। जरा भी अशान्त हुए और तुम्हारा पलड़ा उलटा। तुम्हारा युद्ध शान्तिप्रिय असहोग युद्ध है। इस युद्ध की विजय खूंखार शस्त्रास्त्र, घृणा द्वेष, क्रोध, अहंकार और बदला लेने की प्रवृत्ति से न होगी। इसकी विजय पवित्र प्रेम और कष्टसहिष्णुता से ही होगी। हमारी प्रबल आत्मिक शक्ति के सामने नौकरशाही की पाशविक शक्ति को अवश्य ही सर झुकाना होगा। संसार में कहीं भी पशुबल की जीत नहीं हुई है।

दोनों ओर के सेनापति विपक्षियों को हराने के लिये अपने अपने वार कर रहे हैं। महात्मा गांधी बड़े नीतिकुशल और साहसी सेनापति है। उनको अच्छी तरह मालूम हो गया है कि विपक्षियों के दुर्ग का मर्मस्थल उनका परदेशीय व्यापारही है। उस मर्मस्थल पर एक संगठित और शान्ति पूर्ण शस्त्र प्रहार करने से ही हमारी जीत होगी। जो अस्त्र प्रहार किया जावेगा उसमें इतनी प्रबल शक्ति है, जितनी श्रीविष्णु भगवान के सुदर्शन चक्र में थी। वह अमोघ शस्त्र चरखे के सिवाय और कुछ नहीं। इस चरखे का

निशाना सात हजार मील पर बसे हुए लंकाशायर और मेनचेस्टर के विशाल कपड़े के कारखानों पर पड़ेगा। इस चरखे के एक ही आघात से समस्त विदेशी कपड़े के कारखाने एकदम नष्ट हो जावेंगे। इतना होने पर भी खून का एक कतरा भी न बहेगा। लड़ाई का यह अनोखा अस्त्र है। अभीतक संसार की सब लड़ाइयां खूनखराबी करके जीती गई हैं परन्तु यह लड़ाई संसार के इतिहास में निराली है। इस लड़ाई का परिणाम बतला देगा कि अपने शत्रुओं को प्रेम और कष्टसहिष्णुता से किस प्रकार जीतना चाहिये। पाठक जरा आँख उठा कर देखो इस चरखे के प्रहार से मेनचेस्टर और लङ्काशायर के मालिक कितने घबरा उठे हैं। इनको व्याकुल होकर विलायत में कोलाहल और अशान्ति फैलाने दो। हमारी जीत इसी में होगी। पर इतना ख्याल रखो कि हम लोगों को जरा भी अशान्त न होना चाहिये।

इस शान्तिपूर्ण असहयोग युद्ध में पूर्ण रूप से जय प्राप्त करने के लिये हमको विदेशी कपड़े का पूर्ण रूप से बहिष्कार कर देना चाहिये। इन विदेशी कपड़ों का उपयोग करने से ही हमारा भयंकर नैतिक और

मानसिक पतन, राष्ट्रीयता तथा राष्ट्रीय सम्पत्ति का ह्रास और जलियानवाला बाग सदृश अत्याचार करने के लिये नौकरशाही का आर्थिक बल-वर्द्धन हुआ है। वे विदेशी कपड़े हमारी गुलामीके चिह्न हैं। जिस प्रकार मनुष्य को मोक्ष प्राप्त करने के लिये इस असार संसार की सर्वव्यापिनी माया से पीछा छुड़ाना पड़ता है, उसी प्रकार हमको स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये विदेशी कपड़ों का पूरा बहिष्कार कर देना चाहिये और उससे शीघ्र ही पिण्ड छुड़ाना चाहिये।

विदेशी कपड़े के बहिष्कार के सम्बन्ध में, ३० जुलाई सन् १९२१ के अखिल भारतवर्षीय कांग्रेस कमेटी द्वारा स्वीकृत प्रस्ताव आप गौर से पढ़िये। उसका एक एक अक्षर बहुमूल्य है। जिस प्रकार आप लोगों ने कांग्रेस की आज्ञाओं का अभी तक पालन किया है, उसी प्रकार इस विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार और स्वदेशीके प्रचार वाली आज्ञा का भी पालन कीजिये। इस आज्ञा के पालन पर ही आप के भविष्य की समस्त आशायें निर्भर हैं। प्रस्ताव यह है :—

"स्वराज्य प्राप्त करने और अपनी शिकायतें दूर करने के लिये, कांग्रेस की समस्त संस्थाओं को, आगामी ३० सितम्बर तक, विदेशी कपड़ों का पूर्ण बहिष्कार करनेमें और हाथों से सूत कातने तथा बुननेके व्यवसाय को उत्तेजन देकर खादी तैयार करानेमें अपनी सारी शक्तियां लगा देनी चाहिये। इन उद्देशों की पूर्ति के लिये यह कमेटी उन सब लोगों को, जो कांग्रस के अनुयायी हैं, सलाह देती है कि वे पहली अगस्त से विदेशी कपड़ों को व्यवहार में लाना छोड़ दें। इसके अतिरिक्त कांग्रेस से सम्बन्ध रखनेवाली सब संस्थायें, (१) जहां तक हो सके, सब राष्ट्रीय संस्थाओं से सूत कतवाने और हाथ से कपड़े बुनवाने का काम करावें। (२) जिन घरों में अभी तक चरखे नहीं पहुंच पाये हों, उनमें चरखों का प्रवेश करावें। (३) प्रत्येक जिलेके जुलाहों की मर्दुमशुमारी करें और उनको सुबिधायें देकर उन्हें इस कामके लिये तैयार करें, कि वे विदेशी सूत का बहिष्कार कर दें। जहां तक हो सके हाथ का कता हुआ सूत काममें लावें और न हो सके तो मिलों का कता हुआ सूत काम में लावें। परन्तु

विदेशी सूत कदापि काममें न लावें। (४) जिन जुलाहों ने अपना पेशा छोड़ दिया है, उनको विशेष प्रोत्साहन देकर अपना पेशा अपनाने के लिये तैयार करें। (५) रुई धुननेवालों की मर्दुमशुमारी करके, उन्हें कातने के लिये, रुई धुनने को तैयार करें। (६) खादी और कातने बुनने के लिये आवश्यक चर्खे और करघे आदि सामग्री की पूर्तिके लिये डिपो खोलें, जहां से ये सब चीजें मिल सकें और (७) देने-वालों की इच्छानुसार जलाने या स्मर्ना भेजने के लिये विदेशी कपड़े इकट्ठा करें।"

"यह कमेटी बम्बई और अहमदाबाद प्रभृति शहरों के सूतकातने और बुनने के बड़े बड़े कार-खानों के छोटे छोटे एजण्टों और हिस्सेदारों से अनु-रोध करती है, कि वे तैयार माल की कीमत अपने मजदूरों के वेतन तथा अन्य खर्चों के लगभग बराबर ही रखें, जिससे उनके तैयार किये हुए कपड़े को गरीब से गरीब लोग भी खरीद सकें और इस प्रकार स्वराज्य प्राप्ति के लिये किये जानेवाले राष्ट्रीय उद्योग की सहायता करें। कमेटीको विश्वास है

यित स्वदेशी वृक्ष की रक्षा के लिये सचेष्ट प्रयत्न कर रही है। ईश्वर करे इसके प्रयत्नों से यह वृक्ष और भी हराभरा हो और अच्छे अच्छे फलोंसे शीघ्रही लद जाय। जिस समय इसके मनोहर सुस्वादु फल भारतवासियों की नजरों के सामने आवेंगे उसी समय मानों उनका स्वराज्य उनको दिखाई देगा। आर्थिक स्वतंत्रता ही सुलभ "स्वराज्य सोपान" है। परन्तु ये हृदय को उल्लसित करने वाले और नेत्रों को खुशी से नचाने वाले फल सहज ही में न फलेंगे। इसके लिये भारतवासियों को कठिन स्वार्थत्याग की कड़ी आंच में तपना होगा, दृढ़ प्रतिज्ञा घन घोर विपत्तियोंका सामना करना होगा, विषम यातनाओं के बड़े से बड़े विकट वार झेलना होगा और साथ ही साथ कर्मपथ से विचलित करनेवाले मोह और माया के जाल को छिन्नभिन्न कर देना होगा।

विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार क्यों करना चाहिये? महात्मा गांधी ने इसके लिये दस कारण बतलाये हैं। पाठकों को उन्हें अच्छी तरह से मनन कर, शीघ्र ही कार्यक्षेत्र में अवतरित हो जाना चाहिये।

सोच विचार में अधिक समय नष्ट कर देने से हमारी बड़ी हानि होगी। कारण ये हैं :—

(१) ब्रिटिश राज्य स्थापित होने के पूर्व हम अपने लिये सब कपड़ा तैयार करते थे और बहुत सा विदेशों को भी भेजते थे।

(२) चरखे के लुप्त होने से (जिसके लिये ज़बरदस्ती की गई) प्रतिशत ८० मनुष्यों की आमदनी और जीविका मारी गई।

(३) विदेशी वस्त्रों के बहिष्कार से और हाथ के बुने हुए कपड़ों के पहिनने से हमारी महिलाओं की मानमर्यादा की रक्षा होगी। सूत कातने के सुन्दर व्यवसाय के अभाव से उन्हें घर के बाहर जाकर दूसरा काम करना पड़ता है तथा अपने को भय और विपत्ति में फँसाना पड़ता है। चरखों के चलने पर उन्हें बाहर न जाना पड़ेगा।

(४) निर्जीव यन्त्रों के बुने हुए कपड़ों की अपेक्षा हाथ से बुनी हुई खादी में अधिक कला-कौशल रहता है। हाथ से बुने हुए कपड़ों में एक प्रकार का गुप्त काव्य भी रहता है।

(५) सूत कातने के व्यवसाय का पुनरुत्थान ही

हमको मनसा-वाचा-कर्मणा महात्मा गांधी तथा कांग्रेस की आज्ञा का पालन करना चाहिये।

विदेशी कपड़ों के बहिष्कार का यह तात्पर्य नहीं, कि हम दुनियां को बतलाने के लिये बाहर तो खादी और स्वदेशी कपड़ों का उपयोग करें और अपने घर के अन्दर ट्रंकों में बन्द कर विदेशी कपड़े छिपाकर रखें। जिस चीज का बहिष्कार किया जाय वह पूर्णरूप से किया जाय। चञ्चल चित्त से किसी भी कार्य के करने का ठीक परिणाम नहीं होता। जब हम को एक बार विश्वास हो गया कि विदेशी कपड़ों के पहिनने से हमारा और हमारे राष्ट्र का अपमान होता है, तब हम को राष्ट्रीय अपमान कारक वस्तु को एकदम जला देना चाहिये। उसका एक चिरकुट तक अपने पवित्र घरों में न रखना चाहिये। हमारे नैतिक, मानसिक, शारीरिक और राष्ट्रीय विकास का द्वार उन वस्त्रों के जलते ही खुल जायगा। अग्निदेव इस आहुति को पाकर हम पर अवश्य ही कृपा करेंगे और हमारे हृदयों को देश प्रेम के रंग से ऐसा रंग देंगे कि फिर भविष्य में

हम कभी भी सन्मार्ग से हटानेवाली माया के फन्दे में न फंस सकेंगे।

बहुत से आदमी विदेशी कपड़े का जलाना उचित नहीं समझते। उनका कथन है कि विदेशी कपड़ों को जलाने की अपेक्षा उन गरीबों को दे देना उचित है, जिनके पास न तो पहनने के ही लिये और न बिछाने के लिये कपड़े हैं। ऐसे मनुष्यों को कपड़ा देने से उनका दुःख भी हलका होगा और हमारा रुपया जो कपड़ों के खरीदने में व्यय हो चुका है, जलनेसे बच जायगा। परन्तु ये सब विदेशी कपड़ा न जलाने के सम्बन्ध की दलीलें लचर और निरर्थक जान पड़ती हैं। क्योंकि जिन वस्त्रों को काले नाग के जहर से भींजा हुआ समझकर हम त्याग देते हैं, उन्हें गरीबों को देने से कोई लाभ नहीं हो सकता। हम को अपनी जान जितनी प्यारी है, गरीबोंको भी उनकी जान उतनी ही प्यारी है। जिस नाग के जहर से बचनेको हम स्वयं कोशिश करते हैं, उसे गरीबोंके शरीर पर क्यों फेंकना चाहिये? क्या इस जहर से गरीबों को हानि के अतिरिक्त कभी लाभ हो सकता है? क्या हमारा यह कर्त्तव्य है कि गरीबों को तकलीफों

बचाने के लिये हम उनके प्राण के ग्राहक बन जांय..? हमारा तो यह निश्चित सिद्धान्त है कि विदेशी वस्त्र का घर में चिह्नतक रखना पाप समझा जाय और उसे निःसंकोच और शीघ्र ही जला डाला जाय। महात्मा गांधी की इस विषय में क्या राय है पाठक, ज़रा उसको भी पढ़ लीजिये,—

"विदेशी कपड़े जलाने के विरुद्ध मुझे जितने कारण बताये जाते हैं उन सबको सुनकर मेरा निर्णय यही रहता है कि विदेशी कपड़ों का जला डालना ही श्रेयस्कर है। उनका नष्ट करना उचित है या नहीं, इसका उत्तर विदेशी वस्त्र त्यागने की आवश्यकता में, अपने अपने विश्वास की शक्ति पर निर्भर है। जिसने शराब पीना छोड़ दिया है, वह अपनी शराब भरी बोतल अपने पड़ोसी को नहीं देगा। वह उसे फेंक देगा। मैं विदेशी कपड़ों का पहिनना शराब पीने के समानही बुरा समझता हूं। सम्भव है, वह औरभी अधिक बुरा हो। ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने हम पर अत्याचार करके हमारा व्यापार नष्ट कर डाला और हमने उसके अन्याय से दबकर जो पाप किया उसको याद करके हमारा सिर नीचा हो जाता है। यदि

हमारा कपड़े का उद्योग नष्ट न हुआ होता तो हमारी स्त्रियों को आज सड़कों पर मजदूरी करने की नौबत न आती और करोड़ों मनुष्य बेकार न रहते। जो विदेशी वस्त्र ऐसी शोकजनक याद दिलाता है और जो हमारी लज्जा तथा पतन का कारण है, वह नष्ट करने के ही योग्य है। वह गरीबों को भी दिया नहीं जा सकता। जो हमारे लिये गुलामी का चिन्ह है, वह उन्हें नहीं दिया जाना चाहिये क्योंकि उनके हृदय में राष्ट्रीयता, देशभक्ति और आत्मसम्मान है। हमें उनके भावों का आदर करना चाहिये। हमारे गन्दे, फटे और पुराने कपड़े या रेशमी और महीन वस्त्र उनके किसी काम के नहीं। परन्तु मेरा तर्क तो और भी गहरा है। केवल उसीसे हमारे हृदय की उच्चता का विकास हो सकता है। एक क्षण के लिये अपने विश्वास को छिपा लेने से यदि मुझे करोड़ों का धन मिलता है तो उसे छिपा लेने में क्या हानि है? पर संसार का साम्राज्य मिले तो भी मैं नहीं छिपाता। इसी लिये मैं गरीबों की भावनाओं का ख्याल करके विदेशी कपड़े उन्हें देने के विरुद्ध हूं।"

उपरोक्त बातों के जानने पर, पाठकों को अब पूर्ण रूपसे विश्वास हो गया होगा, कि विदेशी कपड़ों का केवल बहिष्कार ही नहीं वरन जला डालना परमावश्यक है। इन वस्त्रों को जला देने के पश्चात् हम लोगों को हाथ पर हाथ धर कर बठ न जाना चाहिये। प्रत्येक घर में चरखे चलना चाहिये और इन चरखों के कते हुए सूत से कपड़े बनवा कर पहिनना चाहिये। हाथ के बने हुए दोनों सूत की खादी पहिनना चाहिये। विदेशी कपड़ा मुफ्त में भी क्यों न मिले परन्तु उसका उपयोग कभी भी न करना चाहिये। पवित्र खादी पहिनना ही स्वतन्त्रता के उपासकों का चिह्न है। यहां पाठकों को एक बात से सचेत हो जाना चाहिये। भारतीय बाजारों में खादी की बढ़ती हुई मांग को देख कर जापान तथा मैनचेस्टर के व्यापारियों ने यहां विदेशी खादी भेजना प्रारम्भ कर दिया है। इस खादी को भूल कर भी न खरीदना चाहिये। देश की खादी चाहे कितनी ही मोटी और खरखरी क्यों न हो वही हमारे लिये कमख्वाब और बाफता तुल्य प्यारी और अपनाने योग्य वस्तु है।

भारतीय बजाजों को भी चाहिये कि वे इस समय सिवाय स्वदेशी कपड़ों के विदेशी कपड़ों का बेचना एक दम बन्द कर दें। जहांतक हो सके खादी ही बेचें। विदेशी वस्त्रों के व्यापार को बन्द कर देने से उनको कुछ आर्थिक हानि होने की संभावना अवश्य है, परन्तु देश के एक जबरदस्त फायदे के सामने उन्हें अपनी इस जरा सी हानि का जरा भी खयाल न करना चाहिये। प्रत्येक भारतवासी को देश की स्वतन्त्रता प्राप्त करने के लिये कुछ न कुछ स्वार्थ-त्याग अवश्य करना पड़ेगा। यदि हमारे बजाज भाई विदेशी कपड़ों का बेचना बन्द कर दें, तो हमें को उनके द्वारा राष्ट्रीय उन्नति में बहुत सहायता मिल सकती है।

हमारा विदेशी कपड़े का बहिष्कार उसी समय पूर्णरूपसे सफलीभूत हो सकता है, जब कि हम अपनी आवश्यकता के अनुसार यहीं पूरा कपड़ा बना सकें। ३२ करोड़ भारतवासियों की आवश्यकता पूर्ण करने के लिये, बहुत से लोगों का कथन है, कि बहुत सी बड़ी बड़ी मिलें खोलना पड़ेंगी। चरखों के द्वारा इतना अधिक कपड़ा तैयार नहीं किया जा

सकता। इस बात से हम सहमत नहीं। हम अँग्रेजों की हर एक बात में नकल नहीं करना चाहते। मजदूरी की समस्या इस समय इतनी जटिल हो गई है कि बड़े बड़े दिग्गज दिमाग वाले भी उसको सुलझाने में असमर्थ हो रहे हैं। कुछ थोड़े से पूंजीपतियों को लाभ होने की अपेक्षा, प्रत्येक मनुष्य में लाभ का बट जाना ठीक समझते हैं। मिलों की अपेक्षा चरखों के द्वारा ही सुगमता से हमारी आवश्यकताएं पूर्ण हो सकती हैं। अब हमको यह देखना चाहिये कि कितने चरखों के चलने से हम अपने देश की कपड़े की मांग पूरी कर सकते हैं। इस जटिल प्रश्न को श्रीयुत वी० जे० पटेल और जे० के० मेहता महोदयों ने जिस प्रकार हल किया है, वह हम अपने पाठकों को बतलाते हैं। नीचे लिखे हुए अङ्कों म विलायती कपड़े के जो अङ्क दिये हुए हैं, वे विलायत से यहां आकर यहांसे बाहर गये हुए कपड़े की तादार को घटा कर दिये हैं।

यूरोपीय महायुद्ध के पूर्व, अर्थात् सन् १९१४ में, इस देश में कपड़े का जितना स्टाक आया, वह इस प्रकार है :—

(अंक करोड़ गज के हैं)

	बिनधुला	धुला	रंगीन	कटपीस	फुटकर
विदेशसे	१५२.९३	७८.४६	७८.३१	३.७८	३१३.४८
शमें बना	८२.८७	......	२४.६८	......	१०७.५५

योग—२३५.८०, ७८.४६, १०२.९९, ३.७८, ४२१.५५

उक्त वर्षमें प्रति मनुष्य १३.६ गज (अर्थात् १३॥ गजसे कुछ अधिक, कपड़ा हमारे देशमें पड़ता था ।

जब सन् १९१४ के अगस्त मासमें लड़ाई शुरू हो गई, तब व्यापार-वाणिज्यमें शिथिलता आ गई और विलायत के कारखानों को महायुद्ध के विशेष कार्यों की वजह से कपड़ा बनाने की फुरसत न मिली और न विलायती माल भेजने के लिये जहाज ही उस समय मिल सकते थे। यद्यपि जापान लड़ाईके जमानेमें—अर्थात् १९१५ से १९१९ तक—

हिन्दुस्थानमें अधिकाधिक कपड़ा भेजता रहा, तथापि उक्त पांच सालोंका औसत, सन् १९१४ के बराबर न आई। यह बात नीचे लिखे अंकोंसे सिद्ध होती है :—

(अंक करोड़ गज के हैं)

	बिनधुला	धुला	रंगीन	कटपीस	फुटकर
विदेशसे आया	८८.२८	५०.०४१	३४.८५	३.०६	१७६.६२

देशमें बना..............................१२९.००

योग..............................३०५.६२

इस अवसरमें प्रति मनुष्य ९,२८ (अर्थात् ९॥। गज से कुछ अधिक) गज कपड़ा हमारे देशमें पड़ता था।

लड़ाई के बन्द होनेपर भी स्टाककी वृद्धि न हुई। ३१ मार्च १९२१ तक खतम होने वाले वर्ष में इस प्रकार स्टाक था :—

(अंक करोड़ गज के हैं)

	बिनधुला	धुला	रंगीन	कटपीस	फुटकर
विदेश आया	५४.८८	४२.४४	४७.२१	१.८०	४५.५६
देशमें बना	११२.६६		४५.१०		५८.०६

योग—१६७.५४, ४२.४४, ९२.३१, १.८०, १०३.६२

इस वर्ष प्रति मनुष्य ६॥ गज कपड़ा पड़ा। ऊपर दिये हुए अंकोंका विचार करनेसे यह बात साफ जाहिर होती है कि लड़ाई के समय पांच वर्ष तक प्रति मनुष्य लगभग ६॥ कपड़ा मिलने पर भी देशवासी कपड़े के मोहताज न रहे। लड़ाई के पूर्व प्रति मनुष्य १३॥ गज के लगभग कपड़ा पड़ता था, किन्तु लड़ाईके समयमें हम लोग अपनी आव-श्कता—चाहे मजबूर होकर ही क्यों न हो—घटा सके थे। इस समय भी यदि हम लोग विदेशोंसे एक गज भी कपड़ा न मंगवावें और अपने ही देशकी मिलों तथा चरखों से बने हुए सूत और कपड़ेका उपयोग

बासठ गज कपड़ा करघों से तैयार हुआ और शेष सूत दूसरे कामों में लगा।

यदि हम लोग बाहर से विलायती सूत और कपड़ा न मंगवायें और यहां की मिलों का माल बाहर न जाने दें तो नीचे लिखे अनुसार कपड़ा तैयार किया जा सकता है :—

करघों पर	७२६०११७६२	गज
मिलों में यहीं के सूत से	१४३२४८४६५२	,,
विदेश में जानेवाले सूत से	३३०१४०८६०	,,
बाहर जाने वाला माल रोककर	१४६३६४७६३	,,
कुल	२६३६०१०३८८	,,

जैसा कि ऊपर कह आये हैं। हमारे यहां गत वर्ष लगभग ३०८.०८ करोड़ गज कपड़ा खर्च हुआ। इसमें ऊपर के हिसाब के अनुसार हम २६३.६० करोड़ गज कपड़ा आज बना सकते हैं। शेष ४४.१८ करोड़ गज कपड़े की हमें जरूरत पड़ सकती है। यह काम चरखों से अच्छी तरह हो सकता है। मान लीजिये चरखे के एक रतल सूत से ३ गज कपड़ा बन सकता है, तब ४४.१८ करोड़ गज के

लिये हमें ज्यादा से ज्यादा १४.७२ करोड़ रतल सूत की आवश्यकता है।

८ घण्टे काम कर के प्रतिदिन एक आदमी पौन रतल सूत कात सकता है। इस हिसाब से प्रति-मास साढ़े बाइस रतल और वर्ष भर में २७० रतल सूत एक चरखे पर तैयार हो सकता है। इस हिसाब से १४.७२ करोड़ रतल की आवश्यकता पूरी करने के लिये हमें ५७४४११ चरखे और चलाना पड़ेंगे। इस हिसाब में चरखों के बिगड़ने और काम करने वालों की बीमारी आदि का हिसाब लगा लेने पर १० लाख चरखों से हमारा काम खूब अच्छी तरह चल सकता है। यदि महात्मा गांधी जी के आज्ञानुसार बीस लाख चरखे चलाये जांय तो देश म किसी तरह भी कपड़े की कमी न रह सकेगी।"

इसी विषय में जबलपुर के बाबू गोविन्ददास जी ने एक विस्तृत लेख लिखा है, जो प्रत्येक भारतवासी के मनन करने योग्य है। हम उस लेख को अपने पाठकों के ज्ञानार्थ यहां ज्यों का त्यों उधृत कर देते हैं:—

नंकशा नम्बर १ रुई का गांठों में (एक गांठ=४०० रतल).

सन्	रकबा जिसमें कपास बोया एकड़ में	कूती हुई फसल	विदेश गई	मिलों में खपी	फूटकर उठी	अन्दाजी हुई फसल — कम + अधिक
१९१३-१४	२५०२००००	५०६५०००	३६४००००	१८१६०००	४५००००	— ८४८०००
१९१८-१९	२१०३८०००	३२७८०००	१२५३०००	२००३०००	७५००००	— २८०००
१९१९-२०	२३०६३०००	५८४५०००	२३६८०००	२००६०००	७५००६०	+ ६९१०००

*नोट—सन् १९१९–२० के ५६७ खानों के हिसाब पक्के प्राप्त नहीं हैं। अनुमान करके अंक भरे गये हैं।

(२) विदेशों से यहां कितनी रुई आती है, इसका ठीक हिसाब प्राप्त नहीं है। परन्तु दरियाफ्त करने पर मालूम हुआ है कि प्रतिवर्ष डेढ़ लाख से दो लाख गांठों के लगभग यहां पर विदेशों से आती है।

सूत

इस हिसाब से जान पड़ता है कि जो रुई भारतवर्ष में खपती है। वह अधिकांश मिलों में सूत बनाने में व्यय होती है। हाथ से कितना सूत काता जाता है, इसका हिसाब प्राप्त नहीं है। परन्तु गत २० वर्षों से जिस प्रकार चरखे का प्रचार घटा है उससे मालूम होता है कि इस समय यदि हाथ से सूत कता भी है तो वह नहीं के बराबर है।

सन् १९१३-१४ और १९१८-१९ तथा १९१९-२० में भारतवर्ष के मिलों और उनके स्पिण्डलों तथा लूमों की संख्या नीचे दी जाती है:—

नक्सा नम्बर २ मिलों का।

सन्	मिल	स्पिण्डल	लूम
१९१३-१४	२७२	६५९६८६२	९४१३६
१९१८-१९	२६२	६६५३८७१	११६४८४
१९१९-२०	२५८	६६८९६८०	११८२२१

सन् १९१३-१४ और १९१८-१९ तथा १९१९-२० में जितना सूत यहां के मिलों में तैयार हुआ, विदेशों से यहां आया, यहां से विदेश गया, यहां की मिलों

इस के अतिरिक्त हाथ से, करघों द्वारा भी भारतवर्ष में कपड़ा बनता है। यद्यपि उसका ठीक हिसाब प्राप्त नहीं है। तथापि निम्नलिखित प्रकार से इसका अनुमान किया जा सकता है:—

नकशा नम्बर ३ में दिखाया गया है कि मिलों में खपने के उपरान्त भी यहां पर सूत बचता है। उपरोक्त तीनों सालों का औसत निकालने से प्रतिवर्ष यहां २३७२०००० रतल सूत की बचत रहती है। नक्शा नम्बर ३ में, मिलों में जितने सूत की खपत बतलाई गई है और नक्शा नम्बर ४ में मिलों से जितने कपड़ों की तैयारी बतलाई गई है। उससे जान पड़ता है कि एक रतल सूत में लगभग ४ गज कपड़ा बनता है। इस २३७१८०००० रतल सूतमें से, यदि हम यह मान लें कि ७१००००० रतल सूत अन्य कार्यों में खर्च होता होगा, तो भी २३०००००० रतल सूत बचा। जिसमें रतल पीछे ४ गज कपड़े के हिसाब से ६२०००००० गज कपड़ा करघों द्वारा तैयार होता होगा परन्तु मिलों में मोटे और पतले दोनों प्रकार के सूत की खपत होती है। करघों में इस समय विशेष

कर मोटा सूत ही काम में लाया जाता है। यदि हम यह स्वीकार कर लें कि मोटे सूत का कपड़ा कुछ कम बनता होगा, तो ६२०००००० के स्थान में ६०००००००० गज कपड़ा करघोंसे बनना मान लेना अनुचित न होगा। इस प्रकार उपर्युक्त तीनों वर्षों में भारतवर्ष में बने हुए कपड़े में ६००००००००० गज कपड़ा और जोड़ देने से यहां पर नीचे लिखे अनुसार कपड़ा शेष रहता है :—

नक्शा नम्बर ५ यहांपर शेष बचे हुए कपड़ेका हिसाब गज़ोंमें।

सन्	मिलोंका	करघोंका	योग
१९१३-१४	४२१०१०००००	६०००००००००	५११०१०००००
१९१८-१९	२३०६४०००००	६०००००००००	३२०६४०००००
१९१९-२०	२७३५२०००००	६०००००००००	३३३५२०००००

गया है। सन् १९१८-१९ और १९१९-२० में जो सूत हमने विदेश भेजा है, उसका औसत निकालने पर जान पड़ता है, कि १०८०००००० रतल सूत विदेश भेजा गया। इन्हीं दो वर्षों में औसत से २६५०००००० रतल सूत विदेश से हमारे यहां आया है। तब भी हमारे यहां का ८१५०००००० रतल सूत विदेश को अधिक गया। यदि हम विदेश से सूत मंगाना और भेजना बन्द कर दें तो हमारे यहां यह ८१५०००००० रतल सूत बचता है। एक रतल में ४ गज़ कपड़े के हिसाब से इस सूत से ३२६०००००००० गज़ कपड़ा बन सकता है। यदि प्रयत्न किया जाय तो हमारे यहां की मिलों में भी इतना कपड़ा अधिक बन सकेगा। इस प्रकार उपर्युक्त ८२०१००००० गज़ कपड़े की कमी से यह ३२६०००००० गज़ कपड़ा घटा देनेपर फिर हमें केवल ५०११००००० गज़ कपड़े की कमी रह जाती है। एक रतल में ४ गज़ कपड़े के उपर्युक्त हिसाब से ५०११००००० गज़ कपड़े के लिये हमें १२५२०००० रतल सूतकी आवश्यकता होगी।

रुई की कमी नहीं है।

इस सूत के लिये हमें रुई की कमी नहीं है। नक्शा नम्बर १ में बतलाया जा चुका है, कि भारतवर्षसे कितनी अधिक रुई विदेश जाती है। इस सूत के लिये आवश्यक रुई हमें विदेश जाने से रोक लेना चाहिये। अब प्रश्न यह रह जाता है, कि यह सूत और कपड़ा यहां किस प्रकार तैयार किया जा सकता है।

इसकी पूर्तिका सबसे अच्छा उपाय चरखों और करघोंका चलवाना है, क्योंकि यदि हम इसके लिये मिलोंकी स्थापना करना चाहें तो इसमें एक तो बड़ी भारी पूंजी की और दूसरे बहुत समय की आवश्यकता है। तीसरे विदेशी कपड़े के बहिष्कार के साथ ही इस आन्दोलन का, जो हमारा उद्देश घर घर व्यवसाय फैलाने का है, वह मिलों से सफल नहीं हो सकता। अब देखना यह है, कि इन रहटों और करघों की व्यवस्था किस प्रकार हो सकती है।

जुलाहोंसे पूछने पर मालूम होता है, कि वे एक करघे से एक सप्ताह में कुल २० गज़ कपड़ा सुविधापूर्वक तैयार कर सकते हैं। इस हिसाब से प्रतिवर्ष एक करघे से लगभग १००० गज़ कपड़ा तैयार होता है। अतः उपरोक्त ५०११००००० गज़ कपड़े के लिये लगभग ५००००० करघों की आवश्यकता होगी।

भारतवर्ष में पहले जुलाहों का रोजगार कितना बढ़ा हुआ था, यह सभी जानते हैं। यहां पर मिलों की वृद्धि हो जाने के कारण तथा विदेशी माल के अधिक आने के कारण यह व्यवसाय दिन पर दिन घटता गया। परन्तु अब भी जुलाहों की संख्या यहां कम नहीं है। जो अपना रोजगार छोड़ कर दूसरा काम करने लगे हैं! जब कि अभी भी यहां पर लगभग ६०००००००० गज कपड़ा करघों से तैयार होता है तो उत्तेजना देने पर हमें ५०११००००० गज कपड़ा और तैयार करने के लिये ५०००० करघों का चलना और चलानेवाले जुलाहों का मिलना कठिन नहीं है।

इसके अतिरिक्त दो उपाय और भी हैं। जिनसे

कि करघों की पूर्ति सरलता से हो सकती है। एक यह है, कि इस कार्य के लिये हमारे व्यवसायी भाई अग्रसर हों। उन्हें चाहिये कि विलायती कपड़े का रोजगार छोड़ कर इसी कार्य को व्यवसाय की दृष्टि से करें। जो व्यापारी इस कार्य को करें, उन्हें करघों के व्यवसाय की कम्पनियां स्थापित करनी चाहिये। जो कि करघों द्वारा कपड़ा बनवा कर थोड़े मुनाफे पर बेचें। जो व्यापारी विदेशी कपड़े के रोजगार में इस समय लाखों रुपयों की पूंजी लगा रहे हैं, क्या वे देश की इस मांग पर ध्यान देकर इस कार्य के लिये आगे नहीं बढ़ेंगे, जिसमें उनके स्वार्थ और परमार्थ दोनों सधते हैं? दूसरा उपाय यह है कि रहटों के समान ही करघों का भी घर घर में प्रचार हो और अवकाश के समय लोग अपने अपने घरों में कपड़ा भी बुने। अस्तु।

उपर्युक्त विवरण से यह सिद्ध हो जाता है कि यदि हम चाहें, तो सरलता पूर्वक विदेशी कपड़े का बहिष्कार कर सकते हैं। बहिष्कार ही नहीं हमारे यहां की जनसंख्या इतनी है और साथ ही रुई भी इतनी अधिक होती है कि उपरोक्त प्रणाली से

हम उत्तरोत्तर इस व्यवसाय की वृद्धि करते जायं तो अपनी आवश्यकता से भी कहीं अधिक कपड़ा तैयार कर सकते हैं और इस दरिद्र देश को इसी व्यापार द्वारा धनी बना सकते हैं। आवश्यकता केवल इस बात की है कि इस समय हम थोड़ा सा त्याग स्वीकार करें। हमारे व्यवसायी भाइयों को इसके लिये अपने अपने व्यक्तिगत लाभों को बलि कर बड़े बड़े आफिसों की दलाली और मुसद्दीगिरी छोड़ बड़े-बड़े विदेशी कपड़ों की दूकानें, स्वदेशी कपड़ों से पवित्र करना होगा। मिल के मालिकों को अधिक लालच छोड़ देश के दरिद्र निवासियों के लिये हृदय में कुछ दया का भाव ला सप्लाई डिमाण्ड के कठोर सिद्धन्त को त्यागना चाहिये। अमीर पुरुषों को मलमल और नैनसुख के झूठे सुखको तिलाञ्जलि देख कर पवित्र खादी में सुख मानना होगा और अमीर स्त्रियों को चीन और जापान का मुलायम रेशम त्याग अपने हाथ के कते हुए सूत की खादी में कोमलता का अनुभव करना होगा। साथ ही साधारण जनता को भी अपवित्र विदेशी वस्त्रों का त्याग कर स्वदेशी के व्यवहार का व्रत लेना होगा।

इस आन्दोलन में हमारे मध्यप्रान्त और वरार वालों को तो सवसे आगे आना चाहिये क्योंकि भारतवर्ष में सबसे अधिक कपास की खेती यहीं होती है। सारे देशमें जो २२५०००००० एकड़ के लगभग भूमिमें कपास बोया जाता है, उसमें ४१५०००० एकड़ के लगभग जमीन केवल इन्ही प्रान्त में बोई जाती है। सूत और कपड़े तैयारी करनेका इस प्रान्त को बड़ा भारी गौरव है। सूत की तैयारी में इस प्रान्त का चौथा नम्बर है और कपड़े की तैयारो में तो बम्बई को छोड़ कर और कोई प्रान्त इसका मुकाबिला ही नहीं कर सकता। अर्थात् भारतवर्ष भर में इसका दूसरा नम्बर हैं। सन १९१३-१४ और १९१८-१९ तथा १९१९-२० में इस प्रान्त में जितना सूत तैयार हुआ और जितना कपड़ा बुना गया उसका हिसाब नीचे दिया जाता है:—

नकशा नम्बर ६ मध्यप्रान्त और बरार में
तैयार किये गये सूत और कपड़े का हिसाब

सन	सूत (रतल में)	(कपड़ा गजोंमें)
१९१९-२०	३६५३२८७०	५१३०६७२५
१९१८-१९	३४२७९९४६	५९२८०६८८
१९१३-१४	२४१८४४७२	६३७१६७९९

इसके अतिरिक्त यह प्रान्त बड़ी बड़ी विदेशी कपड़े की आढ़तों आफिसों से भरा हुआ भी नहीं है और न बड़े बड़े विदेशी कपड़े के दूकानदार और दलाल ही यहां हैं। ऐसी दशा में यदि यह प्रान्त इस कार्य में पीछे रहे तो इससे अधिक खेद की बात और क्या हो सकती है। मुझे पूर्ण आशा है कि इस प्रान्त के निवासी इस आन्दोलन को सफल करने में कोई बात उठा न रखेंगे।

बम्बई की आल इण्डिया कांग्रेस कमेटी ने इस कार्य की पूर्त्ति के लिये ता० ३० सितम्बर नियुक्त की थी। जिस थोड़े समय में देश ने स्वराज्य-फण्ड की पूर्त्ति की थी उसे देखते यह समय यथेष्ट था। मुझे पूर्ण आशा थी कि मध्य प्रान्त और बरार यह कार्य निश्चित समय के भीतर ही समाप्त करेगा। परन्तु कई कारणोंवश इस आशा की पूर्त्ति न हो सकी।

पाठकों को उपर्युक्त हिसाब के पढ़ने से अच्छी तरह विदित हो गया होगा कि हम लोग विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार कर चरखे की सहायता से सुविधापूर्वक ३० करोड़ भारतवासियों के लिये

आवश्यक कपड़ा तैयार कर सकते हैं। यदि महात्मा गान्धी का अनुमान ठीक है और इस समय भारतवर्ष में नित्य ४० लाख चरखे चल रहें हैं, तो हम उस दिन के आगमन की शीघ्र ही आशा कर सकते हैं, जिस दिन भारतवर्ष में एक पाई का भी कपड़ा न आकर यहीं का बना हुआ कपड़ा सब के शरीरों पर सुशोभित होगा। जिस रोज भारतवर्ष इस परावलम्बिता की शृङ्खला से मुक्त हो जायगा उसी रोज हमको असहयोग-आन्दोलन-वृक्ष के सुस्वादु, मधुर और मनोहर फल का स्वाद चखने को मिलेगा।

इस अमृत-तुल्य स्वादिष्ट फल का स्वाद लेने पर ही हम स्वतन्त्रता देवी के विशाल पवित्र मन्दिर में प्रवेश करने के अधिकारी बनेंगे। भारतवर्ष अति शीघ्र स्वतन्त्र होने के लिये इस कारण उतावला हो रहा है कि उसे कतिपय महान् और महत्वशाली कार्य करना है। यदि वह शीघ्र ही स्वतन्त्र नहीं होता तो समस्त मानव-सृष्टि एक अदृश्य भयंकर चट्टान से टकर खाकर ध्वंस हुई जाती है। इस समय विशेष कर पश्चिमी संसार तो प्रकृत के अलौकिक और सच्चे उन्नति के मूल

सुलभ ग्रन्थ-प्रचारक मण्डलकी

चुनी हुई पुस्तकें।

प्रेमकान्त

जगत्प्रसिद्ध अंग्रेज महाकवि "गोल्ड स्मिथ" के विश्वविख्यात उपन्यास विकार आफ वेक फील्ड (Vicar of Wake Field) का प्रख्यात हिन्दी-लेखक पं० ऋषीश्वरनाथजी भट्ट बी० ए० एल० एल० बी० कृत सरस सरल एवं ओजस्विनी भाषामें अनुवाद। कष्ट पड़ने पर मनुष्य अपनी भद्रता भूलकर किस तरह अन्यायपूर्ण नीच उपायोंका अवलम्बन ग्रहण करता है, अपनी अवस्थासे अधिक सम्पन्न दिखाई देनेके लिये थोथे आडम्बरोंका सहारा लेनेसे स्त्रियां किस प्रकार हास्यास्पद होती हैं, मेलों-ठेलोंमें ठग-बदमाश किस प्रकार भोले लोगोंकी आंखों में दिन दहाड़े धूल झोंकते हैं, परोपकारी पुरुष दूसरोंको दुष्टोंके चंगुलसे छुड़ानेके लिए किस प्रकार प्रसन्नता पूर्वक अपनी जान जोखिममें डाल देते हैं, स्त्रियोंकी अत्यधिक वाचालता कैसी अनिष्टकारी होती है, नाना प्रकार संकटोंसे घिरे रहनेपर भी ईश्वरमें आस्था रखने वाले कैसी अलौकिक शान्तिका उपभोग कर सकते हैं आदि आदि बातोंका समावेश इसमें बड़ी

उपमतासे किया गया है और मनोभावोंका स्वाभाविक विकाश तथा उनके पारस्परिक घात प्रतिघात बड़ी खूबी से दिखाये गये हैं, अंगरेज विद्वानोंका तो यहां तक कहना है, कि जिसने गोल्डस्मिथका यह उपन्यास नहीं पढ़ा उसने अंग्रेजी साहित्यका मजा ही नहीं पाया। बढ़िया मोटे एन्टिक कागजपर छपी हुई सुनहले अक्षरोंसे नामांकित सुन्दर मजबूत जिल्द युक्त पुस्तकका मूल्य केवल १॥) महसूल अलग।

भाग्य-चक्र

भाग्यचक्र हिन्दी-साहित्य-जगत्के सामाजिक उपन्यासगगनका सूर्य है। इसमें पाप और पुण्य, [illegible] [illegible] और कहीं मिलना असम्भव है। पापके अवश्यम्भावी रोमाञ्चकारी परिणामके दिग्दर्शन द्वारा मनुष्योंको पापसे घृणा कराकर पुण्य-पथकी ओर अग्रसर करने के लिये इसके समान और पुस्तक नहीं। पृष्ठ संख्या पौने तीनसौ। मूल्य १।) रु० महसूल अलग।

सचित्र भीम-चरित्र

यह पांचों पाण्डवोंमें सबसे अधिक बलवान उन्हीं भीमसेनकी सचित्र जीवन-कथा है जो बड़ेसे बड़ा हाथी पूंछ पकड़कर खिलौनेकी तरह उठा लेते थे और जिनकी गदाकी मारसे बड़ेसे बड़े राक्षसोंके छक्के छूट जाते थे। भीमसेनके अलौकिक पराक्रमके सम्बन्धमें अधिक कुछ न कहकर यही कह देना यथेष्ट है कि भगवान श्रीकृष्ण इन्हें "भीमकर्म्मा वृकोदर" कहा करते थे। हास्यमिश्रित वीररसकी इस अद्वितीय पुस्तकको पढ़कर आपके हृदयमें वीररसका संचार हुए बिना रह नहीं सकता। दाम ।।।=) म० अलग

गृहिणी-कर्तव्य

छपाई, सफाई, कागज और बँधाई अत्यन्त मनोहर। पृष्ठ-संख्या पौने तीनसौ और दाम केवल १।।)

इस एक ही पुस्तकको पढ़कर स्त्रियां गृहस्थी सम्बन्धी प्रायः समस्त कर्त्तव्योंको जान जायेंगी। सतीत्वकी महिमा, गृहस्थीकी जिम्मेदारी, समयकी उपयोगिता, अकर्मण्यताके दोष, अतिथि-अभ्यागतोंकी सेवा और उसका महत्व, फजूल खर्चीके

अवगुण अर्थ, संचयका उपाय भोजनकी विधि, बच्चों का पालन, उनकी शिक्षा तथा उनका चरित्र गठन, ससुर, सास, जेठानी, देवरानी, ननद तथा पुत्रवधू आदि समस्त परिवार वर्गके प्रति कर्तव्य और पतिकी सेवा आदि अगणित विषयोंका वर्णन बड़ीही सुन्दर और सहज रीतिसे किया गया है। शीघ्र मँगाइये नहीं तो फिर दूसरे संस्करणकी बाट जोहनी होगी, क्योंकि इसकी अब बहुत थोड़ी प्रतियां रह गई हैं।

कपाल कुण्डला

बंगालके गौरव-स्तम्भ, सर्वश्रेष्ठ, और अद्वितीय उपन्यास लेखक स्वर्गीय बंकिमचन्द्र चटर्जीके लिखे हुए उपन्यासोंमें यह उपन्यास सर्वश्रेष्ठ है। बंकिम बाबूके उपन्यासोंकी प्रशंसा करना मानों सूर्यको दीपक दिखाना है। संसारके छलछद्म रहित व्यक्तिकी सरलता कैसी लोकोत्तर आनन्द प्रदायिनी होती है, तथा पाषाण हृदय निष्ठुर व्यक्तिका स्वार्थ-पूर्ण हृदय भी प्रेमका वशवर्ती होकर कैसा निःस्वार्थ होजाता है। यदि यह जानना हो और इस

कर्मक्षेत्र

सांसारिक झंझटोंके कारण जिन्हें संसार दुःखमय प्रतीत होता हो तथा सांसारिक विघ्नबाधाओंके कारण जिन्हें अपना जीवन भार हो उठा हो उनके हतोत्साह जीवनमें नवजीवन संचार करनेका अमूल्य साधन है। इसमें (१) शक्तिपरिचय (२) संकल्प (३) साधना और (४) सिद्धि इन चार विषयोंपर चार विवेचनापूर्ण निबन्ध हैं, जिनमें गौतमबुद्ध महाराणा प्रताप, चाणक्य प्रभृति प्राचीन तथा ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दीवान सर माधव राव, सर जमसेदजी जीजी भाई आदि अर्वाचीन प्रसिद्ध प्रसिद्ध महापुरुषोंकी जीवन-घटनाओं से चुने हुए दृष्टान्तों द्वारा यह समझानेका प्रयत्न किया गया है, कि छोटे-बड़े, धनी-दरिद्र, प्रायः प्रत्येक मनुष्यमें अमोघ इच्छा-शक्ति है और संकल्प दृढ़ करके अध्यवसाय पूर्वक साधना करनेसे प्रत्येक मनुष्य सिद्धि लाभकर सकता तथा असंभवको भी संभव कर दिखला सकता है। मुमूर्षु-प्रायः वृद्ध भारतवर्षके अभ्युत्थानमें यह पुस्तक 'चन्द्रोदय'का काम करेगी। अमृत बाजार पत्रिका, बंगाली, संजीवनी, वामाबोधिनी, हितवादी, विहारहेरल्ड आदि प्रसिद्ध प्रसिद्ध दैनिक, साप्ताहिक और मासिक पत्र पत्रिकाओंने इसकी प्रशंसा मुक्तकंठसे की है। स्वदेशकी तथा अपनी

लाजपत राय

द्वितीय संस्करण

संशोधित और परिवर्द्धित

मूल्य ॥)

स्वनामधन्य भारतरत्न श्रीमान् लाला लाजपत रायजीके आरम्भसे लेकर वर्त्तमान समय तकके समस्त देशहित साधक कार्योंका विस्तृत वर्णन तथा उनके महत्वपूर्ण और सारगर्भ लेखों तथा व्याख्यानोंका संग्रह लीजिए। देशहितके लिए लालाजीके आत्मत्यागको पढ़कर स्वदेशभक्तिका तत्त्व हृदयङ्गम कीजिये।

मिलनेका पता—

सुलभ ग्रन्थ-प्रचारक मण्डल,

१४, शंकर घोष लेन कलकत्ता।

भारतकी साम्पत्तिक अवस्था।

ले० प्रो० राधाकृष्ण झा, एम० ए०

यह पुस्तक भारतके आये दिनके अकाल, दरिद्रताका हाल, भारतकी सम्पत्तिको विलायतके कोठीवालोंके ढो ले जानेकी चाल, कर एक्सचेंज, सोना, चांदी, हुंडाकी बिक्री, उसकी नीति, उससे हमारे दिन प्रतिदिन गरीबीके गढ़े में गिरते जानेकार रोमांचकारी वर्णन वाणिज्य, मजदूरों, किसानोंकी, अवस्था तथा वाणिज्य व्यापार सम्बन्धी सरकारी नीति इत्यादि जाननेका सर्वोत्तम साधन है। प्रो० यदुनाथ सरकार सरीखे महानुभावका कहना है भारतकी किसी भी भाषामें ऐसा उत्कृष्ट और उपकारी ग्रन्थ अवतक नहीं छपा। मूल्य २॥)

मिलनेका पता—

सुलभ ग्रन्थ-प्रचारक मण्डल।

१३ डूर घोष लेन, कलकत्ता।